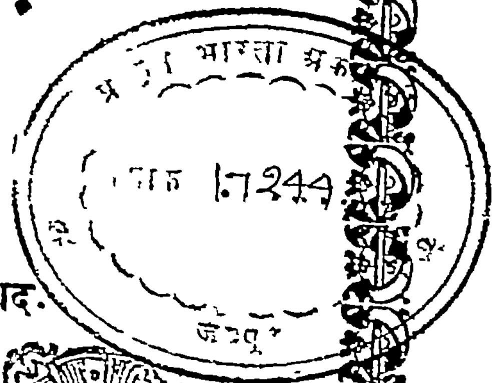
पयन्ना संग्रह भाग १ लो.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता
श्रावीकाशाला तरफथी
शा. बालाभाई ककलभाई.
ठा. मांडवीनी पोल. नागजीभूदरनी पोल. अमदावाद.





अमदावाद.
खमाभाने चकले निर्मल प्रिन्टिंग प्रेसमां छाप्युं.
संवत १९६२ वीर संवत २४३२.

किंमत ४ आना.

प्रस्तावना.

पीस्ताळीस भागमनी अंदर पयन्ना दस कहेला छे ते मधेना १ भक्त पयन्नो, २ चउसरण, ३ महा पच्च क्खाण ४ आउर पच्चक्खाण ए चार पयन्ना, तथा आराधना प्रकरण आ प्रथम भागमां बालावबोध सहीत साधु, साधवीओना तेमज यथाविधि आराधन करनार श्रावक श्रावीकाना उपयोग माटे छपावी बहार पाड्यो छे तेनी अंदर असल मेटर सुधारवामां तथा छपाइने बाहार पडेला फरमा जोवामां मुनिराज श्री श्री श्री कर्पुरविजय-जी महाराज तथा पन्यासजी श्री श्री श्री माणेकविजयजी गणीए जे श्रम लीधो छे तेने माटे तेमनो अमे आ स्थले मोटो उपकार मानीए छीए.

आ पुस्तकना सात फरमा छपाइ गया पछीमां गाम पालेजना रहेवासी शा. मुळचंद सरुपचंद अमने म-ळवा आवेला तेमने महाराजजी श्री बुद्धिसागरजी कृत आत्मभावना तथा परमानंद पचीशी योग्यतादर्शक पु-स्तकमां नांखवानी हती ते पुस्तक बहार पडता सुधीमां तैयार नहीं थइ गयेली होवाथी रही गइ, ते आ पु-स्तकमां भेगी नांखवानो विचार जणाववाथी ते पण छेवटना भागमां अलायदी दाखल करी छे

आ पुस्तक साधु साधवीने भेट तरीके अपाय एवा विचारथी नीचेना सद्गृहस्थो तरफथी नीचेनी रकम भेट आवेली छे ते उपकारपूर्वक स्वीकारीए छीए.

रु २५ वकील मणीलाल हठीसंग हा. चुनीलाल नगीनदास.
रु. २० नेमचंदभाइ नगीनदास
रु १० बेन सरस्वती दलपतभाइ.
रु. ५० शा मुळचंद सरुपचंद. गाम पालेज
रु २५ शा वाडीलाल ललुभाइ हा. वेणीचंद सुरचंद.
रु. ५ शा. घेलाभाइ मनसुखभाइ.

मुनिराजश्री बुद्धिसागरजीकृता आत्मभावना.

ॐ नमः सिद्धम्.

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा।
वीरिअं उवओगो अ एअं जीवस्स लक्खणं ॥१॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य, अने उपयोग छे, लक्षण ते जेनुं, तेने आत्मा कहेछे. अरुपी, अकषायी, अयोगी, अनंतज्ञानी, चेतनत्व शक्तिमान् आत्मा छे.

यथा नैर्मल्यं शक्तीनां यथा रत्नान्न भिन्नता।
ज्ञान दर्शन चारित्र लक्षणानां तथात्मनः ॥२॥

जेम निर्मळ कान्ति रत्नोनी, रत्न थकी भिन्न नथी; तेम आत्माने विषे रहेलां

एवां ज्ञान दर्शन चारित्र ते आत्माथकी भिन्न नथी. जे योगि पुरुषोए आत्माना सुखने अनुभव्युं छे, तेओ इंद्र नरेंद्रना सुखने तृण मात्र गणेछे. "अध्यात्मसार" नामना ग्रंथमां श्रीमन्महोपाध्याय श्री यशोविजयजीए कह्युं छे के–

कांताधर सुधा स्वादाद् यूनां यज्जायते सुखं ।
बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्म शास्त्रास्वादसुखोदधेः ॥३॥

युवान पुरुषोने स्त्रीओना ओष्ठना चुंबनथकी जे सुख उत्पन्न थायछे, ते सुख,–अध्यात्मशास्त्रने विषे तल्लीन थयेला एवा जे पुरुषो, तेना सुखरुपी समुद्रनी आगल बिंदु मात्र छे.

वली कहे छे के,—

अध्यात्मशास्त्र संभूत संतोष सुखशालिनः
गणयंति न राजानं न श्रीदं नापि वासवम् ॥४॥

अध्यात्मशास्त्रथकी उत्पन्न थयेलो जे संतोष तेना सुखने विषे मग्न थयेला पुरुषो, –राजाने, कुबेर नामनो जे देवता तेने, तथा इंद्रने पण गणता नथी. अर्थात्–वर्तमान, भूत, अने भविष्य ए त्रण कालना इंद्रो सहित त्रण भुवनना प्राणीओनुं सुख एकठुं करीए, ते सुख आत्मानुं जे सुख, तेनी बरोबरी करी शकतु नथी. अर्थात आत्मानुं सुख आत्यंतिक छे. आत्मानुं सुख वली नित्य छे. तेनो कोइ पण वखते नाश थवानो नथी. जेने पोताना आत्माना स्वरुपनी उलखाण नथी, तेओ परमात्माना स्वरुपने उलखी शकता नथी; माटे परमात्माना स्वरुपने जाणवाना जिज्ञासुओए प्रथम स्वस्वरुपने उलखवाने विशेषे करीने निश्चय करवो जोइए. जेणे आत्मानुं स्वरुप जाण्युं नथी, तेने पोताना आत्मामां स्थीति नथी तेथी ते शरीर अने शरीरमां व्यापि रहेलो एवो जे आत्मा, तेमनेजुदो समजी शकतो नथी. ज्यां सुधी देह अने आत्मा जुदो छे एवुं समजी शकतो नथी, त्यांसुधी आत्माना स्वरुपनी प्राप्ति थती नथी. ए माटे मुमुक्षोए पहेलांज विवेकथी एमी रीते आत्मानो निश्चय करवो जोइए.

हवे आत्मानुं स्वरुप त्रण प्रकारे वर्णवेछे;—सर्व ने विषे व्यापि रहेलो एवो आत्मा, जुदा जुदा त्रण विकल्पो वडे (१ बाहिर, २ अंतर, अने ३ परम एम त्रण भेदे) कहेवामां आवशे. यथा अध्यात्मगिता—बाहिर अंतर परम ए आतम परिणति तीन.

हवे बाहिर आत्मानुं स्वरुप कहेछे—देहादिक आत्मभ्रम, बहिरात्म बहु दिन, देह, वाणी, मनने विषे जे जे आत्मभ्रांतिथी आत्मबुद्धि थाय ते, मोहनिद्रामां पडीने दोरातो चेतन, बहिरात्म कहेवायछे. ते शरीर वाणी मननेज आत्मा माननारा प्राणीयो कदी पण संसारनो पार पामी शकता नथी. अने ज्यां सुधी बहिरात्म बुद्धि छे, त्यांसुधी तप जप क्रिया अनुष्टान यथायोग्य फलने आपी शकतां नथी.

हवे अंतर् आत्मानुं स्वरुप कहेछे. उपर कहेली शरीरादि बाहिरनी वस्तुओ छोडीने, जे पोतानाज आत्मामां आत्मनिष्ट थाय, तेने अंतरात्मा कहेछे.

हवे परमात्मानु स्वरुप कहेछेः—शरीर अने कर्मादिना लेप विनाना होवाथी निर्लेपी; शरीरादिकनो संग नहीं होवाथी असंगी; भावकर्म रहित होवाथी परमशुद्ध; सि-

द्विपदने पामेला होवाथी निष्पन्न; अव्याबाध सुखी होवाथी आनंदमय; विकल्प संकल्प रहित होवाथी निर्विकल्प; अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अने अनंत चारित्र, तथा अनंत वीर्यरुपी लक्ष्मी पामवाथी जे सिद्ध कहेवाया तेज परमात्मा कहेवायछे.

त्यारे हवे परमात्मानुं स्वरुप ओळखवाने माटे शुं शुं करवुं जोइए? ते कहे छे. आ शरीर, वाणी, अने मन ते, हुं नथी. स्त्री, धन, कुटुंब, पुत्र विगेरे मारां नथी; अने हुं तेमनो नथी. पांच इंद्रिओथी भोगवाता जे विषयो ते मारा नथी, कारण के बाहिरना विषयोमां हुं अने मारुं एवी बुद्धि करावनार राग अने द्वेष छे. अने जे जे अंशे आत्मामांथी राग द्वेष छूटा पडशे, ते ते अंशे आत्मा स्थीरता अनुभवतो जशे. अने ते एटले सुधी के, अगाउ कोइ पण दिवसे नहीं अनुभवेली एवी शांति, पोतामांज अनुभवशे. एवी शांति अने स्थीरता अनुभवतो, आत्मामांज अंतरात्मा जणायछे. अने ए अंतर आत्मा बाहिर विषयोथी दूर थइ, परमात्मानी सन्मुख थइ, तेनुं दर्शन करवाने योग्य थाय छे. माटे जेने परमात्माना दर्शननी के परमात्म पदनी जीज्ञाशा होय तेने आ

उपाय कामे लगाडवानी हुं प्रार्थना करुंछुं. श्रीमद् देवचंद्रजी पण कहे छे के–प्रीति अनंति परथकी, जे तोडे हो ते जोडे एह; परम पुरुषथी रागता, एकत्वता हो दाखी गुण गेह. अनादि काळथी शरीर, वाणी, अने मन, तेमना जे विषयो, ते परवस्तु छे. माटे तमे तेनी साथे प्रीत तोडो एटले परमात्मानी साथे प्रीति थवाने तमारी योग्यता आवशे. अने योग्यता थइ, पछी जो परमात्मानी साथे राग करशो तो गुणना घररुप तमे पोते परमात्मा थइ जशो.

आ अनादिकाळथी अविद्याना अभ्यासमां पडेलो मूढ, पोतानुं शरीर तेज आत्मा मानवा रुप पहेली भूल कर्या पछी, ते भूलोनी परंपरामां पडतो जाय छे. ते आवी रीते;-जो ते शरीर देवतानुं होय तो पोताने देवता माने, माणसनुं होय तो माणस माने, पशु पंखीनुं होय तो पशु पंखी एम जाणे; नारकीमां होय तो हुं नारकीछुं एम माने. आम शरीरना पर्याय रुप मनुष्यादि "ते, हुं" एम मानतो चाल्यो जाय छे. अर्थात् भवोभवमां भटकतो फरे छे.

जन्मना विषे आत्मबुद्धिवाळा मिथ्यादृष्टिजीए आत्माने छोडी, बीजा विकल्पो, इ-
ष्यात्ममयी शरीरादिने विषेज मुंझाइ रही, आ बिचारा आखा विश्वने अरेरे ! ठगी
लीधुं छे. पछी पोताथी भिन्न एवा पुत्र, स्त्री, आदिने पोतानांज मानेछे. आ शरीर आ-
त्माथी भिन्न छे तो पशु, पुत्र, स्त्री, धन, एतो आत्मा थकी अत्यंत भिन्न थयां. ते छ-
तां, अनादिकाळथी अविद्याना तावनी फुमम्मां ने फुममां हमेशां एमज बकी रह्यो छे
के ते मारां छे; पछी ते मूढ, शरीर पातलुं होय तो पोताने पातलो माने छे, स्थूल होय
तो पोताने स्थूल माने छे. शरीरमां आत्मा एवुं जे दृढ ज्ञान, ते देह धारीजने शरीर
साथेज रहेवा दे छे. अर्थात् भवो भवमां भटकावे छे. अने “ आत्मामां आत्मा ” एवो
बोध ते, देह धारीजने शरीरादिकथी छोडवी, मोक्ष प्राप्ति करावे छे. अहीं बहिरात्म
भाव छोडी अंतरात्मा थवानी भलामण करे छे. देहने विषेज आत्म भाव, तेज संसार
स्थीतिनुं बीज छे. माटे इंद्रियोने बाहिर न जवा देइ, अंतःप्रवेश करवो. अने पछी अं-
तःप्रवेश सहेज थतां अंतर आत्मा थवाय.

हवे अंतर आत्मावाळो जीव पोतानी पूर्वनी बाह्य वृत्तिने संभारी खेद करे छे, इंद्रिय द्वारवडे मारा आत्मतत्वमांथी खसी जइ, आ इंद्रियोथी जणाता विषयोमां अरे हुं फसाइ पड्यो हतो. अने तेज विषयोने अत्यार सुधी अवलंबीने रहेलो होवाथी इंद्रीओथी जणातो एवो ते हुं नहीं, एवुं मने सम्यक् प्रकारे खरेखर हमणां सुधी जणायुं नहि.

आम अंतरात्मा थया पछी परमात्माना पदनी कुंची देखाडेछे. आ उपर कहेला बाह्य विकल्पो छोडी देइ, मनमां पण आवता विकल्पोने छोडी देवा; एटले हुं सुखी, दुःखी, इत्यादि सघळा विकल्पोनो त्याग करवो. केवळ अंतर् आत्मा थइ, परमात्मानी भावना करवी, अने भावना करतां करतां अंतरात्माने पण छोडी देवो; आवो अभ्यास करतां करतां पण थोडाज वखतमां आत्मानुं स्वरुप पोतामां प्रतिभासेछे.

आ, जे जे कंइ देखाय छे ते ते आत्माथी जुदुं छे; अने जे जे कंइ देखाय छे ते ते इंद्रियगोचर छे, अने हुं तो इंद्रिने अगोचर छुं, ज्ञानवान् छुं, एटले देखातं एवो न-

थी; त्यारे माराथी जुदा एवा जड साथे केम बोलुं. परमां हवे वाहिर विकल्पो तजी अंतर विकल्पो तजवाने बतावेछे—

मने कोइ बोध करी शके, अथवा हुं कोइने बोध करुं के—हुं आवो छुं, ए तो मात्र भ्रान्ति छे. कारणके हुं निर्विकल्प होवाथी एवी कोइ कल्पनाथी ग्रहण थइ शकुं नहि. हवे निर्विकल्प होवा छतां आत्म स्वरुप देखाडवा प्रयत्न करेछे, जे पोते ज्ञान दर्शन चारित्रनेज ग्रहण करी रह्यो छे, अने पोताथी जुदा एवा जड पदार्थने ग्रहण करतो नथी, तेज ज्ञानी निर्विकल्प हुं छुं. नर, नारी, ने नान्यतर हुं नथी. तेम एक, बे के बहु हुं नथी. कारण के वेद अने संख्या एतो देहने छे. आत्मस्वरुप जाणनारने राग द्वेष क्षीण होवाथी कोइ शत्रु मित्र होता नथी.

आज सुधी मारुं जे जे पूर्वे आचरण हतुं, ते सघलुं, आजे तत्व जाण्या पछी, हवे मने स्वप्नवत् अगर इंद्रजाल सदृश भासेछे.

आत्माने परवस्तुना संबंधथी बंध छे; बंध कर्मनो पडेछे; अने ते कर्म आठ छे. ते

नीचे मुजब–१ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयु, ६ नाम, ७ गोत्र अने ८ अंतराय. ते आठ कर्मनी प्रकृतिओ १५८ छे. ते कर्मनो प्रकृतिबंध, स्थीतिबंध, अनुभागबंध, अने प्रदेश बंध ए चार प्रकारे परवस्तुना संबंधथी बंध पडेछे. अने परवस्तुना भेदना अभ्यासथी मोक्ष छे. बंधननुं कारण परवस्तुमां आत्मभ्रान्ति छे. अने मोक्षनुं कारण स्ववस्तुमां स्वपणुं; अने परवस्तुमां परपणुं जाणवुं; मानवुं, अने आचरवुं एज छे.

हवे आत्मानो आम अनुभव थया पछी तेनोज वारंवार भावना करवाथी थता फलने देखाडेछे. आ प्रमाणे ज्ञान दर्शनमय, आत्मानो अनुभव थया पछी “सोहं सोहं, तेज हुं तेज हुं,” एवो वगर अटके, अभ्यास करतां, ते शुद्ध चैतन्यमय आत्मानी एवी दृढ वासना थाय छे के,–जेथी आत्मा परमात्मानी स्थीतिने पामेछे. आत्म विभ्रमथी उत्पन्न थएलुं दुःख आत्मज्ञानथीज नाश पामेछे. पण जेने आत्मज्ञान नथी तेवा पुरुषो तपथी पण ते दुःखनो नाश करी शकता नथी.

अज्ञानी, आत्माने स्त्री, पुरुष, नपुंसक वेदवालो जाणेछे; अने ज्ञानी ज्ञान दर्शन-मय जाणेछे. शरीरे पहेरेलुं लूगडुं जाडुं, फाटेलुं होय, लाल होय, पीलुं होय, पातलुं होय, तेथी कंइ शरीर जाडु पातलुं कहेवाय नहीं. तेमज शरीर जाडु, पातलुं होवाथी, आत्मा कंइ जाडो, पातलो, फाटेलो लाल कहेवाय नहीं.

आ हालतुं चालतुं एवुं जे आ जगत, ते मेरु सरखुं स्थीर जेने लागेछे, तेमज मन, वचन, अने कायानी क्रिया विगेरेनुं जड जेवुं लागेछे, तेज आनंदमय मोक्ष पामे छे. आत्मस्वरुपनी ओलखाण करनाराए परसंग त्याग करवो. तेने माटे कहेछेः—होवत मन तन चपलता, जनके संग निमित्त जनसंगी होवे नहीं, ताते मुनि जग मित्त. मन शरीर अने वाणीनी चपलता ते माणसना संसर्गथी थायछे. माटे ज्ञानी पुरुषे चपल-तानुं बीज, एवो जे मनुष्यनो संसर्ग, तेनो त्याग करवो जोइए.

जेने आत्मानो निश्चय थायछे तेने पहेलां आ जगत उन्मत्त जेवुं लागेछे; परंतु आत्मदर्शननी दृढवासना थया पछी ते जगत पथ्थरनी पेठे भासे छे.

आ शरीरादिथी आत्मा जुदो छे एवुं मात्र बोलवाथी के सांभलवाथीज बंधन मूकाइ, मोक्ष पामतो नथी. परंतु ज्यारे भेदज्ञानना अभ्यासथी आत्मानो निश्चय थायछे, त्यारेज मोक्ष पामेछे,

एवी भ्रांति न थाय

आ शरीरथी जुदा एवा आत्मानी, आत्मा विषे एवी दृढ वासना करवी के—ते स्वप्नमां पण हुं शरीरी छुं, जेथी पोताने फरीथी अंगसंगति न [illegible] थवा पामे.

जाति अने लिंग ए बे देहने आश्रयी रह्यां छे. अने ए देह तेज संसार छे. माटे जाति अने लिंगनो, परमार्थ दृष्टिवाने आग्रह करवो नहि. जेम येल भ्रमर संगथी भ्रमरी थायछे, जेम वाट दिवाने पामी पोते पण दीवारुपे बनी जाय छे, तेम आत्मा पोताथी भिन्न एवा सिद्ध भगवाननी आराधना करतो पोते पण सिद्ध थइ जाय छे. आ प्रमाणे वाणीथी, नहि वर्णन करी शकाय एवा परमात्मानी भावना करतां करतां, पोतेज परमात्मरुप बनेछे, एटले मोक्ष लक्ष्मीने पामेछे, इतिश्री, शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः,

---

परमानंद पचीशी.

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री सुधर्मास्वामी प्रत्ये श्री जंबुस्वामी पुछेछे अथवा श्री सद्गुरु प्रत्ये शिष्य पुछेछे, हे जगवन् नित्य देशना प्रत्ये द्यो छो तेमां घणीवार सकल ड्व्य मांही, सकल वस्तु मांही, आत्माज प्रधान करी वर्णवो छो तो जे ज्ञेय शक्ति ते अनंत पर्याय सहित, ज्ञायक शक्ति अनंत पर्याय सहित, एवुं आत्मड्व्यनुं स्वरूप मुज प्रत्ये कहो त्यारे श्री सुधर्मास्वामी, श्री जंबु प्रत्ये अथवा श्री सदगुरु शिष्य प्रत्ये कहेछे. हे शिष्य, जे तीर्थंकरे कहेते थके अनंता तीर्थंकरनां आयु पहोंचे तोपण ए आत्म ड्व्यना स्वरूपनो अनंतमो जागे कही न शकाय. तोपण ते हुं तुज प्रत्ये दिग्दर्शमात्र कहुंछुं ते तुं सांजल.

परमानंद संपन्नं, निर्विकारं निरामयं ॥

ध्यानहीना न पश्यंति, निज देहे व्यवस्थितं ॥ १ ॥

परम उत्कृष्ट आनंद तेणे करी संपूर्ण छे, परम उत्कृष्ट आनंद ते शा माटे, जे माटे ए आत्मद्रव्यनुं अनुभववुं तेज अतींद्रिय सुख उपजे, बीजा इंद्रियादिकना आनंद थकी इंद्रिय जनित सुख उपजे. ते आनंदनी वांछाए इंद्रिय तपे. आत्म द्रव्यना आनंदनी वांछाए शीतलता उपजे. इंद्रिय जनित आनंदनी इछाए इंद्रियने सुखे प्रवर्तावतां प्रयास उपजे. आत्मस्वरूपना आनंदमय आत्मध्याने प्रवर्तावतां अत्यंत सुख स्थिरता रूप उपजे. इंद्रियजनित आनंदे कर्म निकाचित थाय, जेम श्रेणीकने नरकायु बंधाणुं, अने आत्मद्रव्यने अनुभवतां अनंत निकाचित कर्म तुटे. इंद्रियजनित आनंद अनुभवतां अनंत संसार वधे. आत्मानो अतींद्रिय आनंद अनुभवतां अनंत संसार तुटे. थोडा काळमांही मोक्षनां सुख पामे. ते माटे भाव आनंद परम उत्कृष्टो कहीए. बीजा इंद्रियजनित आनंद ते द्रव्य आनंद कशाय कामनो नहीं. ते माटे ए भाव आनंद तेज उत्कृष्टानंद कहिये. विकार रहित आत्मानुं स्वरूप छे. रोगरहित पोतानी देहने विषे रह्यो एवो

जे आत्मा तेने जे प्राणी धर्म ध्याने अने शुकल ध्याने रहित छे, ते प्राणी देश परोक्षे, सर्व परोक्षे, देश प्रत्यक्षे, सर्व प्रत्यक्षे ए चार मांही एके प्रकारे नथी देखता. ॥१॥

अनंत सुख संपन्नं, ज्ञानामृत पयोधरं ॥
अनंत वीर्य संपन्नं, दर्शनं परमात्मनः ॥२॥

आत्मस्वरूप केवुं छे, ते कहेछे. अनंतु अव्याबाध आत्मिक सुख तेणें सहित छे. ज्ञानरुपी अमृतना मेघ समान छे. वली अनंत अविनाशी वीर्य तेणे करी सहित एहवुं दर्शन एटले स्वरूप परम सर्वोत्कृष्ट आत्मानुं छे. ॥ २ ॥

निर्विकारं निराबाधं, सर्व संग विवर्जितं ॥
परमानंद संपन्नं, शुद्ध चेतन लक्षणं ॥३॥

आत्म स्वरुप केवुं छे, ते कहेछे. बाह्य अभ्यंतर विकार रहित अने बाधा एटले पीमाए करीने रहित छे, सर्व बाह्य अने अभ्यंतर संग तेणे करी रहित छे, परम उत्कृष्ट ज्ञानानंदे करी सहित, शुद्ध उपाधिरहित चेतनारुप लक्षण सहित छे. ॥३ ॥

उत्तमा ह्यात्मचिंता च, मोह चिंता च मध्यमा ॥
अधमा काम चिन्ता च, पराचिंताऽधमाधमा ॥४॥

स्व आत्मानी चिंता ते उत्तम कहिये, जे क्यांथी हुं आव्यो, क्यां जइश, अने मारुं स्वरुप शुं छे, इत्यादिक विचार ते उत्तम छे. मोह—पुत्र धनादिकनी चिंता ते मध्यम छे. काम—स्त्रियादिकना विषयनी चिंता ते अधम छे. परद्रव्यनी चिंता तथा परनी इर्ष्या परने विषे रागद्वेष ते अधम मांही अधम छे. ॥ ४ ॥

निर्विकल्पं समुत्पन्नं, ज्ञानमेव सुधारसं ॥
विवेक मंजलीकृत्वा, तं पिबंति तपस्विनः ॥५॥

विकल्प रहित अने सम्यग् प्रकारे उत्पन्न थएलुं एवुं ज्ञानरूप अमृत जळ तेने विवेकरूप अंजलि (खोबे) करीने मोटा तपस्वीउ पीए छे ॥ ५ ॥

सदानंदमयं जीवं, यो जानाति स पंडितः ॥
स सेवते निजात्मानं, परमानंद कारणं ॥६॥

सदा सर्व काले आनंदमय जीवनुं स्वरुप छे एवुं जे जाणे तेने पंडित कहीए. ते परम आनंदना कारण एवा पोताना आत्माने सेवे, ध्याए. ॥ ६ ॥

नलिन्यां च यथा तोयं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ॥
अयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति निर्मलः ॥७॥

कमलना छोडने विषे जेम पाणी सदा सर्व काले अलग रहेछे तेम आ आत्मा शरीरने विषे स्वभावे भिन्नरूप निर्मळ रहेछे. ॥ ७ ॥

द्रव्यकर्म विनिर्मुक्तं, भावकर्म विवर्जितं ॥
नोकर्म रहितं विद्धि, निश्चयेन चिदात्मनः ॥८॥

द्रव्यकर्म १५८ प्रकृतिरूप ते थकी विशेषे मुकाणो छे; शुद्ध स्वभावे जोतां भाव कर्म जे विभाव परिणति तथा राग द्वेष तेणे करी रहित छे, वळी उदारीक शरीर प्रमुख नोकर्म रहित एवो आत्मा तुं जाण. निश्चय नये करी आत्मानुं ज्ञानमय स्वरुप छे.

आनंदं ब्रह्मणो रूपं, निजदेहे व्यवस्थितं ॥

ज्ञानहीना न पश्यंति, जात्यंधा इव भास्करं ॥९॥

जेम जन्मथी आंधळा पुरुषो सूर्यने देखता नथी, तेम पोताना शरीरने विषे रहेला एवा आनंदमय अने ज्ञानमय आत्माना स्वरूपने ज्ञानरहित पुरुषो जोता नथी. ॥९॥

तद्ध्यानं क्रियते भक्त्या, मनो येन निलीयते ॥
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, चित् चमत्कार लक्षणं ॥१०॥

ते ध्यान (शुक्लध्यान) भक्तिवडे करवुं जोइए, जेणे करी मन लय पामे छे, अने तेज समये ज्ञानना चमत्काररुप लक्षणवालुं शुद्ध आत्मस्वरुप देखाय छे. ॥ १० ॥

ये धर्मशीला मुनयः प्रधाना, स्ते दुःखहीना नियमाद् भवंति ॥
संप्राप्य शीघ्रं परमार्थतत्त्वं, व्रजंति मोक्ष पदमेकमेव ॥११॥

जे उत्तम धर्मवंत मुनियो होय छे तेओ निश्चये करीने दुःखथी रहित थाय छे अने परमार्थ तत्त्वने जलदीथी पामीने सकल कर्म क्षयरुप एक मोक्ष स्थानकने ज पामे छे.

आनंदरूपं परमात्मतत्वं, समस्त संकल्प विकल्प मुक्तं ॥

स्वभावलीनं निवसंश्च नित्यं, जानाति योगी स्वयमेव तत्त्वं ॥१२॥

आनंदरुप एवुं अने समस्त संकल्प एटले आर्तरौद्र ध्यान रहित अने विकल्प एटले वचनवर्गणा तेणे रहित एवुं परमात्मतत्त्व छे तेनुं हमेशां चिंतन करतो अने स्वभावमां लीन एवो योगी पोते ज तत्त्व एटले वस्तु स्वरुपने जाणेछे. ॥ १२ ॥

चिदानंदमयं शुद्धं, निराकारं निरामयं ॥
अनंतसुख संपन्नं, सर्व संग विवर्जितं ॥१३॥

वळी ते ज्ञानमय अने आनंदमय एवुं अने दोषरहित छे, निराकार अने रोगरहित छे अनंत सुखे करी सहित छे अने सर्व बाह्यसंग एटले स्त्री पुत्रादिकवडे रहित अने अभ्यंतर संग कहेतां रागद्वेषादिके रहित छे. ॥ १३ ॥

लोकमात्र प्रमाणो हि, निश्चये नहि संशयः ॥
व्यवहारे देहमात्रः, कथितः परमेश्वरः ॥१४॥

निश्चय नयें करी आ आत्मा लोकना जेटला प्रदेशवाळो एटले असंख्यात प्रदेशी

छे एमां कांइ संदेह नथी अने व्यवहार नये करी आ आत्मा पोताना देहनी अवगाहना प्रमाणे परमेश्वररूप कहेवामां आवेलो छे. ॥ १४ ॥

यत्क्षणं दृश्यते शुद्ध, तत्क्षणे गत विभ्रमः ॥
स्वस्थ चित्तः स्थिरीभूतो, निर्विकल्प समाधये ॥१५॥

जे क्षणे शुद्ध आत्मानुं दर्शन थाय छे ते क्षणे अज्ञान रूप भ्रमनो नाश थाय छे अने एवो शुद्ध आत्मा निर्विकल्प समाधिने अर्थे स्वस्थ चित्तवाळो अने स्थिरी भूत थाय छे. ॥ १५ ॥

स एव परमं ब्रह्म, स एव जिनपुंगवः ॥
स एव परमं तत्त्वं, स एव परमो गुरुः ॥१६॥

तेज आत्मा उत्कृष्ट ज्ञानरूप छे तेज आत्मा राग द्वेषना जीतनारमां मुख्य छे तेज आत्मा उत्कृष्ट सार पदार्थ छे अने तेज आत्मा मोटो गुरु छे. ॥ १६ ॥

स एव परमं ज्योतिः, स एव परमंतपः ॥

स एव परमं ध्यानं, स एव परमोत्तमः ॥१७॥

तेज आत्मा उत्कृष्ट तेज स्वरुप छे, तेज आत्मा उत्कृष्ट तपरूप छे, तेज आत्मा उत्कृष्ट ध्यान रुप छे, अने तेज आत्मा परम उत्तम पदार्थ छे. ॥ १७ ॥

स एव सर्वकल्याणं, स एव सुखभाजनं ॥

स एव शुद्ध चिद्रूपः, स एव परमंशिवं ॥१८॥

तेज आत्मा सर्व कल्याणमय छे, तेज आत्मा सुखनुं भाजन छे, तेज आत्मा शुद्ध ज्ञान स्वरुपी छे, अने तेज आत्मा परम मोक्षरूप छे. ॥ १८ ॥

स एव परमानंदः, स एव सुखदायकः ॥

स एव परचैतन्यं, स एव गुणसागरः ॥१९॥

तेज आत्मा उत्कृष्ट आनंदवाळो छे केमके एवो आनंद बीजा कोइ पदार्थमां नथी, तेज आत्मा सुखनो आपनार छे, केमके तेना जेवो बीजो कोइ सुखदाता नथी;

तेज आत्मा उत्कृष्ट चेतनावंत छे अने तेज आत्मा ज्ञान दर्शन चारित्रादि गुणोनो समुद्र छे. ॥ १९ ॥

परमानंद संपन्नः, रागद्वेष विवर्जितः ॥
सोहं वै देहमध्ये नु, यो जानाति स पंडितः ॥ २० ॥

उत्कृष्ट आल्हाद तेणे करी सहित एवो अने राग द्वेष रहित एवो आत्मा ते हुं निश्चे आ देहमां रह्यो छुं एवुं जे जाणे छे तेने पंडित जाणवो. ॥ २० ॥

आकाररहीतं शुद्धं, स्वस्वरूपे व्यवस्थितं ॥
सिद्धमष्ट गुणोपेतं, निर्विकारं निरंजनं ॥२१॥

गोळ, चोरस, त्रीकोण, विगेरे आकाररहित, अने कर्म मल रहित, पोताना स्वरुपमां रहेलो एवो, सिद्ध थएलो, केवळज्ञान १, केवळदर्शन २, नित्यसुख ३, क्षायिक समकित ४, नित्यस्थिति ५, अरुपी ६, अगुरुलघु ७, अने अनंतुवीर्य ८, ए आठ गुणे करी संयुक्त छे, अने विकाररहित अने निरंजन छे. ॥ २१ ॥

तस्मिंतं निजात्मानं, यो जानाति स पंम्ति:॥
सहजानंद चैतन्यं, प्रकाशते महाशयं ॥२२॥

आगळ कही गया ते गुणोए सहित एवा पोताना आत्माने जे माणस जाणे छे तेने पंम्ति कहेवो, ते महाशयने सहज आनंदवालु चैतन्य प्रकाशेछे. ॥ २२ ॥

पाषाणेषु यथा हेम, दुग्धमध्ये यथा घृतं ॥
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा शिव: ॥२३॥

पथ्थरमां जेम सोनुं रहेलुं छे, दुधमां जेम घी रहेलुं छे, तलमां जेम तेल रहेलुं छे, तेम देहने विषे आत्मा रहेलो छे. ॥ २३ ॥

काष्ठमध्ये यथावन्हि:, शक्तिरूपेण तिष्टति ॥
अयमात्मां शरीरेषु, योजानाति स पंम्ति: ॥२४॥

जेम लाकडामां अग्नि शक्तिरूपे रहेछे तेम आ आत्मा शरीरमां शक्तिरूपे रहेछे, एम जे जाणेछे तेने पंम्ति जाणवो. ॥ २४ ॥

अव्रतानि परित्यज्य, व्रतेषु परितिष्ठत: ॥
त्यजेत् तान्यपि संप्राप्य, परमं पदमात्मन: ॥२५॥

अव्रतोने त्याग करीने व्रतोने विषे समस्त प्रकारे रहेतो एवो माणस, आत्मानुं परमपद पामीने व्रतोने पण त्याग करेछे. ॥ २५ ॥

॥ इति श्री परमानंद पचीशी संपूर्णा. ॥

भत्त पयन्नो.

नमिऊण महाइसयं ॥ महाणुभावं मुणिं महावीरं ॥
भणिमो भत्तपरिन्नं ॥ नियसरणठा परठाय ॥ १ ॥

महा अतिशयवंत अने महा प्रभाववाला एवा मुनि महावीर स्वामिने वांदीने पोताने तथा परने स्मरण करवाने अर्थे भक्त परिज्ञा पयन्नो हुं कहुंछुं ॥ १ ॥

भव गहण भमण रीणा ॥ लहंति निव्वुइ सुहं जमल्लीणा ॥
तं कप्पदुमकाणण ॥ सुहयं जिणसासणं जयइ ॥ २ ॥

संसाररूपी गहन वनमां भमतां पीडाएला जीवो जेने आशरे मोक्ष सुखने पामे छे ते कल्पवृक्षना उद्यान सरखुं सुखने आपनारुं जैन शासन जयवंतु वर्ते छे ॥ २ ॥

मणुयत्तं जिणवयणं च ॥ लद्धुं पाविऊण सप्पुरिसा ॥
सासयसुहिक्करसिएहिं ॥ नाणवसिएहिं होयव्वं ॥ ३ ॥

दुर्लभ एवुं मनुष्यपणुं अने जिनेश्वर भगवाननुं वचन पामीने सत्पुरुषोए शाश्वता सुखना एक रसीक

एवा अने ज्ञानने वश वर्त्ती थवुं जोइए ॥ ३ ॥

जं अज्ज सुहं भविणो ॥ संभरणीयं तयं भवे कल्लं ॥
मग्गंति निरुवसग्गं ॥ अपवग्गसुहं बुहा तेण ॥ ४ ॥

जे आज सुख थवानुं छे ते काल संभारवा योग्य थवानुं छे ते माटे पंडित पुरुषो उपसर्ग रहित एवुं मोक्षनुं सुख वांछे छे ॥ ४ ॥

नरविबुहे-सुरसुक्खं ॥ दुक्खं परमत्थओ तयं बिंति ॥
परिणाम दारुण मसा, सयं च जं ता अलं तेणं ॥ ५ ॥

पंडित पुरुषो माणसनुं अने देवताओनुं जे सुख छे तेने परमार्थ थकी दुःख ज कहे छे केमके ते परिणामे दारुण छे अने अशाश्वतुं छे तेथी ते सुखवडे सर्युं ॥ ५ ॥

जं सासय सुह साहण ॥ माणा आराहणं जिणिंदाणं ॥
ता तीए जइयव्वं ॥ जिणवयण विसुद्धबुद्धीहिं ॥ ६ ॥

जिन वचनमां जेनी निर्मल बुद्धि छे तेवा माणसोए जे शाश्वता सुखनुं साधन एवुं जिनेंद्रोनी आज्ञानुं आराधन छे ते आज्ञा पालवाने विषे उद्यम करवो ॥ ६ ॥

तं नाण दंसणाणं ॥ चारित्ततवाण जिणपणीयाणं ॥
जं आराहण मिणमो ॥ आणा आराहणं विंति ॥ ७ ॥

ते जिनेश्वरोए कहेला ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ने तप तेओनु जे आराधन तेज अहिं आज्ञानुं आराधन कहेलुं छे. ॥ ७ ॥

पवज्जाए अब्भुज्जउवि ॥ आराहउ अहासुत्तं ॥
अब्भुज्जय मरणेणं ॥ अविगलमाराहणं लहइ ॥ ८ ॥

दिक्षा लेवाने तत्पर थएलो पण सूत्रमां कह्या मुजब आराधक थाय ते मरणने विषे उद्यमवंत थको संपूर्ण आराधकपणुं पामे ॥ ८ ॥

तं अब्भुज्जयमरणं ॥ अमरणधम्मेहिं वन्नियं तिविहं ॥
भत्तपरिन्ना इंगिणि ॥ पाउवगमं च धीरेहिं ॥ ९ ॥

ते उद्यमवंतनु मरण, जेने मरण रूपी धर्म नथी एवा धैर्यवंत (वीतरागो) ए १ भक्त परिज्ञा मरण २ इंगिनी मरण अने ३ पादपोपगम मरण ए रीते त्रण प्रकारे कहेलुं छे ॥ ९ ॥

भत्तपरिन्नामरणं ॥ दुविहं सवियारमोय अवियारं ॥
सपरक्कम्मस्स मुणिणो ॥ संलिहियतणुस्स सवियारं ॥ १० ॥

भक्त परिज्ञा मरण बे प्रकारनुं छे. १ सविचार अने बीजुं अविचार छे; ते उद्यमवंत साधु संलेखनाए शरीर दुर्बल करे ते सविचार ॥ १० ॥

अपरक्कमस्सकाले ॥ अ पहुपत्तंमि जं तमवियारं ॥
तमहं भत्त परिन्नं ॥ जहा परिन्नं भणिस्सामि ॥ ११ ॥

पराक्रम रहित साधुने संलेखना कर्या विना जे मरण थाय ते अविचार भक्त परिज्ञा मरण कहीए ते अविचार भक्त परिज्ञा मरणने यथा प्रकारे हुं कहीश. ॥ ११ ॥

धिइ बल वियलाण मऽकाल ॥ मच्चुकलियाण मऽकयकरणाणं ॥
निरवज्ज मज्जकालिय ॥ जइण जुग्गं निरुवसग्गं ॥ १२ ॥

धीरज बल रहित एवा अकाल मरणना करनारा अने अकृतना करनाराओने अने निरवद्य आजना कालना यतिओने उपसर्ग रहित मरण योग्य छे ॥ १२ ॥

पसमसुहसप्पिवासो ॥ असोअहासो सजीवियनिरासो ॥
विसयसुह विगयरागो ॥ धम्मुज्जम जायसंवेगो ॥ १३ ॥

उपशम सुखने विषे अभिलाषवालो अने शोक अने हास्य रहित एवो अने पोताना जीवितने विषे आशा रहित एवो विषय सुखनी तृष्णा रहित धर्मने विषे उद्यम करतां जेने संवेग थएलो छे एवो ॥ १३ ॥

निच्छियमरणावत्थो ॥ वाहि ग्गत्थो गिहत्थो वा ॥
अविअ अत्तपरिन्नाइ ॥ नायसंसारनिग्गुन्नो ॥ १४ ॥

मरणनी अवस्था नीश्चे करी छे जेणे अने व्याधि ग्रस्त एवो अने संसारनुं निर्गुणपणुं जेणे जाण्युं छे एवो यति अथवा गृहस्थ भक्तपरिज्ञा मरणने योग्य होय ॥ १४ ॥

वाहि जर मरण मयरो ॥ निरंतरुपत्ति नीर निउरंबो ॥
परिणाम दारुण दुहो ॥ अहो दुरंतो भव समुद्दो ॥ १५ ॥

व्याधि जरा अने मरणरूपी मगरो छे ज्यां अने निरंतर जन्मरूपि पाणीनो समुह छे ज्यां परिणामे दारुण दुःखनो आपनारो एवो अहो इति खेदे ससाररूपी समुद्र घणो दुरंत छे ॥ १५ ॥

पच्छायावपरद्धो ॥ पियधम्मो दोसदूसणसयन्हो ॥
अरिहइ पासत्थाइवि ॥ दोसे दोसिल्ल कलिउवि ॥ १६ ॥

पश्चातापे करीने पीडाएलो धर्म जेने प्रीय छे एवो अने दोषने निंदवाने तृष्णावालो अने दोष अने दुःशीलपणावडे पण सहित एवा पासत्थादिक पण अणशणने योग्य छे ॥ १६ ॥

इय कलिऊण सहरिसं ॥ गुरु पामूले अभिगम्म विणएणं ॥
भालयल मिलिय कर कमल ॥ सेहरो वंदिउं भणइ ॥ १७ ॥

आ अणशण करीने हरख सहित विनयवडे गुरुना चरण कमल आगल आवीने हस्त कमल जोडीने मुकुटनी पेठे कपाले लगाडीने गुरुने वांदीने आ प्रमाणे कहे ॥ १७ ॥

आरुहिय मइ सुपुरिस ॥ भत्तपरिन्ना पसत्थ वोहित्थं ॥
निज्जामएण गुरुणा ॥ इच्छामि भवन्नवं तरिउं ॥ १८ ॥

हे सत् पुरुष, भक्त परिज्ञारूप प्रशस्त वहाण उपर चढीने निर्यामक एवा जे गुरु तेवडे संसाररूपी अर्णवने तरवाने हुं इच्छुंछुं ॥ १८

कारुन्नामय नीसंदसुंदरो ॥ सो विसो विसे गुरू भणइ ॥
आलोयण वय खामण ॥ पुरस्सरं तं पवज्जेसु ॥ १९ ॥

दयामय अमृत रसथी सुंदर एवा ते गुरु पण तेने कहेता हवा के (हे वत्स) आलोयण लइ व्रत उचरी सर्वने खमाववा पूर्वकतेभक्त परिज्ञा अणशणने अंगीकार कर ॥ १९ ॥

इच्छामुत्ति भणित्ता ॥ भत्ती बहुमाण सुद्ध संकप्पो ॥
गुरुणो विगयावाए ॥ पाए अभिवंदिउं विहिणा ॥ २० ॥

इच्छं एम कहीने भक्ति अने बहुमानवडे शुद्ध संकल्पवालो, जेनामांथी अनर्थ गएला छे एवा गुरुना चरण कमल प्रत्ये विधिए वांदीने ॥ २० ॥

सल्लं उद्धरिउ मणो ॥ संवेगुव्वेय तिव्वसड्ढाओ ॥
जं कुणइ सुद्धि हेउं ॥ सो तेणाराहओ होइ ॥ २१ ॥

पोताना शल्यने उद्धरवाने इच्छतो संवेग (मोक्षनो अभिलाष) अने उद्वेग (संसार छांडवानी इच्छा) थकी तिव्र श्रद्धावालो जे शुद्धिने माटे जे कंइ करे ते वडे ते माणस आराधक थाय ॥ २१ ॥

अह सो आलोअण दोस वज्जियं ॥ उज्जुयं जहायरियं ॥
बालुव्व बालकालाओ ॥ देइ आलोअणं सम्मं ॥ २२ ॥

हवे ते आलेयणना दोषे करीने रहित बालकनी माफक बचपणना वखत थकी जेवुं आचरण कर्युं होय तेवुं सम्यक प्रकारे आलोचन करे ॥ २२ ॥

ठविए पाय च्छित्ते ॥ गणिणा गणि संपया समग्गेणं ॥
संम अणुमन्निय तवं ॥ अपावभावो पुणो भणइ ॥ २३ ॥

आचार्यना समग्र गुणे सहित एवा आचार्य तेमणे प्रायश्चित आपे थके सम्यक् प्रकारे ते प्रायश्चित तप आदरीने निर्मल भाववालो एवो ते शिष्य फरीने कहे ॥ २३ ॥

दारुण दुहजलयरनियर ॥ भीम भवजलहि तारण समत्थो ॥
निप्पच्च वाय पोए ॥ महव्वए अम्हउक्खिवसु ॥ २४ ॥

दारुण दुःखरूप जलचर जीवोना समुहथी भयंकर एवा संसाररुपी समुद्रने तारवाने समर्थ एवा गुरु निर्विघ्न एवा वहाण समान महाव्रतने विषे अमने मूको ॥ २४ ॥

जइ विसखंडियचंमो ॥ अखंम महव्वउ जई जइवि ॥
पव्वज्जव उठावण ॥ मुठावण मरिहइ तहावि ॥ २५ ॥

जो पण खंडयो छे कोप जेणे एवो अखंड महाव्रत वालो यति छे तोपण प्रव्रज्या व्रतनी उपस्थापनाने योग्य ते छे ॥ २५ ॥

पहुणो सुकयाणत्तिं ॥ भिच्चा पच्चप्पिणंति जह विहिणा ॥
जावज्जीव पइन्ना णत्तिं गुरुणो तहा सोवि ॥ २६ ॥

प्रभुनी सारी करेली आज्ञाने जेम चाकरो विधिवडे बजावीने पाछी आपे छे तेम यावत् जीव चारित्र पालीने ते पण गुरुने ए प्रमाणे जणावे ॥ २६ ॥

जो साइयारचरणो ॥ आउट्टिय दंम खंमियवउ वा ॥
तह तस्स विसम्म मुव, ठियस्स उठावणा भणिया ॥ २७ ॥

जेणे अतिचार सहित व्रत पाल्युं तथा आकुट्टी दंडे व्रत खंडयुं एवा पण सम्यक् उपस्थित थएलाने (शिष्यने) उपस्थापना कही छे ॥ २७ ॥

तत्तो तस्स मह्व्वय ॥ पव्वय न्नारो नमंत सीसस्स ॥
सीसस्स समारोवइ ॥ सुगुरूवि मह्व्वए विहिणा ॥ २७ ॥

त्यार पछी महाव्रतरूप पर्वतना भारथी नमी गएलुं छे मस्तक जेनुं एवा ते शिष्यने सुगुरु विधिवडे महाव्रतनी आरोपणा करे ॥ २८ ॥

अह हुज्ज देसविरत्त ॥ समत्तरत्त रत्त अ जिणवयणे ॥
तस्सवि अणुव्वयाइं ॥ आरोविज्जंति सुद्धाइं ॥ २९ ॥

हवे देशविरति श्रावक समकितने विषे रक्त अने जिन वचनने विषे तत्पर होय तेने पण शुद्ध अणुव्रतो मरणना वखते आरोपण कराय छे ॥ २९ ॥

अनियाणोदारमणो ॥ हरिस वस विसट्ट कंचुय करालो ॥
पूएइ गुरुं संघं ॥ साहंमिय माइ न्नत्तीए ॥ ३० ॥

नियाणा रहित अने उदार चित्तवालो हरखने वशे विस्तार पाम्यां छे रोम राय जेनां एवो गुरुनी संघनी अने साधर्मिकनी निष्कपटपणे भक्तिवडे पूजा करे ॥ ३० ॥

निय दव्व मनव जिणिंद ॥ न्नवण जिण बिंब वर पइठासु ॥
वियरइ पसत्थ पुत्थय ॥ सुतित्थ तित्थयर पूआसु ॥ ३१ ॥

प्रधान जिनेंद्र प्रासाद जिनबिंब अने उत्तम प्रतिष्ठाने विषे अने प्रशस्त पुस्तक लखाववामां सुतीर्थ अने तीर्थंकरनी पूजाने विषे श्रावक पोताना द्रव्यने वापरे ॥ ३१ ॥

जइ सेवि सव्व विरइ ॥ कयाणुराउ विसुद्ध मण काउ ॥
ठिन्न सयणाणुराउ ॥ विसय विसाउ विरत्तो अ ॥ ३२ ॥

जो ते श्रावक सर्व विरति संयमने विषे कर्यो छे अनुराग जेणे एवो अने विशुद्ध मन (वचन) अने काया वालो, अने स्वजन कुटुंबना अनुराग रहित एवो विषय उपर खेद धरतो अने वैरागवालो,

संथारय पवज्जं ॥ पडिवज्जइ सोवि नियम निरवज्जं ॥
सव्व विरइ पहाणं ॥ सामाइय चरित्त मारुहइ ॥ ३३ ॥

ते श्रावक संथारा उपर दिक्षाने अंगीकार करे अने नियमवडे निरवद्य एवु सर्व विरतिरूप पांच महाव्रते प्रधान एवुं सामायक चारित्र अंगीकार करे ॥ ३३ ॥

अह सो सामाइय धरो ॥ पडिवन्न महव्वउ अ जो साहु ॥
देस विरउ अ चरिमं ॥ पच्चक्खामित्ति निच्छइउ ॥ ३४ ॥

हवे ते सामायक चारित्र धारण करनारो अने महाव्रतने अगीकार करनारो एवो जे साधु अने देश विरति छेल्लुं पच्चख्खाण करुं एवो निश्चय मनेन धारण करतो एवो(श्रावक)॥ ३४ ॥

गुरु गुण गुरुणो गुरुणो ॥ पय पंकय नमिय मछत्त जणइ ॥
जयवं जत्तपरिन्नं ॥ तुम्हाणुमयं पवख्खामि ॥ ३५ ॥

गुरुगुणवडे करीने गुरु एवा गुरु पदपंकजने मस्तकवडे नमस्कार करीने आ प्रमाणे कहे. हे भगवन् तमारी अनुमतिथी भक्त परिज्ञा अणशण हुं अंगीकार करुंछुं ॥ ३५ ॥

आराहणाइ खेमं ॥ तस्सेव य अप्पणो अ गणिवसहो ॥
दिव्वेण निमित्तेणं ॥ पमिलेहइ इह रहा दोसा ॥ ३६ ॥

आराधनादिकने विषे कल्याण तेने (अणसण लेनारने) अने पोताने थाय तेम आचार्य दिव्य निमित्तवडे, निमित्त अणजोये अणसण लेवरावे तो दोष लागे ॥ ३६ ॥

तत्तो जव चरिमं सो ॥ पच्चरकाइत्ति तिविह माहारं ॥
उक्कोसियाणि दव्वाणि ॥ तस्स सव्वाणि दंसिच्चा ॥ ३७ ॥

त्यारपछी ते गुरु उत्कृष्टां सर्व द्रव्यो पोताना शिष्यने देखाडीने त्रण प्रकारना आहारने जावजीव सुधी पचखावे ॥ ३७ ॥

पासित्तु ताणि कोइ ॥ तीरंपत्तस्सिमेहिं किं मच्च ॥
देसं च कोइ जुच्चा, संवेग गत्त विचिंतेइ ॥ ३८ ॥

ते उत्कृष्टां द्रव्योने जोइने भवसमुद्रना कांठे पहोंचेला एवा मारे आ वडे शुं काम छे एम कोइ एक चिंतवे; कोइ जीव द्रव्यनी इच्छा होय ते भोगवीने संवेग पाम्यो छतो ए प्रमाणे चिंतवे ॥ ३८ ॥

किं चत्तं नोवजुत्तं मे ॥ परिणामासुइं सुइं ॥
दिठसारो सुहं झायइ ॥ चोअणे से विसीयउ ॥ ३९ ॥

शुं में भोगवीने छांड्युं नथी, जे पदार्थ पवित्र होय ते परिणामे अशुचि छे एम ज्ञान तत्पर थको शुभध्यान करे; जे विषाद पामे तेने आवी चोयणा आपवी ॥ ३९ ॥

उअरमल सोहणठा ॥ समाहिपाणं मणुन्न मे ॥
सो वि महुरं पज्जेयव्वो ॥ मंदं च विरेयणं खमउ ॥ ४० ॥

उदरमलनी शुद्धिने अर्थे समाधिपान (साकर विगेरेनुं पाणी) मने सारुं छे. तो ते मधुर पाणी पण तेने पावुं अने थोडे थोडे विरेचन कराववुं ॥ ४० ॥

एल तय नागकेसर ॥ तमालपत्तं ससक्करं दुद्धं ॥
पाऊण कढिय सीयल ॥ समाहि पाणं तउ पच्छा ॥ ४१ ॥

एलची, तज, नागकेसर, तमालपत्र एना वडे करीने सहित एवुं साकरवालुं दूध कढीने टाढुं करी पाइए तेने समाधि पाणी कहीए ए पीवाथी ताप उपशमे; त्यार पछीः– ॥ ४१ ॥

महुर विरेयण मेसो ॥ कायव्वो फोफलाइ दव्वेहिं ॥
निव्वाविउ अ अग्गी ॥ समाहिमेसो सुहं लहइ ॥ ४२ ॥

फोफलादिक द्रव्ये करीने मधुर औषधनुं विरेचन करावनुं जोइए. केमके एरीते उदरनो अग्नि ठोलवे थके आ अणशणनो करनारो सुखे समाधि पामे ॥ ४२ ॥

जावज्जीवं तिविहं ॥ आहारं वोसिरइ इहं खवगो ॥
निज्जवगो आयरिउ ॥ संघस्स निवेयणं कुणइ ॥ ४३ ॥

अणशण करनार तपस्वी जाव जीव सुधी त्रण प्रकारना आहार (अशन, खादिम, अने स्वादिम) ने अहींआं वोसिरावे छे. एम निजामणा करावनार आचार्य संघने निवेदन करे ॥ ४३ ॥

आराहण पच्चइयं ॥ खमगस्स य निरुवसग्ग पच्चइयं ॥
तो उस्सगो संघेण ॥ होइ सव्वेण कायव्वो ॥ ४४ ॥

ते (तपस्वी) ने आराधना संबंधि सर्व वात निरुपसर्गपणे प्रवर्ते तो सर्व संघे वसें छप्पन्न श्वासोश्वासनो काउस्सग करवो ॥ ४४ ॥

पच्चरकाविंति तउ ॥ तं ते खवगं चउव्विहाहारं ॥
संघ समुदाय मज्झे ॥ चिइवंदण पुव्वयं विहिणा ॥ ४५ ॥

त्यार पछी ते आचार्य संघना समुदायमां चैत्यवंदन पूर्वक निधिवडे ते क्षपक (तपस्वी) ने चतुर्विध आहारनुं पच्चखाण करावे ॥ ४५ ॥

अहवा समाहि हेउं ॥ सागारं चयइ तिविहमाहारं ॥
तो पाणियंपि पच्छा ॥ वोसिरियव्वं जहाकालं ॥ ४६ ॥

अथवा समाधिने अर्थे त्रण प्रकारना आहारने सागार पणे पचखे त्यार पछी पाणीने पण अवसरे वोसिरावे. ॥ ४६ ॥

तो सो नमंतसिरसं ॥ घमंतकरकमलसेहरो विहिणा ॥
खामेइ सव्व संघं ॥ संवेगं संजणेमाणो ॥ ४७ ॥

त्यार पछी ते (अणशण करनार) मस्तक नमावीने पोताना बे हाथने मस्तके मुकुट समान करीने विधिवडे संवेग पमाडतो सर्व संघने खमावे ॥ ४७ ॥

आयरिय उवज्झाए ॥ सीसे साहंमिए कुलगणेय ॥
जेमे केइ कसाया ॥ सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ ४८ ॥

आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक, कुल अने गणना उपर मे जे कोइ कषाय कर्या ते सर्वे हुं त्रिविधे खमावुंछुं ॥ ४८ ॥

सव्वे अवराहपए ॥ खामेमि अहं खमेउ मे भयवं ॥
अहमवि खामेमि सुद्धो ॥ गुण संघायस्स संघस्स ॥ ४९ ॥

सर्वे मारा अपराधना पद (वांक). हे भगवन् मने खमो अने हुं पण गुणना समुह वाला एवा संघने शुद्ध थइने खमावुंछुं ॥ ४९ ॥

इय वंदण खामण गरिहणेहिं ॥ भवसय समज्जियं कम्मं ॥
खवेइ खणेण खयं, मिगावइ राइपत्तिव्व ॥ ५० ॥

आ रीते वंदन, खामणां स्व निंदाओवडे सो भवनुं उपार्जेलुं कर्म एक क्षण मात्रमां मृगावती राणीनी पेठे क्षय करे ॥ ५० ॥

अह तस्स महव्वय सुठियस्स ॥ जिण वयण भाविय मणस्स ॥
पच्चक्खायाहारस्स ॥ तिव्व संवेग सुहयस्स ॥ ५१ ॥

हवे ते (अणशण करनार) महाव्रतने विषे निश्चल रहेलाने अने जिन वचनवडे भावित थयुंछे मन जेनुं एवाने, पचख्या छे आहार जेणे एवाने, अने तिव्र संवेगवडे करीने मनोहर एवाने ॥ ५१ ॥

आराहण लाभाउ ॥ कयत्थ मप्पाणयं मणंतस्स ॥
कलुस कल तरणि लहिं ॥ अणुसहिं देइ गणिवसभो ॥ ५२ ॥

अणशण आराधनाना लाभ थकी पोताने कृतार्थ माननाराने, पापरुपी कादवने ओलंगवाने लाकडी समान एवी शीखामण आचार्य दे ॥ ५२ ॥

कुग्गह परूढ मूलं ॥ मूलात्तछिंद वछ मिछत्तं ॥
भावेसु परमतत्तं ॥ संमत्तं सुत्त नीइए ॥ ५३ ॥

कुग्रह (कदाग्रह) रूपी वध्युंछे मूल जेनुं एवा मिथ्यात्वने मूल थकी उखेडी नांखीने हे वत्स परम तत्त्व एवा सम्यकूत्वने सूत्रनी नीतिए भाव्य ॥ ५३ ॥

भत्तिं च कुणसु तिव्वं ॥ गुणाणुराएण वीयरायाणं ॥
तह पंच नमुक्कारे ॥ पवयणसारे रइं कुणसु ॥ ५४ ॥

वली गुणना अनुरागवडे वितराग भगवाननी तीव्र भक्ति कर ॥ तथा प्रवचननो सार एवा पांच नमस्कारने विषे अनुराग कर ॥ ५४ ॥

सुविहिय हिय निझाए ॥ सझाए उज्जुत्त सया होसु ॥
निच्चं पंच महव्वय ॥ रक्खं कुण आयपच्चक्खं ॥ ५५ ॥

सुविहित साधुने हितना करनार एवा स्वाध्यायने विषे हमेशां उद्यमवंत था अने नित्य पांच महाव्रतनी रक्षा आत्म समक्ष कर ॥ ५५ ॥

उझसु नियाण सल्लं ॥ मोह महल्लं सुकम्म निस्सल्लं ॥
दमसु अ मुणिंद संदोहि ॥ निंदिए इंदिय मइंदे ॥ ५६ ॥

मोहे करीने मोटा अने शुभ कर्मने शल्य समान एवा नियाण शल्यने तुं त्याग कर, अने मुनिंद्रोना समुहे निंद्यां छे एवा इंद्रियरूपी मृगेंद्रोने तुं दम ॥ ५६ ॥

निव्वाण सुहावाए ॥ विइन्न निरयाइ दारुणावाए ॥
हणसु कसायपिसाए ॥ विसय तिसाए सय सहाए ॥ ५७ ॥

निर्वाण सुखने अतराय भूत अने नरकादिकने विषे भयंकर पात जेथी थाय छे एवा कषायरुपी पिशाचने हण, जे विषय तृष्णाना हमेशां सखाइआ छे ॥ ५७ ॥

काले अपहुसंते ॥ सामन्ने सावसेसिए इन्हिं ॥
मोह महारिउ दारण ॥ असिलट्ठिं सुणसु अणुसट्ठिं ॥ ५८ ॥

काल नहीं पहोचते अने हमणां थोडुं चारित्र बाकी रहे छते मोह रूपी महा वैरीने विदारवाने माटे खड्ग अने लाठी (डांग) समान हित शिक्षाने तुं सांभल ॥ ५८ ॥

संसार मूल बीयं ॥ मिच्छत्तं सव्वहा विवज्जेह ॥
संमत्ते दढचित्तो ॥ होसु नमुक्कार कुसलो अ ॥ ५९ ॥

संसारना मूल बीज भूत एवा मिथ्यात्वने सर्व प्रकारे त्याग कर अने सम्यक्त्वने विषे दृढ चित्तवालो थइ नमस्कारना ध्यानने विषे कुशल था ॥ ५९ ॥

मियतन्हियाहिं तोयं ॥ मन्नंति नरा जहा स तन्हाए ॥
सुरकाइं कुहम्माउ ॥ तहेव मिच्छत्त मूढ मणो ॥ ६० ॥

जेमं माणसो पोतानी तृष्णावडे करीने मृगतृष्णाने विषे (झांझवाना पाणीमां) पाणी मानेछे तेम मिथ्यात्वथी मूढ मनवालो कुधर्मथकी सुखनी इच्छा करे छे ॥ ६० ॥

न वि तं करेइ अग्गी ॥ नेय विसं नेयकिन्ह सप्पोवि ॥
जं कुणइ महा दोसं ॥ तिव्वं जीवाण मिच्छत्तं ॥ ६१ ॥

जे महा दोष जीवने तीव्र मिथ्यात्व करे छे ते दोष अग्नि विष के कृष्ण सर्प पण करतो नथी ॥ ६१ ॥

पावेइ इहेव वसणं ॥ तुरुमणिदत्तुव्व दारुणं पुरिसो ॥
मिच्छत्तमोहियमणो ॥ साहु पउसाउ पावाउ ॥ ६२ ॥

मिथ्यात्वथी मूढ चित्तवालो माणस साधु उपर द्वेष राखवा रूप पापथी तुरुमणि नगरीना दत्तनी पेठे तीव्र दुःख आ लोकमांज पामे ॥ ६३ ॥

मा कासि तं पमायं ॥ संमत्ते सव्व दुरक नासणए ॥
जं सम्मत्त पइठाइं ॥ नाण तव विरिय चरणाइं ॥ ६३ ॥

तु सर्व दुःखने नाश करनार एवा सम्यक्त्वने विषे प्रमाद न करीश, जे कारण माटे सम्यकत्वने आधारे ज्ञान, तप, वीर्य अने चारित्र रहेला छे. ॥ ६३ ॥

भावाणुराय पिम्माणु ॥ राय सुगुणाणुराय रत्तो अ ॥
धम्माणुराय रत्तो ॥ अ होसु जिणसासणे निच्चं ॥ ६४ ॥

जेवो तुं पदार्थना उपर अनुराग करे छे, प्रेमनो अनुराग करे छे अने सद्गुणना अनुरागने विषे रक्त थाय छे तेवोज जिन शासनने विषे हमेशां धर्मना अनुरागवडे करीने रक्त था. ॥ ६४ ॥

दंसण भठो भठो ॥ नहु भठो होइ चरण पभ्रठो ॥
दंसणमणुपत्तस्स उ ॥ परियटणं नत्थि संसारे ॥ ६५ ॥

सम्यक्त्वथी भ्रष्ट ते सर्वथी भ्रष्ट जाणवो, पण चारित्रथी भ्रष्ट थएलो बधाथी भ्रष्ट थतो नथी केमके सम्यक्त्व पामेलो जे जीव छे तेने संसारने विषे झाझुं परिभ्रमण नथी ॥ ६५ ॥

दंसण भठो भठो ॥ दंसण भठस्स नत्थि निव्वाणं ॥
सिज्झंति चरणं रहिया ॥ दंसण रहिया न सिज्झंति ॥ ६६ ॥

दर्शन थकी भ्रष्ट ते भ्रष्ट जाणवो सम्यक्त्वथी चुकेलाने मोक्ष नथी, चारित्रथी रहित जीव मुक्ति पामेछे पण समकितथी रहित जीव मोक्ष पामता नथी ॥ ६६ ॥

सुद्धे सम्मत्ते अविरत्त वि ॥ अज्जेइ तित्थयर नामं ॥
जह आगमेसिभद्दा ॥ हरिकुल पहु सेणियाईया ॥ ६७ ॥

शुद्ध समकित छते अविरती एवो पण जीव तिर्थंकर नाम कर्म उपार्जन करे जेम आगामि कालमां कल्याण थवानुं छे जेमनुं एवा हरीकुलनो प्रभु एटले कृष्ण महाराज अने श्रेणिक विगेरे राजाओए उपार्जन कर्युं ॥ ६७ ॥

कल्लाण परंपरयं ॥ लहंति जीवा विसुद्धसम्मत्ता ॥
सम्म दंसण रयणं ॥ नग्घइ ससुरा सुरे लोए ॥ ६८ ॥

निर्मल सम्यक्त्ववाला एवा जे जीवो ते कल्याणनी परंपराने पामेछे. (केमके) सम्यक् दर्शन रुपी रत्न सुर अने असुर लोकने विषे अमुल्य छे ॥ ६८ ॥

तेलुक्कस्स पहुत्तं ॥ लद्धूणवि परिवडंति कालेणं ॥
सम्मत्ते पुण लद्धे ॥ अक्खयसुक्खं लहइ मुक्खं ॥ ६९ ॥

त्रण लोकनी प्रभुता पामीने पण काले करीने ते पडेछे. पण सम्यक्त्व पामे छते अक्षय सुखवालुं एवु मोक्ष तेने जीव पामेछे ॥ ६९ ॥

अरिहंत सिद्ध चेइय ॥ पवयण आयरिय सव्वसाहूसु ॥
तिव्वं करेसु भत्तिं ॥ तिगरण सुद्धेण भावेणं ॥ ७० ॥

१. अरिहंत २. सिद्ध ३. चैत्य (जिन प्रतिमा) ४. प्रवचन सिद्धांत ५. आचार्य ६. सर्व साधु एटलाने विषे मन, वचन अने काया ए त्रण करणवडे शुद्धभावथी तीव्र भक्ति कर ॥ ७० ॥

एगावि सा समत्था ॥ जिणभत्ती दुग्गइं निवारेउं ॥
दुलहाइं लहावेउं ॥ आसिद्धि परंपर सुहाइं ॥ ७१ ॥

एकली एवी पण जिन भक्ति दुर्गतिने निवारवाने माटे समर्थ थाय छे अने ज्यां सुधी सिद्धि पामे त्यां सुधी दुर्लभ एवा परंपर सुखने मेलवी आपवा समर्थ छे ॥ ७१ ॥

विज्जा वि भत्तिमंतस्स ॥ सिद्धि मुवयाइ होइ फलयाय ॥
किं पुण निव्वुइ विज्जा ॥ सिज्झिइ अभत्तिमंतस्स ॥ ७२

विद्या पण भक्तिवंतने सिद्ध थाय छे अने फलने आपनारी थाय छे तो वली शी रीते मोक्षनी विद्या अभक्तिवंतने सिद्ध थाय ? ॥ ७२ ॥

तेसिं आराहण नायगाण ॥ न करिज्ज जो नरो भत्तिं ॥
धणियं पि उज्जमंतो ॥ सालिं सो ऊसरे ववइ ॥ ७३ ॥

ते आराधनाओना नायक एवा वीतराग भगवान तेनी जे माणस भक्ति न करे ते पुरुष घणो पण उद्यम करतां डांगरने उखर भूमिने विषे वावेछे ॥ ७३ ॥

वीएण विणा सस्सं ॥ इछइ सो वास मप्नएण विणा ॥
आराहणमिछंतो ॥ आराहयन्नत्तिमकरंतो ॥ ७४ ॥

आराधकनी भक्ति नहि करतो पण आराधनाने इच्छतो एवो माणस वी विना धान्यनी अने वादलां विना वरसादनी इच्छा करेछे ॥ ७४ ॥

उत्तम कुल संपत्तिं ॥ सुह निप्फत्तिं च कुणइ जिणभत्ती ॥
मणियार सिठि जीवस्स ॥ दद्दुरस्सेव रायगिहे ॥ ७५ ॥

श्री जिनेश्वर महाराजनी भक्ति उत्तम कुलने विषे उत्पत्ति अने सुखनी निष्पत्ति करेछे, जेम राजग्रह नगरने विषे मणीआर शेठनो जीव जे देडको हतो तेने थयुं ॥ ७५ ॥

आराहण पुरस्सर मणन्न हियय विसुद्द लेसाउ ॥
संसार खय करणं ॥ तं मा मुंची नमुक्कारं ॥ ७६ ॥

आराधना पुर्वक वीजे ठेकाणे चित्त नहि आपनार विशुद्ध लेश्या थकी संसारना क्षयने करनार एवा नवकारने तुं मा मुक ॥ ७६ ॥

अरिहंत नमुक्कारो ॥ इक्कोवि हविज्ज जो मरणकाले ॥
सो जिणवरेहिं दिठो ॥ संसारुच्छेयण समत्थो ॥ ७७ ॥

मरणनी वखते जो एक पण अरिहंतने नमस्कार थाय तो ते संसार उच्छेद करवाने समर्थ छे एम जिनेश्वर भगवाने कहेलुं छे ॥ ७७ ॥

मिंठो किलिठकंमो ॥ नमो जिणाणं ति सुकय पणिहाणो ॥
कमलदलक्खो जक्खो ॥ जाउ चोरुत्ति सूलिहिउ ॥ ७८ ॥

माठां कर्मनो करनारो एवो महावत जेने चोर कहीने शूलीए दीधेलो ते पण 'नमो जिणाणं' एम कहेतो शुभ ध्याने वर्ततो कमलपत्रना जेवी आंखवालो यक्ष थयो ॥ ७८ ॥

भाव नमुक्कार विवज्जियाइं ॥ जीवेण अकय करणाइं ॥
गहियाणि य मुक्काणि य ॥ अणंतसो दव्व लिंगाइं ॥ ७९ ॥

भाव नमस्कार रहित एवां निरर्थक द्रव्य लिग जीवे अनंती वार ग्रहण कर्यां अने मूक्यां ॥ ७९ ॥

आराहणा पडागा ॥ गहणे हत्थो भवे नमुक्कारो ॥
तह सुगइ मग्ग गमणे ॥ रहुव्व जीवस्स अपडिहउ ॥ ८० ॥

आराधना रूप पताका लेवाने विषे नमस्कार हाथ रूप थायछे, तेमज सदूगतिना मार्गे जवामां ते जीवने अप्रतिहत रथ समान छे ॥ ८० ॥

अन्नाणी विय गोवो ॥ आराहित्ता मउ नमुक्कारं ॥
चंपाए सिठिसुउ ॥ सुदंसणो विस्सुउ जाउ ॥ ८१ ॥

अज्ञानी एवो पण गोवाल नवकार आराधीने मरण पाम्यो ते चंपानगरीने विषे श्रेष्ठी पुत्र सुदर्शन एवे नामे प्रख्यात थयो ॥ ८१ ॥

विज्जा जहा पिसायं ॥ सुठु वउत्ता करेइ पुरिस वसं ॥
नाणं हियय पिसायं ॥ सुठु वउत्तं तह करेइ ॥ ८२ ॥

जेम विद्या सारी रीते आराधी थकी पिशाच प्रते पुरुषने वश करेछे तेम ज्ञान रुडी पेरे आराध्युं थकुं मन रूपी पिशाचने वश करेछे ॥ ८२ ॥

उवसमइ किण्ह सप्पो ॥ जह मंतेण विहिणा पउत्तेणं ॥
तह हियय किण्ह सप्पो ॥ सुठु वउत्तेण नाणेण ॥ ८३ ॥

जेम विधिए आराधेला मंत्रवडे कृष्ण सर्प उपशमे छे तेम रुडी पेरे आराधेला एवा ज्ञान वडे मन रूपी कृष्ण सर्प वश थायछे ॥ ८३ ॥

जह मक्कडउ खणमवि ॥ मज्झत्थो अच्छिउं नसक्केइ ॥
तह खणमवि मज्झत्थो ॥ विसएहिं विणा न होइ मणो ॥ ८४ ॥

जेम मांकडो क्षण मात्र पण निश्चल थइ न शके तेम मन क्षणमात्र पण विषयोना आनंद विना मध्यस्थ न रही शके ॥ ८४ ॥

तम्हा स उठ्ठिमाणो ॥ मण मक्कडउ जिणोवएसेण ॥
काउं सुत्त निबद्धो ॥ रामेयव्वो सुहेज्झाणे ॥ ८५ ॥

ते माटे ते उठता मनरूपी मांकडाने जिनना उपदेशवडे दोरीथी बांधेलो करीने शुभ ध्यानने विषे रमाडवो ॥ ८५ ॥

सूई जहा ससुत्ता ॥ न नस्सइ कय वरंमि पडियावि ॥
जीवो तहा ससुत्तो ॥ न नस्सई गउ वि संसारे ॥ ८६ ॥

जेम सोय दोरा सहित होय ते कचरामां पडी होय तो पण खोवाइ जाय नहि तेम जीव (श्रुतज्ञान रूपी) दोरा सहित संसारने विषे पडयो होय तो पण नाश पामे नहि ॥ ८६ ॥

संम्म सिलोगेहिं जवो ॥ जइ ता मरणाउ रक्खिउ राया ॥
पत्तोअसुसामन्नं ॥ किं पुण जिण वुत्त सुत्तेणं ॥ ८७ ॥

लौकिक श्लोकोवडे यत्नने जो मरण थकी राजाए वचाव्यो अने ते रुडुं साधुपणुं पाम्यो तो जिनेश्वर भगवाने कहेला एवा सूत्रवडे जीव मरणना दुःखथी छुटे एमां शुं कहेवुं ॥ ८७ ॥

अहवा चिलाइपुत्तो ॥ पत्तो नाणं तहा सुरत्तं च ॥
उवसम विवेग संवर ॥ पयसुमरण मित्त सुयनाणो ॥ ८८ ॥

अथवा उपशम, विवेक, संवर ए पदना सांभळवा मात्र श्रुत ज्ञान जेने छे एवो चिलाती पुत्र ज्ञान पाम्यो तेमज देवपणुं पाम्यो ॥ ८८ ॥

परिहर उज्जीव वहं ॥ सम मण वयण काय जोगेहिं ॥
जीव विसेसं नाउं ॥ जावज्जीवं पयत्तेणं ॥ ८९ ॥

जीवना भेदने जाणीने जावजीव प्रयत्नवडे सम्यक् मन, वचन, कायाना योगवडे छ कायना जीवना वधने त्याग कर ॥ ८९ ॥

जह ते न पियं दुक्खं ॥ जाणिय एमेव सव्व जीवाणं ॥
सव्वायर मुवउत्तो ॥ अत्तो धम्मेण कुणसुदयं ॥ ९० ॥

जेम तने दुःख वहालु लागतुं नथी एम सर्व जीवने पण दुःख गमतुं नथी एवुं जाणीने सर्व आदरवडे उपयुक्त छतो धर्मने विषे उद्यम करतो दयाने कर ॥ ९० ॥

तुंगं न मंदराउ ॥ आगासाउ विसालयं नत्थि ॥
जह तह जयंमि जाणसु ॥ धम्ममहिंसासमं नत्थि ॥ ९१ ॥

जेम जगतने विषे मेरु पर्वत थकी कंइ उंचुं नथी अने आकाश थकी कंइ मोटुं नथी तेम अहिंसा समान धर्म नथी ॥ ९१ ॥

सव्वे विय संबंधा ॥ पत्ता जीवेण सव्व जीवेहिं ॥
तो मारंतो जीवं ॥ मारइ संबंधिणो सव्वे ॥ ९२ ॥

सर्व पण (सघलाए) संबंधो सर्वे जीवो साथे आ जीवे पाम्या तेथी जीवने मारतो छतो सर्वे संबंधिओने मारे छे ॥ ९२ ॥

जीव वहो अप्पवहो ॥ जीवदया अप्पणो दया होइ ॥
ता सव्व जीवहिंसा ॥ परिचत्ता अत्त कामेहिं ॥ ९३ ॥

जीवनो वध ते आपणोज वध जाणवो अने जीवनी दया छे ते आपणीज दया छे तेथी आत्माना सुखने इच्छता जीवोए सर्व जीव हिंसा त्याग करी छे ॥ ९३ ॥

जावइयाइं दुक्खाइं ॥ हुंति चउगइगयस्स जीवस्स ॥
सव्वाइं ताइं हिंसा ॥ फलाइं निउणं वियाणाहिं ॥ ९४ ॥

जेटलां दुःखो चार गतिमां रखडता जीवने थाय छे ते सर्वे हिंसानां फल छे एम सुक्ष्म बुद्धिथी जाण ॥ ९४ ॥

जंकिंचि सुहमुयारं ॥ पहुत्तणं पगइ सुंदरं जं च ॥
आरुग्गं सोहग्गं ॥ तं तमहिंसाफलं सव्वं ॥ ९५ ॥

जे कंई मोटुं सुख अने प्रभुपणुं जे कंइ स्वाभाविक रीते सुंदर छे, निरोगपणुं, सौभाग्यपणुं छे ते ते सर्वे अहिंसानुं फल समजवुं ॥ ९५ ॥

पाणोवि पाडिहेरं ॥ पत्तो बूढोविसुंसुमारदहे ॥
एगेण वि एग दिण ख्रिएण ॥ हिंसावय गुणेणं ॥ ९६ ॥

चंडाल पण सुसुमार द्रहने विषे एक दिवसमां एक जीव बचाववाथी उत्पन्न थएलो अहिंसा व्रतना गुणवडे देवतानुं सानिध्य पाम्यो ॥ ९६ ॥

परिहर असच्च वयणं ॥ सव्वंपि चउव्विहं पयत्तेण ॥
संजमवंता वि जउ ॥ भासा दोसेण लिप्पंत ॥ ९७ ॥

असत्य चार प्रकारनुं छे तेनां नाम १. अछतानुं प्रगट करवु, जेम आत्मा सर्वगत छे, २. बीजा अर्थनुं कहेवुं जेम गो शब्दे श्वान. ३. छताने ओलववुं, जेम आत्मा नथी. ४. निंदानुं करवुं, जेम चोर न होय तेने

चोर कहेवो, ए सर्वे पण चार प्रकारना असत्य वचनने प्रयत्नवडे करीने त्याग कर जे माटे संजमवंत पुरुषो पण भाषाना दोषवडे (असत्य भाषणवडे कर्मथी) लेपाय छे. ॥ ९७ ॥

हासेण व कोहेण व ॥ लोहेण न्नएण वा वि तमसच्चं ॥
मा न्नणसु न्नणसु सच्चं ॥ जीवहियत्थं पसत्थमिणं ॥ ए८ ॥

वली हास्यवडे क्रोधवडे लोभवडे अने भयवडे ते असत्य ना बोल पण जीवने हिततुं करनारुं अने सुंदर एवु सत्य वचन बोल ॥ ९८ ॥

विस्ससणिज्जो माया ॥ व होइ पुज्जो गुरुव्व लोअस्स ॥
सयणुव्व सच्चवाइ ॥ पुरिसो सव्वस्स होइ पिन ॥ एए ॥

सत्यवादी पुरुष मातानी पेठे विश्वास राखवा लायक अने गुरुनी पेठे लोकने पूजवा योग्य अने सगानी पेठे सर्वने व्हालो लागे छे ॥ ९९ ॥

होन व जमी सिहंमी ॥ मुंमी वा वक्कलि वन ग्गो वा ॥
लोए असच्चवाइ ॥ न्नंनइ पासंम चंमालो ॥ १०० ॥

जटावंत होय अथवा शिखावंत होय, मुंड होय अथवा वल्कल (झाडनी छाल) पहेरनार होय, अथवा नग्न होय तोपण लोकने विषे असत्यवादी, पाखंडी अने चंडाल कहेवायछे ॥ १०० ॥

नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति तेणे करी शुद्ध एवुं ब्रह्मचर्य तेने रक्षण कर; निस घणा दोपथी भरेलो एवो जाणीने कामने जीत ॥ १०७ ॥

जावइया किरदोसा ॥ इहपरलोए डुहावहाहुंति ॥
आवहइ तेन सव्वे ॥ मेहुण सन्ना मणुस्सस्स ॥ १०८ ॥

खरेखर जेटला दोष आ लोक अने परलोकने विषे दुःखना करनारा छे ते बधा दोषोने मनुष्यनी मैथुन संज्ञा लावेछे ॥ १०८ ॥

रइ अरइ तरल जीहा ॥ जुएण संकप्प उप्पम फणेण ॥
विसय बिलवासिणा ॥ मय मुहेण बिब्बो अरोसेण ॥ १०९ ॥

रति अने अरतिरुप चंचल बे जीभवाला अने संकल्प रुप प्रचंड फणावाला अने विषयरुप वीलमां वसनारा अने मदरुप मुखवाला अने गर्वथी अनादररुप रोषवाला ॥ १०९ ॥

काम भुअंगेण दठा ॥ लज्जा निम्मोय दप्प दाढेण ॥
नासंति नरा अवसा ॥ डुस्सह डुरकावह विसेण ॥ ११० ॥

लज्जारुप कांचलीवाला अने अहंकाररुप दाढवाला अने दुःसह दुःखकारक विषवाला एवा काम भुजंगवडे डसाएला माणसो परवश थएला देखायछे ॥ ११० ॥

लल्लक्क नरय वियणाउ घोर संसार सायरव्वहणं ॥

संगठइ न पिच्छइ ॥ तुच्छत्तं कामिय सुहस्स ॥ १११ ॥

रौद्र नरकनी वेदनाओ अने घोर एवा संसार सागर तेनुं वहन करवुं तेने पामे कामित सुखनुं तुच्छपणुं न देखे ॥ १११ ॥

वम्मह सरसय विद्धो ॥ गिद्धो वणिउव्वराय पत्तिए ॥

पाउ रकालय गेहे ॥ दुगंधेणेग सो वसिउ ॥ ११२ ॥

कामना सेंकडो बाणवडे विंधाएलो अने ग्रृद्ध थएलो एवो वाणीओ जेम राजानी स्त्रीए पायखानाना खालनी अंदर नांख्यो ते अनेक दुर्गंधोने सहन करतो त्यां रह्यो ॥ ११२ ॥

कामा सत्तो न मुणइ ॥ गम्मा गम्मं पि वेसियाणुव्व ॥

सिठी कुबेरदत्तो ॥ नियय सुया सुरय रइ रत्तो ॥ ११३ ॥

कामासक्त माणस वेश्यानी पेठे गम्य अने अगम्यने न जाणे जेम कुबेरदत्तशेठ पोतानी तरत बाळक-ने जन्म आपनारी माताना उपर सुरत विषय सुखथी रक्त थएलो रह्यो ॥ ११३ ॥

पञ्चि पिच्छिय कामकलिं ॥ कामग्घच्छा सुमुय सुअणुबंधं ॥

महिला सुदोस विसव, ल्लरीसु पयइं नियच्छंतो ॥ ११४ ॥

कंदर्प व्याप्त एवी अने दोषरूप विषनी वेलडीओ एवी स्त्रीओने विषे प्रेर्यो छे काम कलह जेणे एवा प्रतिबंधने (आसक्तिने) स्वभावथी जोता एवा तमे छोडीदो ॥ ११४ ॥

महिला कुलं सुवंसं ॥ पइं सुयं मायरंव पियरंवा ॥
विसअंधा अगणंती ॥ दुक्ख समुद्दंमि पाडेइ ॥ ११५ ॥

स्त्री–विषयमां आंधली थइ छती कुल, वंश, पति, पुत्र, माता तेमज पिताने नहि गणकारती दुःख समुद्रने विषे पाडेछे ॥ ११५ ॥

नीयं गमाहिं सुपत्त हराहिं ॥ त्तप्पिच्छ मंथर गइहिं ॥
महिलाहिं निन्नयाहिंव ॥ गिरिवर गुरुया विभिज्जंति ॥ ११६ ॥

स्त्रीओ नीचगामीनी पक्षे (ढळती जमीनमां जनारी) सारा स्तनवाली पक्षे (सुंदर पाणीने हरण करनारी) देखवा योग सुंदर अने मंद मंद गतीवाली नदीओनी पेठे मेरु पर्वत जेवा भारे (पुरुषो) ने पण भेदी नांखेछे ॥ ११६ ॥

सुट्ठु वि जियासु सुट्ठु वि पियासु ॥ सुट्ठु वि परूढ पिम्मासु ॥
महिलासुत्तुअगीसु अ ॥ विसंभं नाम को कुणइ ॥ ११७ ॥

अतिशय परिचयवाली अने अतिशय प्रिय एवी वली अतिशय प्रेमवंत एवी पण स्त्रीओ रुप सापणोने विषे खरेखर कोण विश्वास करे ॥ ११७ ॥

विसंभ्न निष्भरं पिहु, उवयार परं परूढ पिम्मंपि ॥
कय विप्पियं पइं ऊत्ति ॥ निंति निहणं इयासाउ ॥ ११८ ॥

अति विश्वासवंत एवा अने उपकारने विषे तत्पर एवा ने उत्पन्न थयो छे प्रेम ते जेने एवा पण पतिने एकवार अप्रिय करवाथी तरतज ते अधम स्त्रीओ मरण पमाडेछे ॥ ११८ ॥

रमणिय दंसणाउ ॥'सो मालं गीउ'गुण निबद्धाउ'॥
नव मालाइ मालाउ वहरंति हिययं महिलियाउ ॥ ११९ ॥

सुंदर देखाती एवी अने सुकुमार अंगवाली अने गुणथी (दोरीथी) बंधाएली नवी जाइनी माला जेवी स्त्रीओ पुरुषना हृदयने हरेछे ॥ ११९ ॥

किंतु महिलाण तासिं ॥ दंसण सुंदर जणिय मोहाणं ॥
आलिंगण मयरा देइ ॥ वज्झ मालाण वविणासं ॥ १२० ॥

दर्शनना सुंदरपणाथी उत्पन्न कर्यो छे मोह ते जेमने एवी स्त्रियोना आलिंगनरुप मदिरा कणेरनी वध्य मालानी पेठे पुरुषोने विनास आपेछे ॥ १२० ॥

रमणीय दंसणं चेव ॥ सुंदरं होउ संगम सुहेणं ॥
गंधोव्विय सुरहोमालईइ ॥ मलणं पुण विणासो ॥ १२१ ॥

स्त्रीनुं दरशन खरेखर रुडुं छे, माटे संगमना सुखवडे करीने सर्युं; मालानो गंध पण सुगंधीदार होय पण मर्दनवडे विनाश पामे ॥ १२१ ॥

साकेयपुराहिवइ ॥ देव रइ रज्ज सुरक पब्भट्ठो ॥
पंगुल हेउं बूढो ॥ बूढोय नईइ देवीए ॥ १२२ ॥

साकेत नगरनो आधिपति देवरति नामे राजा राज्यना सुखथी भ्रष्ट थयो, पांगलाने माटे ते नदीमां पडयो अने ते नदीरूप देवीने विषे बुडयो ॥ १२२ ॥

सोय सरी दुरिय दरी ॥ कवड कुडी महिलिया किलेस करी ॥
वयर विरोयण अरणी ॥ दुरक खणी सुरकपडिवरका ॥ १२३ ॥

शोकनी नदी अने दुरितनी गुफा, कपटनुं घर अने क्लेशनी करनारी अने वैररूपी अग्निने सलगाववाने अरणीना लाकडा समान अने दुःखनी खाण अने सुखनी प्रतिपक्षी स्त्री छे ॥ १२३ ॥

अमुणिय मण परिकम्मो ॥ सम्मं को नाम नासिउं तरइ ॥
वम्मह सर पसरोहे ॥ दिट्ठिछोहेमयच्छीणं ॥ १२४ ॥

कामना बाणनो विस्तार छे जेमां एवां मृगाक्षीओ (स्त्रीओ) नां दृष्टिनां कटाक्षने विषे अणजाण्यो छे मननो निग्रह जेनो एवो कयो पुरुष सम्यक् प्रकारे नाशी जवाने समर्थ थाय छे ॥ १२४ ॥

घण मालाउ व दुरुन्न ॥ मंत सुपउहराउ वड्ढंति ॥

मोहविसं महिलाउ ॥ आलक्क विसं व पुरिसस्स ॥ १२५ ॥

अतिशय उंचां अने घणां वादलां वाली एवी मेघमाला जेम हडकवाना विषने वधारे तेम अतिशय उंचा पयोधर (स्तन) वाळी स्त्रीओ पुरुषना मोह विषने वधारे छे ॥ १२५ ॥

परिहरसु तउ तासिं ॥ दिठिं दिठीविसस्स व अहिस्स ॥

जं रमणि नयण बाणा ॥ चरित्त पाणे विणासंति ॥ १२६ ॥

ते माटे ते स्त्रीओनी दृष्टिने दृष्टिविष सर्पनी दृष्टिनी पेठे तमे त्याग करो; केमके स्त्रीनां नेत्र बाण चारित्ररूपी प्राणनो नाश करेछे ॥ १२६ ॥

महिला संसग्गीए ॥ अग्गी इव जं च अप्पसारस्स ॥

मयणं व मणो मुणिणो ॥ विहंत सिग्घं चिय विलाइ ॥ १२७ ॥

स्त्रीनी संगतिथी अल्प सत्ववाला मुनिनुं पण मन अग्निथी जिम मीण ओगली जाय तेनी पेठे सत्वर खरेखर गली जाय छे ॥ १२७ ॥

नी पेठे

जइवि परिचत्त संगो ॥ तव तणु यंगो तहावि परिवमइ ॥
महिला संसग्गीए ॥ कोसा जवणू सियव्व रिसी ॥ १२८ ॥

जो पण स्त्रीना सर्व संगने त्याग करनार अने तपवडे करीने पातला अंगवालो होय तोपण कोशाना घरने विषे वसनार सिंह गुफावासी ऋषि स्त्रीना संगथी चलीजायछे। १२८ ॥

सिंगार तरंगाए ॥ विलास वेलाए जोव्वण जलाए ॥
के के जयंमि पुरिसा ॥ नारि नईए न बुड्डंति ॥ १२९ ॥

शृंगार रुपी कल्लोलो छे जेमां अने विलास रुपी भरती छे जेमां जुवानी रुपी पाणी छे जेमां एवी स्त्री रुपी नदीने विषे जगतने विषे कया कया पुरुषो नथी डुबता ॥ १२९ ॥

विसय जलं मोह कलं ॥ विलास बिब्बोय जलयरा इसं ॥
मय मयरं उत्तिन्ना ॥ तारुन्नमहन्नवं धीरा ॥ १३० ॥

धीर पुरुषो, विषय रुप जलवाला, अने मोह रुपी कादववाला, अने विलास अने अभिमान रुपी जलचर वाला, मद रुपी मगरवाला, एवा जुवानी रुपी समुद्रने तरी गया. ॥ १३० ॥

अप्भिंतर बाहिरए ॥ सव्वे संगे तुमं विवज्जेहिं ॥
कय कारिय णुमईहिं ॥ कायमणो वाय जोगेहिं ॥ १३१ ॥

करवुं, कराववुं अने अनुमोदवा रुप त्रण करणवडे अने मन, वचन, कायाना जोगोवडे अभ्यंतर अने वाहिर एवा सर्वे संगोने तुं त्याग कर. ॥ १३१ ॥

संग निमित्तं मारई ॥ जणइ अलियं करेइ चोरिक्कं ॥
सेवइ मेहुण मिच्छं ॥ अप्परिमाणं कुणइ जीवो ॥ १३२ ॥

ममंग पडे संगना हेतुथी जीवने मारे, जूठुं बोले, चोरी करे, मैथुन सेवे, अने जीव इच्छानुं अपरिमाण करे (परिग्रहनुं परिमाण न करे) ॥ १३२ ॥

संगो महा जयं जं ॥ विहेम्मि सावएण संजेणं ॥
पुत्तेण हिए अत्थंमि ॥ मुणिवइ कुंचिएण जहा ॥ १३३ ॥

संग मोटा भयनुं कारण छे, केमके पुत्रे द्रव्य चोरे छते श्रावक कुंचिक शेठे मुनिपती रुषीने वहेमथी पीडा उपजावी ॥ १३३ ॥

सव्वग्गंथ विमुक्को ॥ सीइभूओ पसंतचित्तो य ॥
जं पावइ मुत्तिसुहं ॥ न चक्कवट्टी वि तं लहइ ॥ १३४ ॥

बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रहथी मुक्त, शीतल परिणामवालो, अने उपशांत चित्तवालो एवो पुरुष जेवुं निर्लोभपणानुं सुख पामे ते सुख चक्रवर्ति पण न पामे ॥ १३४ ॥

निस्सल्लस्सेह महव्वयाइं ॥ अक्खंम निव्वण गुणाइं ॥
उवहमंति य ताइं ॥ नियाण सल्लेण मुणिणो वि ॥ १३५ ॥

शल्य रहित पुरुषने महाव्रतो अखंड होय अने अतिचार रहित होय; ते महाव्रतोने नियाण शल्यवडे मुनीयो पण उपघात पमाडे छे ॥ १३५ ॥

अह राग दोस गप्भंच ॥ मोहगप्भं च तं भवे तिविहं ॥
धम्मठ्ठं हीण कुलाइं ॥ पच्छणं मोह गप्भं तं ॥ १३६ ॥

ते नियाण शल्य राग गर्भित, द्वेष गर्भित अने मोह गर्भित ए रीते त्रण प्रकार थाय छे; धर्मने काजे हीण कुलादिकनी प्रार्थना करे ते मोह गर्भित नियाणुं समजवुं. ॥ १३६ ॥

रागेण गंगदत्तो ॥ दोसेण विस्सभूइमाईया ॥
मोहेण चंडपिंगल ॥ माईया हुंति दिठ्ठंता ॥ १३७ ॥

राग नियाणाने माटे गंगदत्त, अने द्वेष नियाणाने माटे विश्वभूति (महावीर स्वामिनो जीव) अने मोह नियाणे चंडपिंगल आदि दृष्टांत प्रसिद्ध छे ॥ १३७ ॥

अगणिय जो मोरक सुहं ॥ कुणइ नियाणं असार सुह हेउं ॥
सो कायमणि कएणं ॥ वेरुलिय मणिं पणासेइ ॥ १३८ ॥

जे मोक्षना सुखने अवगणीने असार सुखनुं कारण एवुं नियाणुं करे ते पुरुष काचमणिने माटे वैडूर्य रत्नने नाश करे छे ॥ १३८ ॥

डुक्खक्खय कम्मक्खय ॥ समाहि मरणं च बोहिलाभो य ॥
एयं पत्थेयव्वं ॥ न पत्थणिज्जं तओ अन्नं ॥ १३९ ॥

दुःखक्षय अने कर्मक्षय समाधि मरण अने बोधी बीजनो लाभ एटलां वानांनी प्रार्थना करवी एटले इ-च्छवां तेथी बीजुं कंइ मागवुं नहि ॥ १३९ ॥

उज्झिय नियाण सल्लो ॥ निसिभत्त नियत्ति समिय गुत्तीहिं ॥
पंच महव्वय रक्खं ॥ कय सिव सुक्खं पसाहेइ ॥ १४० ॥

नियाण शल्यने त्याग करीने रात्रि भोजनथी निवृत्ति करी पांच समिति ने त्रण गुप्तिए करीने सहित पंच महाव्रतनी रक्षा करे ते मोक्ष सुखने साधे छे. ॥ १४० ॥

इंदिय विसय पसत्ता ॥ पडंति संसार सायरे जीवा ॥
पक्खिव छिन्न पक्खा ॥ सुसील गुण पेहुण विहुणा ॥ १४१ ॥

इंद्रियोना विषयमां आसक्त थएला जीवो सुशील गुण रुप पीछां विनाना अने छेदाएली पांखवाला पक्षी-ओनी पेठे संसार सागरमां पडे छे ॥ १४१ ॥

न लहइ जहा लिहंतो ॥ सुहिल्लियं अठियं रसं सुणउ ॥
सोसइ तालुय रसियं ॥ विलिहंतो मन्नए सोरकं ॥ १४२ ॥

जेम श्वान (कुतरो) हाडकाना रसने सुखे सुखे चाटतो थको खरुं सुख नथी पामतो अने ताळवानो रस शोषवेछे पण ते चाटतो सुख माने छे ॥ १४२ ॥

महिलाय संग सेवि ॥ न लहइ किंचिवि सुहं तहा पुरिसो ॥
सो मन्नए वराउ ॥ सय काय परिस्समं सुस्कं ॥ १४३ ॥

तेम स्त्रीओना संगने सेवनार पुरुष कंइ पण सुख पामतो नथी तोपण पोताना शरीरनुं परिश्रम थाय छे तेनेज ते बापडो सुख माने छे ॥ १४३ ॥

सुठु विमग्गिज्जंतो ॥ कछवि केलीइ नछि जह सारो ॥
इंदिय विसएसु तहा ॥ नछि सुहं सुठु वि गविठं ॥ १४४ ॥

घणुंए मागतां छतां केलना गर्भमां कोइ ठेकाणे सार नथी तेम इंद्रियोना विषयोमां घणुंए शोध्युं छतुं कंइ सुख नथी मलतुं ॥ १४४ ॥

सोएण पवसिय पिया ॥ चरकूराएण माहुरो वणिउ ॥
घाणेण राय पुत्तो ॥ निहउ जीहाइ सोदासो ॥ १४५ ॥

श्रोत इंद्रिवडे परदेश गएला सार्थवाहनी स्त्री, चक्षुना रागवडे मथुरानो वाणियो, घ्राणने वशे (गंध प्रिय) राजपुत्र अने जीव्हाने रसे सोदास राजा हणायो ॥ १४५ ॥

फासिंदिएण दुठो ॥ नठो सोमालिया महीपालो ॥
एक्किक्केण विनिहया ॥ किं पुण जे पंचसु पसत्ता ॥ १४६ ॥

फरस इंद्रिवडे दुष्ट सोमालिकानो राजा नाश पाम्यो; अकेके विषये पण ए बधा नाश पाम्या तो जे पांचे इंद्रियमां आसक्त होय तेनुं शुं कहेवुं ॥ १४६ ॥

विसया विरक्को निवरूइ ॥ निरविरक्को तरइ दुत्तर नवोहं ॥
देवी दीव समागय ॥ भाउअगा दुन्नि दिठंता ॥
भाउअ जुयलं च नणियं च ॥ पाठांतरं ॥ १४७ ॥

विषयनी अपेक्षा करनारो माणस दुस्तर एवा भवसमुद्र मते पडे अने विषयथी निर्पेक्ष होय ते तरे; (आ उपर) रत्न द्विपनी देवीने मल्या वे भाइ १. जीनपालित २ जीन रक्षित तेनां दृष्टांत जाणवां अथवा वे भाइनुं द्रष्टांत कह्युं छे ॥ १४७ ॥

ठलिया अवय रकंता ॥ निरावयरका गया अविग्घेणं ॥
तम्हा पवयण सारे ॥ निरावयरकेण होयवं ॥ १४८ ॥

रागनी अपेक्षा कीधी ते छल्या अने जे निर्पेक्ष थया ते निर्विघ्नपणे ठामे पहोंच्या ते कारण माटे प्रव-
चनसारने विषे निपुण माणसे रागने विषे निर्पेक्ष थवुं ॥ १४८ ॥

विसए अवयक्खंता ॥ पडंति संसार सायरे घोरे ॥
विसएसु निराविक्खा ॥ तरंति संसार कंतारं ॥ १४९ ॥

विषयनी आसक्ति धरतां माणसो घोर संसार सागरने विषे पडे छे अने विषयमां निर्पेक्ष पुरुषो संसार रूपी अटवीने ओलंगी जाय छे ॥ १४९ ॥

ता धीर धिइ बलेणं ॥ दुद्दंते दमसु इंदिय मइंदे ॥
तेणुक्खय पडिवक्खो ॥ हराहि आराहणा पडागं ॥ १५० ॥

तेथी हे धीर पुरुष धीरज रुपी बलवडे करीने दुर्दांत एवा इंद्रिय रुप सिंहने दम; ने तेणे करीने अंत-
रंग वैरी रुप राग अने द्वेषनो क्षय कर्यो छे जेणे एवो तुं आराधना पताकाने ले ॥ १५० ॥

कोहाइण विवागं ॥ नाऊण य तेसि निग्गहेण गुणं ॥
निग्गिण्ह तेण सुपुरिस कसाय कलिणो पयत्तेण ॥ १५१ ॥

क्रोधादिकना विपाकने जाणीने अने तेना निग्रहवडे गुण जाणीने हे सुपुरुष! प्रयत्नवडे कषायरुपी क्लेशनो निग्रह कर ॥ १५१ ॥

जं अइ तिरकं डुरकं ॥ जं च सुहं नत्तिमं तिलोइए ॥
तं जाण कसायाणं ॥ वुद्धि रकय हेनयं सव्वं ॥ १५२ ॥

जे त्रण जगतने विषे अति तीव्र दुःख छे अने जे उत्तम सुख छे ते सर्व अनुक्रमे कषायनि वृद्धि अने क्षयनुं कारण समज ॥ १५२॥

कोहेण नंदमाई ॥ निहया माणेण फरसरामाई ॥
मायाए पंम रब्बा ॥ लोहेणं लोहणंदाइ ॥ १५३ ॥

क्रोधवडे नंद विगेरे, अने मानवडे फरशुरामादि, मायावडे पंडरज्ञा अने लोभवडे लोभनंदी विगेरे दुःख पाम्या ॥ १५३ ॥

इयनवएसामय पा, णएण ॥ पल्हायंमि चित्तंमि ॥
जाउ सुनिव्वुउ सो, पाउण व पाणियं तिसिउ ॥ १५४ ॥

आ उपदेश रुप अमृत पानवडे [illegible] चित्त विषे शीतळ थये छते जेम तरस्यो माणस पाणी मेळवीने निरांते बेसे तेम ते शिष्य अतिशे निवृत थयो छतो कहे छे ॥ १५४ ॥

इच्छामो अणुसट्ठिं भंते भव पंक तरण दढ लट्ठिं ॥
जं जह भत्तं तं तह ॥ करेमि विणयणउ भणइ ॥ १५५ ॥

हे भगवन् हुं भव रुपी कादव ओलंगवाने दृढ लाकडी समान तमारी शिक्षाने इच्छुं छुं; जे जेम आपे कह्युं ते तेम हुं करुं एम विनयथी नमेलो ते कहे छे ॥ १५५ ॥

जइ कहवि असुहकम्मो ॥ दएण देहंमि संभवे वियणा ॥
अहवा तएहाइया ॥ परीसहा से उदीरिज्जा ॥ १५६ ॥

जो कोइ प्रकारे अशुभ कर्मना उदये करीने शरीरने विषे वेदना अथवा तरश विगेरे परिसहो संभवे तेमने उदीरे ॥ १५६ ॥

निद्धं महुरं पल्हायणिज्जं ॥ हिययंगमं अणलियं च ॥
तो सेहावेयव्वो ॥ सो खवउ पसवंतेण ॥ १५७ ॥

स्निग्ध, मधुर, हरखनुं करनार, हृदयने गमतुं, अने साचुं वचन कहेता एवा आचार्ये (आराधक साधु) तेने सहन करे एम करवुं ॥ १५७ ॥

संभरसु सुयणुजं ॥ तं मज्झंमि चउव्विहस्स संघस्स ॥
वूढा महा पइन्ना ॥ अहयं आराहइस्सामि ॥ १५८ ॥

हे सत् पुरुष, तमे संभारी आपो के चतुर्विध संघना मध्ये मोटी प्रतिज्ञा मे करी ते हुं आराधीश ॥१५८॥

अरहंत सिद्ध केवली ॥ पच्चरकं सव्व संघ सक्खिस्स ॥
पच्चरकाणस्स कयस्स ॥ भंजणं नाम को कुणइ ॥ १५९ ॥

अरिहंत, सिद्ध, केवली अने सर्व संघनी साखे प्रत्यक्ष जे पच्चख्खाण कर्युं तेनुं भागवुं कोण करे ॥

भालुंकिए करुणं ॥ खज्जंतो घोर वेयणा तो वि ॥
आराहणं पडिवन्नो ॥ झाणेण अवंति सुकुमालो ॥ १६० ॥

शियालणीए अतिशय खवातो, घोर वेदना पामतो पण ध्यानवडे अवंति सुकुमाल आराधना पाम्यो ॥

मुग्गिल्ल गिरिंमि सुकोसलो वि ॥ सिद्धत्थ दइयत्त भयवं ॥
वग्घीए खज्जंतो ॥ पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥ १६१ ॥

चित्रकुट पर्वतने विषे सिधार्थ (मोक्ष) ते छे प्यारुं जेने एवो भगवान् सुकोसल पण वाघणवडे खवातो मोक्ष प्रत्ये पाम्यो ॥ १६१ ॥

गुट्ठे पाओव गओ ॥ सुबंधुणा गोमए पलिवियंमि ॥
डज्झंतो चाणक्को ॥ पडिवन्नो उत्तमं अट्ठं ॥ १६२ ॥

गोकुलमां पादोपगम अणशणवाला सुबंधु मंत्रिए छाणां सलगावे छते दाझतो एवो चाणाक्य ते उत्तम अर्थने (आराधकपणाने) पाम्यो ॥ १६२ ॥

अवलंबिऊण सत्तं तुमंपि ता धीर धीरयं कुणसु ॥
ज्ञावे सु य नेगुन्नं ॥ संसार महा समुद्दस्स ॥ १६३ ॥

ते माटे सत्वने अवलंबीने तुं पण हे धीर पुरुष धीरजपणुं धर अने संसार महा समुद्रनुं निर्गुणपणुं भाव ॥

जंम जरा मरण जलो ॥ अणाइमं वसण सावया इणो ॥
जीवाण डुरक हेउं ॥ कठं रुद्दो ज्ञव समुद्दो ॥ १६४ ॥

जन्म, जरा अने मरण रुपी पाणी छे जेमां, एवो, अनादि अने दुःखरुपी श्वापदवडे व्याप्त अने जीवोने दुःखनो हेतु एवो भव समुद्र ते घणोज कष्टनो करनारो अने रुद्र छे ॥ १६४ ॥

धन्नोहं जेण मए ॥ अणोर पारंमि ज्ञव समुद्दंमि ॥
ज्ञव सय सहस्स डुल्लहं ॥ लद्धं सद्धम्म जाण मिणं ॥ १६५ ॥

हुं धन्य छुं, जे कारण माटे में अपार भव समुद्रने विषे लाखो भवे पण पामवाने दुर्लभ एवुं सद्धर्मरुपी आ झाझ (वहाण) पाम्युं ॥ १६५ ॥

एयस्स पन्नावेणं ॥ पालिज्ञं तस्स सइ पयत्तेणं ॥
जम्मं तरेवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोगच्चं ॥ १६६ ॥

आनाप्रभाववडे

स्मृति अने प्रयत्नवडे पालेला जीवो जन्मांतरने विषे पण दुःख अने दारिद्र न पामे ॥ १६६ ॥

चिंतामणी अन्नवो ॥ एय मन्नवोय कप्प रुक्कत्ति ॥
एसो परमो मंतो ॥ एयं परमामयं जन्न ॥ १६७ ॥

आ धर्म अपूर्व चिंतामणी रत्न छे, अने वली आ अपूर्व कल्पवृक्ष छे, आ परम मंत्र छे, वली अहिंआं आ धर्म परम अमृत समान छे ॥ १६७ ॥

अह मणि मंदिर सुंदर ॥ फुरंत जिणगुण निरंजणुज्जोत्ते ॥
पंच नमुक्कार समे ॥ पाणे पणओ विसज्जेइ ॥ १६८ ॥

हवे मणिमय मंदिर अने सुंदर स्फुरायमान जिनगुणरुप निरंजन उद्योत छे जेने विषे एवो ते विनयवंत थको पंच नमस्कार सहित प्राणोने त्याग करे ॥ १६८ ॥

परिणाम विसुद्धीए ॥ सोहम्मे सुरवरो महिद्धीए ॥
आराहिऊण जायइ ॥ भत्त परिन्नं जहन्नं सो ॥ १६९ ॥

ते पुरुष भक्त परिज्ञाने जघन्य थकी आराधीने परिणामनी विशुद्धिवडे सौधर्म देवलोकने विषे महर्द्धिक देवता थाय ॥ १६९ ॥

उक्कोसेण गिहत्थो ॥ अच्चुय कप्पंमि जायइ अमरो ॥
निव्वाण सुहं पावइ ॥ साहू सव्वठ सिद्धिं वा ॥ १७० ॥
उत्कृष्टपणे भक्त परिज्ञा आराधीने गृहस्थ अच्युत नामना बारमा देवलोकने विषे देवता थाय अने जो साधु होय तो उत्कृष्ट मोक्षनुं सुख पामे अथवा तो सर्वार्थ सिद्धने विषे जाय ॥ १७० ॥
इय जोइसर जिणवीर ॥ भद्द भणियाणुस्सरिणी मिणमो ॥
भत्तपरिन्नं धन्ना ॥ पढंति भावंति सेवंति ॥ १७१ ॥
ए रीते योगीश्वर श्री जिन वीरस्वामि अने भद्र एवा तिर्थंकर देवे भाषेलाने अनुसारे आ भक्त परिज्ञा पयन्नो जेओ भणेछे, भावेछे अने सेवछे तेओ धन्य छे ॥ १७१ ॥
सत्तरिसयं जिणाणं व ॥ गाहाणं समयखित्त पसत्तं ॥
आराहंतो विहिणा ॥ सासय सोक्खं लहइ मोक्खं ॥ १७२ ॥
मनुष्य क्षेत्रने विषे [illegible] एकसो सित्तेर तिर्थंकरोनो पेठे एकसो सित्तेर गाथाओ कही छे; तेने विधिपूर्वक आराधन करतो शाश्वतुं सुख जे मोक्ष ते प्रत्ये पामे ॥ १७२ ॥

॥ इति श्री भत्त परिन्ना सम्मत्ता. ॥

चउसरण पयन्नो.

सावज्जजोग विरई, उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ति ॥
खलियस्स निंदणा वण, तिगिछ गुण धारणा चेव ॥ १ ॥

पाप व्यापारथी निवर्तवा रुप सामायक नामे पहेलुं आवश्यक, चोवीस तिर्थंकरना गुणानुं उत्कितन करवारुप चउविसथ्थो नामनुं बीजुं आवश्यक, गुणवंत गुरुनी वंदना रुप वंदनक नामनु त्रीजु आवश्यक, लागेला अतिचार रुप दोषनी निंदारुप प्रतिक्रमण नामनुं चोथु आवश्यक, भाव घा एटले आत्माने भारे दुषण लागेलुं तेने मटाडवा रुप काउसग्ग नामनुं पांचमुं आवश्यक, अने गुणने धारण करवा रुप पच्चखाण नामनुं छठुं आवश्यक. ए छ आवश्यक निश्चे करी कहेवायछे ॥ १ ॥

चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इहयं ॥
सावज्जेयर—जोगाण, वज्जणा—सेवणत्तओ ॥ २ ॥

आ जिनशासनमां सामायकवडे करी निश्चे चारित्रनी विशुद्धि कराय छे, ते सावद्य योगने त्याग करवाथी अने निर्वद्य योगने सेववाथी थाय छे ॥ २ ॥

दंसणयार विसोही, चउवीसायत्थएण किज्जइ य ॥
अच्चप्पुअ गुण कित्तण, रूवेणं जिणवरिंदाणं ॥ ३ ॥

दर्शनाचारनी विशुद्धि चउविसथ्था (लोगस्स) वडे कराय छे, ते जिनेश्वर भगवानोना अति अद्भूत गुणना किर्तनरुप चोविसे जिननी स्तुतिवडे थायछे ॥ ३ ॥

नाणाइआउ गुणा, तस्संपन्न पडिवत्तिकरणाउ ॥
वंदण एणं विहिणा, कीरइ सोहीउ तेसिं तु ॥४ ॥

ज्ञानादिक जे गुणो तेवडे करी सहित गुरु महाराजने विधिपुर्वक वंदन करवारुप, त्रीजा वंदन नामना आवश्यके ज्ञानादिक गुणोनी शुद्धि कराय छे ॥ ४ ॥

खलिअस्सय तेसिं पुणो, विहिणा जं निंदणाइ पडिक्कमणं ॥
तेण पडिक्कमणेणं, तेसिं पि य कीरए सोही ॥ ५ ॥

वली ते ज्ञानादिकनी आशातनानी निंदादिक विधिवडे करवी ते प्रतिक्रमण कहेवाय, ते प्रतिक्रमणवडे ते ज्ञानादिक गुणोनी शुद्धि करायछे ॥ ५ ॥

चरणाइयाइयाणं, जहक्कमं वण तिगिच्छ रूवेणं ॥
पडिक्कमणा सुद्धाणं, सोही तह काउस्सग्गेणं ॥ ६ ॥

चारित्रादिकना अतिचारोनी प्रतिक्रमणवडे शुद्धि न थई होय तेमनो गुमडाना ओसड सरखा अनुक्रमे आवेला पांचमा काउसग्ग नामना आवश्यकवडे शुद्धि थाय छे ॥ ६ ॥

गुणधारण रूवेणं, पच्चक्काणेण तवइआरस्स ॥
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहिवि कीरए सोही ॥ ७ ॥

गुणना धारण करवा रुप पच्चखाणे करी तपना अतिचारनी अने वळी विर्याचारनी सर्व आवश्यके करी शुद्धि कराय छे ॥ ७ ॥

गय वसह सीह अभिसेअ, दाम ससी दिणयरं झयं कुंभं ॥
पउमसर सागर विमाण, भवण रयणुच्चय सिहिं च ॥ ८ ॥

हाथी, वृषभ, सिंह, अभिषेक, माळा, चंद्रमा, सूर्य, धजा, कळस, पद्मसरोवर, सागर, (देवगतिमांथी आवेला तिर्थकरोनी माता) विमान, अने (नरकमांथी आवेला तिर्थकरोनी माता) भवन देखे, रत्ननो ढगलो अने अग्नि, ए चउद स्वप्न सर्व तिर्थकरोनी माता तेमने गर्भमां आवतां देखे ॥ ८ ॥

अमरिंद नरिंद मुणिंद, वंदिअं वंदिउं महावीरं ॥
कुसलाणुबंधि बंधुर, मज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ ९ ॥

देवताना इंद्र, चक्रवर्ति राजा, अने मुनिश्वरोए वांदेला एवा महावीरस्वामिने वांदीने मोक्षने पमाडनार सुंदर चउसरण नामनुं अध्ययन कहीश ॥ ९ ॥

चउसरण गमण दुक्कड, गरिहा सुकडाणु मोयणा चेव ॥

एस गणो अणवरयं, कायव्वो कुसलहेउत्ति ॥ १० ॥

चार सरण करवां, पाप कार्योनी निंदा करवी, अने निश्चे सुकृतनी अनुमोदना करवी आ त्रण वस्तु मोक्षनुं कारण छे माटे निरंतर करवी ॥ १० ॥

अरिहंत सिद्ध साहू, केवलिकहिउ सुहावहो धम्मो ॥

एए चउरो चउगइ, हरणा सरणं लहइ धन्नो ॥ ११ ॥

अरिहंत, सिद्ध, साधु, अने केवळीए कहेलो सुख आपनार धर्म, आ चार शरण छे ते चार गतिने नाश करनार छे अने ते भाग्यशाळी पुरुष पामेछे ॥ ११ ॥

अहसो जिणभत्ति भरु, च्छरंत रोमंच कंचुअ करालो ॥

पहरिसपणउ म्मीसं, सीसंमि कयंजली भणइ ॥ १२ ॥

हवे ते पुरुष तिर्थंकरनी भक्तिना समुहे करी उछळतां रुवांटारुप बख्तरे करी भयंकर तेवो घणा हरख अने स्नेह सहित मस्तकने विषे बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कहे. ॥ १२ ॥

रागद्दोसारीणं, हंता कम्मट्ठगाइ अरिहंता ॥
विसय कसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥

राग अने द्वेषरुप वैरीओना हणनार, अने आठ कर्मादिक शत्रुना हणनार, विषय कषायादिक वैरीओना हणनार एवा अरिहंत भगवान मने शरण हो. ॥ १३ ॥

रायसिरि मवकसित्ता, तव चरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ॥
केवल सिरि मरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १४ ॥

राज्य लक्ष्मिने त्याग करीने दुष्कर तप अने चारित्रने सेवीने केवळ ज्ञान रुप लक्ष्मिने योग्य एवा अरिहंतो मने शरण हो ॥ १४ ॥

थुइ वंदण मरहंता, अमरिंद नरिंद पूअमरहंता ॥
सासय सुह मरहंता, अरिहंता हुंतु मम सरणं ॥ १५ ॥

स्तुति अने वंदन करवाने योग्य एवा, इंद्र अने चक्रवर्तिनी पुजाने योग्य एवा, शाश्वत सुख पामवाने योग्य एवा अरिहंतो मने शरण हो ॥ १५ ॥

परमणगयं मुणंता, जोइंद महंद झाण मरहंता ॥
धम्मकहं अरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १६ ॥

बीजाना मनमां रहेली वातने जाणनारा, अने योगिश्वरने महेंद्रने ध्यान करवा योग्य वळी धर्म कथाने कहेवा योग्य एवा अरिहंत भगवान मने शरण हो ॥ १६ ॥

सव्वजिआण महिंसा, अरहंता सच्चवयण मरहंता ॥
बंभव्वय मरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १७ ॥

सर्व जीवोनी दयापाळवी तेने योग्य, सत्य वचनने योग्य, (वळी) ब्रह्मचर्य पाळवाने योग्य एवा अरिहंतो मने शरण हो ॥ १७ ॥

उसरणमवसरित्ता, चउत्तीसं अइसए निसेवित्ता ॥
धम्मकहंच कहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १८ ॥

समवसरणमां बेशीने चोत्रीस अतिशये करीने सहित धर्म कथाने कहेता एवा अरिहंतो मने शरण हो ॥ १८ ॥

एगाइ गिरा णेगे, संदेहे देहिणं समं छित्ता ॥
तिहुअण मणु सासंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १९ ॥

एक वचने करी प्राणीओना अनेक संदेहोने एक काळे छेदी नाखता अने त्रण जगतने शिक्षा (उपदेश) आपता एवा अरिहंत भगवान मने शरण हो. ॥ १९ ॥

वयणा मएण जुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ॥
जिअलोअ मुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ २० ॥

(पोताना) वचनामृतवडे जगतने शांति पमाडता, अने गुणोमां स्थापता, (वळी) जीव लोकनो उद्धार करता एवा अरिहंत मने शरण हो ॥ २० ॥

अच्चब्भुअ गुणवंते, नियजस ससहर पहासिअ दिअंते ॥
नियय मणाइ अणंते, पडिवन्नो सरणमरिहंते ॥ २१ ॥

अति अद्भूत गुणवाळा, अने पोताना यशरुप चंद्रवडे सर्व दिशाओना अंतने जेमने शोभाव्या छे, एवा शाश्वत अनादि अनंत एवा अरिहंतोने शरणपणे मे अंगिकार कर्या. ॥ २१ ॥

उज्झिय जर मरणाणं, समत्त दुक्कत्त सत्त सरणाणं ॥
तिहुयण जण सुहयाणं, अरिहंताणं नमो ताणं ॥ २२ ॥

तज्यां छे जरा अने मरण जेमणे, अने वधा दुःखथी पीडाएला प्राणीओने शरणभुत एवा, अने त्रण जगतना लोकने सुख आपनार एवा ते अरिहंतोने (म्हारो) नमस्कार हो ॥ २२ ॥

अरिहंत सरण मल सुद्धि, लद्ध सुविसुद्ध सिद्ध बहुमाणो ॥
पणयसिर रइय कर कमल, सेहरो सहरिसं भणइ ॥ २३ ॥

अरिहंतना शरणथी कर्मरुप मेलनी शुद्धिए पाम्युं छे अति शुद्ध सिद्धमां बहु मान जेणे एवो, अने तेथी नमेला मस्तकउपर कर्यो छे हस्तरुप कमळनो दोडो जेणे अर्थात् मस्तके अंजळी करी छे जेणे एवो ह-ळवा कर्मि जीव हर्ष सहित सिद्धनुं शरण कहे ॥ २३ ॥

कम्मठक्खय सिद्धा, साहाविअ नाण दंसण समिद्धा ॥
सव्वठ लद्धि सिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ २४ ॥

आठ कर्मनो क्षय करीने सिद्ध थएला, अने स्वभाविक ज्ञान दर्शननी समृद्धिवाळा वळी सर्व अर्थनी लब्धिओ सिद्ध थइ छे जेमने ते सिद्धो मने शरण हो ॥ २४ ॥

तिअलोअ मत्थयत्था, परम पयत्था अचिंत सामत्था ॥
मंगल सिद्ध पयत्था, सिद्धा सरणं सुह पसत्था ॥ २५ ॥

त्रण भुवनना मथाळे रहेला, अने परमपद एटले मोक्षमां रहेला, वळी अचिंत्य सामर्थ्यवाला, अने मंग-ळभूत सिद्ध पदमां रहेनार, अने अनंत सुखे करी प्रशस्त एवा सिद्धो मने शरण हो ॥ २५ ॥

मूलुक्खयपडिवक्खा, अमूढलक्खा सजोगिपच्चक्खा ॥
साहाविअत्तसुक्खा, सिद्धा सरणं परम मुक्खा ॥ २६ ॥

मूळथी उखाडी नाख्या छे राग द्वेष रुप शत्रु जेमणे अने अमूढ लक्षवाळा, वळी केवळीओ जेमने देखी

शकेछे एवा, स्वाभाविक सुख जेमणे ग्रहण कर्युं छे एवा उत्कृष्ट मोक्षवाळा सिद्धो (मने) शरण हो. ॥२६॥

परिपीलिअ परिणीआ, समग्ग झाणग्गि दड्ढ भव बीआ ॥
जोइसर सरणीआ, सिद्धा सरणं समरणीया ॥ २७ ॥

रागादिक शत्रुओनो तिरस्कार कर्यो छे जेमणे एवा वळी समग्र ध्यानरूप अग्निए बाळ्युं छे भवनुं बीज जेमणे एवा अने योगिश्वरोए आश्रय करवा योग्य अने भव्य प्राणीओए स्मरण करवा योग्य एवा सिद्धो मने शरण हो ॥ २७ ॥

पाविअ परमाणंदा, गुणनीस्संदा विदीन्न भवकंदा ॥
लहुई कय रविचंदा, सिद्धा सरणं खविअ दंदा ॥ २८ ॥

पमाडयो छे आनंद जेमणे, अने गुणनो सार छे जेमां, वळी नाश कर्यो छे भवरूप कंद जेमणे, अने केवळज्ञानना प्रकाशवडे चंद्र अने सूर्यने थोडा प्रभाववाळा करी दीधा छे, वळी युद्ध आदि क्लेशनो नाश कर्यो छे जेमणे एवा सिद्धो मने शरण हो ॥ २८ ॥

उवलद्ध परम बंभा, दुल्लहलंभा विमुक्क संरंभा ॥
भुवण घर धरण खंभा, सिद्धा सरणं निरारंभा ॥ २९ ॥

पाम्युं छे उत्कृष्ट ज्ञान जेमने एवा, वळी मोक्षरूप दुर्लभ लाभ मेळव्यो छे जेमणे एवा, मुक्या छे अनेक

प्रकारना समारंभ जेमणे एवा, त्रण भूवन रुप घरने धारण करवामां स्तंभ समान, अने वळी आरंभ रहित, एवा सिद्धो मने शरण हो ॥ २९ ॥

सिद्ध सरणेण नयवंभहेउ, साहु गुण जणिअ अणुराओ ॥
मेइणी मिलंत सुपसत्थ, मत्थओ तत्थिमं भणइ ॥ ३० ॥

सिद्धना शरणवडे नय अने बार अंगरूप ब्रह्मना कारणभूत साधुना गुणोनो उपज्यो छे अनुराग जेने, एवो भव्य प्राणी पृथ्वीने अडक्युं छे अति प्रशस्य मस्तक जेनुं एवो थइ सां आ रीते कहे ॥ ३० ॥

जिअ लोअ बंधुणो कुगइ, सिंधुणो पारगा महाभागा ॥
नाणाइ एहिं सिवसुक्ख, साहगा साहुणो सरणं ॥ ३१ ॥

जीवलोकना बंधु अने कुगति समुद्रना पार पामनार महा भाग्यवाळा एवा, अने ज्ञानादिके करी मोक्ष सुखना साधनार साधुओ (मने) शरण हो ॥ ३१ ॥

केवलीणो परमोही, विउलमई सुअहरा जिणमयंमि ॥
आयरिय उवज्झाया, ते सव्वे साहुणो सरणं ॥ ३२ ॥

केवळीओ, परमावधिज्ञानवाळा, विपुलमति मनःपर्यवज्ञानि, श्रुतधर तेमज जीनमतने विषे रहेला आचार्यो अने उपाध्यायो ते सर्वे साधुओ मने शरण हो ॥ ३२ ॥

चउदस दस नव पुव्वी, दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ ॥
जिणकप्पा हालंदिअ, परिहारविसुद्धि साहु अ ॥ ३३ ॥

चउद पूर्वि, दस पूर्वि अने नव पूर्वि, अने वळी बार अंग धरनार, अगियार अंग धरनार, जिनकल्पि, यथालंदि, परिहारविशुद्धि चारीत्रवाला एवा साधुओ ॥ ३३ ॥

खीरासव महु आसव, संभिन्न सोअ कुठ बुद्धिआ ॥
चारण वेउव्वि पयाणु, सारिणो साहुणो सरणं ॥ ३४ ॥

क्षीराश्रव अने मध्वाश्रव लब्धिवाळा, संभिन्न श्रोत लब्धिवाळा अने कोष्ट बुद्धिवाळा, चारण मुनियो, वैक्रिय लब्धिवाळा अने पदानुसारिलब्धिवाळा साधुओ मने शरण हो ॥ ३४ ॥

उज्झिअ वइर विरोहा, निच्चमदोहा पसंत मुहसोहा ॥
अभिमय गुण संदोहा, हयमोहा साहुणो सरणं ॥ ३५ ॥

तज्या छे वैर विरोध जेमणे, हमेशां अद्रोहि (शांत) अतिशय शांत, मुखनी शोभावाळा, बहु मान कर्युं छे गुणना समुहनु जेमणे एवा, अने हण्यों छे मोह जेमणे एवा साधुओ (मने) शरण हो. ॥ ३५ ॥

खंडिअ सिणेह दामा, अकामधामा निकामसुह कामा ॥
सुपुरिस मणाभिरामा, आयारामा मुणी सरणं ॥ ३६ ॥

तोड्युं छे स्नेहरुप बंधन ते जेमणे, निर्विकारी स्थानमां रहेनार, निर्विकार सुखना कामी, सत्पुरुषोना मनने आनंद करनार अने आत्मामां रमनार मुनिओ मने शरण हो. ॥ ३६ ॥

मिल्हिअ विसय कसाया, चत्तिअ घर घरणि संग सुहसाया ॥
अकलिअ हरिस विसाया, साहू सरणं गय पमाया ॥ ३७ ॥

दूर कर्यो छे विषय अने कषाय ते जेमणे, त्याग कर्यो छे घर अने स्त्रीना संगना सुखनो स्वाद जेमणे, वळी नथी हर्ष अने नथी शोक ते जेमने एवा अने गयो छे प्रमाद जेमनो एवा साधुओ मने शरण हो.।३७।

हिंसाइ दोस सुन्ना, कय कारुन्ना सयंभुरुपन्ना ॥
अजरामर पह खुन्ना, साहु सरणं सुकय पुन्ना ॥ ३८ ॥

हिंसादिक दोषे करीने रहित, कर्यो छे करुणा भाव ते जेमणे, एवा स्वयंभु रमण समुद्र जेवी विस्तीर्ण बुद्धिवाला, जरा अने मरण रहित मोक्ष मार्गमां जनारा, अने अतिशे पुन्य कर्युं छे जेमणे एवा साधु मने सरण हो ॥ ३८ ॥

काम विडंबण चुक्का, कलिमल मुक्का विमुक्क चोरिक्का ॥
पावरय सुरय रिक्का, साहु गुण रयण चिच्चिका ॥ ३९ ॥

कामनी विडंबनाए करीने रहित, पापे करीने रहित, वळी चोरी जेमणे त्याग करी छे एवा, पापरुप

रजना कारण एवा, मैथुनथी रहित अने साधुना गुणरुप रत्ननी कांतिवाळा एवा मुनियो (मने) शरण हो.

साहुत्त सुठिआ जं, आयरियाई तओ ते साहू ॥

साहुत्तणिएण गहिआ, तम्हा ते साहुणो सरणं ॥ ४० ॥

जे माटे साधुपणामां विशेषे करीने रहेला एवा आचार्यादिक छे ते माटे तेओ पण साधु कहेवाय. साधु कहेवावडे तेमने ग्रहण कर्या ते माटे ते साधु (मने) शरण हो ॥ ४० ॥

पडिवन्न साहु सरणो, सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं ॥

पहरिस रोमंच पवंच, कंचुअंचिअतणु भणइ ॥ ४१ ॥

स्विकार्यु छे साधुनुं शरण जेणे एवो ते जीव, वळी पण जिन धर्मने शरण करीने अति हर्षथी थयेला रोमांचना विस्ताररुप बखतरे करी शोभायमान शरीरवाळो आ रीते कहे ॥ ४१ ॥

पवरसुकएवि पत्तं, पत्तेहिवि नवरि केहिवि न पत्तं ॥

तं केवलि पन्नत्तं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४२ ॥

अति उत्कृष्ट पुन्यवडे पामेलो, वळी केटलाक भाग्यवाळा पुरुषोए पण नहि पामेलो एवो केवळी भगवाने प्ररुपेलो ते धर्म तेने हुं शरणरुपे अंगिकार करुंछुं. ॥ ४२ ॥

पत्तेण अपत्तेणय, पत्ताणिय जेण नर सुर सुहाइं ॥
मुख्कसुहं पुण पत्तेण, नवरि धम्मो स मे सरणं ॥ ४३ ॥

जे धर्म पामे छते अने अणपामे पण जेणे माणस अने देवताना सुखोने मेळव्यां, पण मोक्षसुख तो वळी धर्म पामेलाएज मेळव्युं ते धर्म मारे शरण हो ॥ ४३ ॥

निद्दलिअ कलुस कम्मो, कय सुह जम्मो खलीकय अहम्मो ॥
पमुह परिणाम रम्मो, सरणं मे होउ जिणधम्मो ॥ ४४ ॥

अतिशे दल्यां छे मलीन कर्म जेणे, कर्यो छे शुभ जन्म जेणे, दूर कर्यो छे अधम जेणे, प्रथम अने परिणामे सुंदर एवो जिन धर्म मने शरण हो ॥ ४४ ॥

कालत्तएवि न मयं, जम्मण जरा मरण वाहि सय समयं ॥
अमयंव बहुमयं, जिणमयं च सरणं पवन्नोहं ॥ ४५ ॥

त्रण काळमां पण नहि नाश पामेलुं, अने जन्म, जरा, मरण अने सेंकडो गमे व्याधिनुं समावनार, अमृतनी पेठे घणाने इष्ट एवा जिन मतने हुं शरणरुपे अंगिकार करुंछुं ॥ ४५ ॥

पसमिअ कामप्पमोहं, दिठा दिठेसु न कलिय विरोहं ॥
सिव सुह फलय ममोहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४६ ॥

विशेषे शमाव्यो छे कामनो उन्माद जेणे, देखेला अने नहि देखेला पदार्थोमां नथी कर्यो विरोध जेणे, अने मोक्षना सुखरूप फळने आपनार एवा अमोघ एटले सफळ धर्मने शरणरूपे अंगिकार करुंछुं ॥ ४६ ॥

नरय गइ गमण रोहं, गुण संदोहं पवाइ निख्खोहं ॥
निहणिय वम्मह जोहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४७ ॥

नरक गति गमनने रोकनार, गुणनो समुह छे जेमां एवो, अन्यवादिवडे क्षोभ करवा योग्य नहि एवो, अने हण्यो छे कामरूप सुभट जेणे एवो धर्म शरणरूपे अंगिकार करुंछुं ॥ ४७ ॥

भासुर सुवन्न सुंदर, रयणालंकार गारव महग्घं ॥
निहिमिव दोगच्चहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥ ४८ ॥

देदीप्यमान, उत्तम वर्ण अने, सुंदर अलंकारनी, मोटाइए करीने महा मुल्यवाळो, निधाननी पेठे अज्ञानरूप दारिद्रने हणनार एवा जिनेश्वरोए उपदेशेला धर्मने हुं वांदुछुं ॥ ४८ ॥

चउसरण गमण संचिअ, सुचरिअ रोमंच अंचिअ सरिरो ॥
कय दुक्कड गरिहा असुह, कम्मख्खय कंखिरो भणइ ॥ ४९ ॥

आ चार शरण अंगिकार करवावडे एकठुं करेलुं जे सुकृत तेणे करी थएली विकस्वर रोमराजीए यु-

क्त छे शरीर जेनुं एवो, अने करेलां पापनी निंदाए करीने अशुभ कर्मना क्षयने इच्छतो एवो जीव (आ प्रमाणे) कहे ॥ ४९ ॥

इह त्तविअ मन्नत्तविअं, मिच्छत्त पवत्तणं जमहिगरणं ॥
जिण पवयण पडिकुट्ठं, दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥ ५० ॥

आ भवमां करेलुं अने परभवमां करेलुं मिथ्यात्वना प्रवर्तनरूप जे अधिकरण, जिनशाशनमां निषेधेलुं एवुं ते दुष्ट पाप तेने हुं गर्हुंछुं एटले गुरुनी साखे निंदुंछुं ॥ ५० ॥

मिच्छत्त तमंधेणं, अरिहंताइसुअवन्न वयणं जं ॥
अन्नाणेण विरइअं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५१ ॥

मिथ्यात्वरूप अंधाराए अंध थयेलाए अरिहंतादिकमां जे अवरणवाद, अज्ञाने करीने विशेषे कर्यो होय ते पापने हमणां हुं गर्हुंछुं निंदुंछुं ॥ ५१ ॥

सुअ धम्म संघ साहुसु, पावं पडिणीअयाइ जं रइअं ॥
अन्नेसु अ पावेसु, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५२ ॥

श्रुत आदि धर्म, संघ, अने साधुओमां शत्रुपणु जे पाप कर्युं होय ते, अने अन्य पापस्थानकोमां जे पाप लाग्युं होय ते पाप हमणां हुं गर्हुंछुं ॥ ५२ ॥

अन्नेसु अ जीवेसु, मित्ती करुणाइ गोअरेसु कयं ॥
परिआवणाइ दुःक्खं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५३ ॥

वीजा पण, मैत्री करुणादिकना विषय, एवा जीवोमां परितापनादिक दुःख उपजाव्युं होय ते पापने हुं हमणां निदुंछुं ॥ ५३ ॥

जं मण वय काएहिं, कय कारिअ अणुमईहिं आयरिअं ॥
धम्म विरुद्ध मसुद्धं, सव्वं गरिहामि तं पावं ॥ ५४ ॥

जे मन, वचन, अने कायाए करी करवा, कराववा, अने अनुमोदवावडे आचरेलुं एवुं धर्मथी विरुद्ध अने अशुद्ध एवुं सर्व पाप ते हुं निदुंछुं ॥ ५४ ॥

अहसो दुक्कड गरिहा, दलिअक्कम्मदुक्कम्मो फुडं भणइ ॥
सुकुमानुराय समुइन्न, पुन्नं पुलयंकुर करालो ॥ ५५ ॥

हवे दुष्कृतनी निंदाथी दळ्युं छे उत्कट पाप कर्म ते जेणे एवो, अने सुकृतनो जे राग तेथी थएली पवित्र विकस्वर रोम राजीए महित एवो, ते जीव प्रगट नीचे प्रमाणे कहे ॥ ५५ ॥

अरिहंतं अरिहंतेसु, जं च सिद्धत्तणं च सिद्धेसु ॥
आयारं आयरिए, उवज्झायत्तं उवज्झाए ॥ ५६ ॥

अरिहंतोने विषे अरिहंतपणुं, अने सिद्धोने विषे वळी जे सिद्धपणुं, आचार्यमां जे आचार, अने उपाध्यायमां उपाध्यायपणुं ॥ ५६ ॥

साहूण साहुचरिअं, देसविरइं च सावय जणाणं ॥
अणुमन्ने सवेसिं, सम्मत्तं सम्मदिठीणं ॥ ५७ ॥

साधुओनुं जे उत्तम चरित्र, अने श्रावक लोकोनुं देशविरतीपणुं, अने समकितदृष्टिनुं समकित ए सर्वने हुं अनुमोदुंछुं ॥ ५७ ॥

अहवा सवंवि अ विअ, राय वयणाणुसारि जं सुकमं ॥
कालत्तएवि तिविहं, अणुमोएमो तयं सवं ॥ ५८ ॥

अथवा वितराग वचनने अनुसारे जे सर्व सुकृत त्रणे काळमां (कर्युं होय) ते त्रणे प्रकारे (मन, वचन, ने कायाए करी) अनुमोदीए छीए ॥ ५८ ॥

सुह परिणामो निच्चं, चउ सरण गमाइ आयरं जीवो ॥
कुसल पयमीउ बंधइ, बद्धाउ सुहाणुबंधाउ ॥ ५९ ॥ ॥

निरंतर शुभ परिणामवाळो जीव चार सरणनी प्राप्ति आदिने आचरतो पुन्य प्रकृतिओने बांधेछे अने (अशुभ) बांधेलीने शुभ अनुबंधवाळी करेछे ॥ ५९ ॥

मंदणुभावा बद्धा, तिव्वणुभावा उ कुणइ ता चेव ॥
असुहाउ निरणुबंधाउ, कुणइ तीव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥

जे (शुभ) मंद रसवाळी बांधी होय तेनेज तिव्र रसवाळी करेछे, अने अशुभ (मंद रसवाळी) ने अनुबंध रहित करेछे, अने तिव्र रसवाळीने मंद रसवाळी करेछे ॥ ६० ॥

ता एयं कायव्वं, बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि ॥
होइ तिकालं सम्मं, असंकिलेसंमि सुकयफलं ॥ ६१ ॥

ते माटे पंडितोए हमेशां संक्लेशमां (रोगादि कारणमां) ए करवुं, असंक्लेशपणामां त्रण काळ रुडी पेरे कर्यु छतु सुकृत फळ (पुन्यानुबंधि पुन्य) वाळु थायछे ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो, न कउ चउरंगसरणमवि न कयं ॥
चउरंग भवछेउ, न कउ हा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

जेणे (दान, शियळ, तप, अने भावरूप) चार अंगवाळो जिनधर्म न कर्यो, जेणे (अरिहंतादि) चार प्रकारनुं शरण पण न कर्युं, तेमज जेणे चार गतिरूप संसारनो छेद न कर्यो, ते अरे ! मनुष्य जन्म हारी गयो ॥ ६२ ॥

इअ जीव पमाय महारि, वीर भद्दंतमेय मझयणं ॥
झाएसु तिसंझ मवंझ, कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

आ रीते हे जीव प्रमादरूपी मोटा शत्रुने जीतनार, मोक्ष पमाडनार, अने मोक्षना सुखोनुं अवंध्य कारणभूत एवा आ अध्ययननुं त्रण संध्याए ध्यान कर ॥ ६३ ॥

॥ इति श्री चतुःशरण प्रकीर्णकं समाप्तं ॥

इति श्रीमद् वीरभद्राचार्य कृत चतुःशरण प्रकीर्णकं समाप्त.

महा पच्चरक्खाण पयन्नो.

एस करेमि पणामं ॥ तिथ्थयराणं अणुत्तर गईणं ॥
सव्वेसिं च जिणाणं ॥ सिद्धाणं संजयाणंच ॥ १ ॥

आ हुं उत्कृष्ट मतिवाला तीर्थंकरोने अने सर्व जिनोने, सिद्धोने संयतो (साधुओ) ने नमस्कार करुंछुं

सव्व दुरक प्पहीणाणं ॥ सिद्धाणं अरहो नमो ॥
सद्दहे जिण पन्नत्तं ॥ पच्चरकाएमि पावगं ॥ २ ॥

सर्व दुःख रहित एवा सिद्धोने अने अरिहंतोने नमस्कार थाओ, जिनेश्वर भगवाने भाषेलुं सर्व सद्दहुं छुं, अने सर्व सावद्य पापना योग तेने पच्चख्खुंछुं ॥ २ ॥

जंकिंचि दुच्चरियं ॥ तमहं निंदामि सव्व भावेणं ॥
सामाईयं च तिविहं ॥ करेमि सव्वं निरागारं ॥ ३ ॥

जे कंइ पण मारुं आचरण माराथी थयुं होय ते हुं साचा भावथी निंदुंछुं, अने मन, वचन ने काया ए त्रण प्रकारे सर्व निरागार (आगार रहित) एवुं सामायक हु करुंछुं ॥ ३ ॥

वाहिर-प्रिंतरं उवहिं ॥ सरीरादि सन्नोअणं ॥
मणसावइ काएणं ॥ सवं तिविहेण वोसिरे ॥ ४ ॥

बाह्य उपधी (वस्त्रादिक), अभ्यंतर उपधी (क्रोधादिक) शरीर विगेरे भोजन सहित मन, वचन ने काया ए त्रण प्रकारे सर्व वोसिरावुंछुं ॥ ४ ॥

राग वंधं पनसं च ॥ हरिसं दीणन्नावियं ॥
नस्सुगत्तं नयं सोगं रइं भयं च वोसिरे ॥ ५ ॥

रागनो वंध, द्वेष, हर्ष अने दीनपणुं, आकुलपणुं, भय, शोक, रति, मद, ए सघळाने वोसिरावुंछुं ॥५॥

रोसेण पमिनिवेसेण ॥ अकयसुआ तहेव सझाए ॥
जोमे किंचिवि नणिन ॥ तिविहं तिविहेण खामेमि ॥ ६ ॥

रोषे करीने, कदाग्रहवडे, अकृतघ्नतावडे तेमज असत् ध्यानने विषे जे हुं कांइ अविनयपणे वोल्यो ते त्रिविधे त्रिविधे खमावुंछुं ॥ ६ ॥

खामेमि सव्व जीवे ॥ सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
आसवे वोसिरत्ताणं ॥ समाहिं पमि संधए ॥ ७ ॥

सर्वे जीवोने खमावुं, सर्वे जीवो मने खमो, मघला आ भवने वोसिरावीने समाधि (शुभ) ध्यानने आदरे ॥ ७ ॥

निंदामि निंदणिज्जं ॥ गरिहामि अ जं च मे गरहणिज्जं ॥
आलोएमि अ सव्व ॥ जिणेहिं जं जं च पडिकुट्ठं ॥ ८ ॥

जे निंदवा योग्य होय तेने हुं निंदुंछुं, अने जे गुरुसाखे निंदवा योग्य होय तेने गर्हुंछुं अने जे जे जिनोए निषेध्युं छे ते सर्वने आलोउंछुं ॥ ८ ॥

उअही सरीरगं चेव ॥ आहारं च चउव्विहं ॥
ममत्तं सव्व दव्वेसु ॥ परिजाणामि केवलं ॥ ९ ॥

उपधी, शरीर अने चतुर्विध आहार, अने सर्व द्रव्यने विषे ममता ते सर्वने जाणीने त्याग करुंछुं ॥ ९ ॥

ममत्तं परिजाणामि ॥ निम्ममत्ते उवट्ठिउ ॥
आलंबणंच मे आया ॥ अवसेसं च वोसिरे ॥ १० ॥

निर्ममपणाने विषे उद्यमवंत थएलो एवो ममताने समस्त प्रकारे त्याग करुंछुं. एक मारे आत्मानुंज आलंबन छे; बीजुं सर्व वोसिरावुंछुं ॥ १० ॥

आया मे जं नाणे ॥ आया मे दंसणे चरित्ते य ॥
आया पच्चक्खाणे ॥ आया मे संजमे जोगे ॥ ११ ॥

मारुं जे ज्ञान ते मारो आत्मा छे, आत्मा तेज मारुं दर्शन अने चारित्र छे, आत्मा तेज पच्चख्खाण छे, आत्मा तेज मारुं संजम अने तेज मारो जोग छे ॥ ११ ॥

मूल गुण उत्तर गुणे ॥ जे मे नाराहिआ पमाएणं ॥
ते सव्वे निंदामि ॥ पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ १२ ॥

मूल गुण अने उत्तर गुण जे में प्रमादवडे करी न आराध्या होय ते सर्वने हु निंदुंछुं अने आगामीकालने विषे जे थवाना होय तेथी हुं पाछो वळुंछुं ॥ १२ ॥

इक्कोहं नत्थि मे कोइ ॥ नचाहमवि कस्सई ॥
एवं अदीण मणसो ॥ अप्पाण मणुसासए ॥ १३ ॥

एकलो हुं छुं मारुं कोइ नथी अने हुं पण कोइनो नथी एम अदीन चित्तवाळो आत्माने शिक्षा आपे.

इक्को उप्पज्जए जीवो ॥ इक्को चेव विवज्जई ॥
इक्कस्स होइ मरणं ॥ इक्को सिज्झइ नीरउ ॥ १४ ॥

जीव एकलोज उपजेछे, अने एकलोज नाश पामेछे, एकलानेज मरण होयछे अने एकलोज जीव कर्म रज रहित थइने मोक्ष पामेछे ॥ १४ ॥

इक्को करेइ कम्मं ॥ फलमवि तस्सिक्कउ समणुहवइ ॥
इक्को जायइ मरइ ॥ परलोअं इक्कउ जाइ ॥ १५ ॥

एकलो कर्म करेछे, तेनुं फल पण एकलोज अनुभवेछे, एकलो जन्मेछे ने मरेछे ने परलोकमां एकलोज उत्पन्न थायछे ॥ १५ ॥

इक्को मे सासउ अप्पा ॥ नाण दंसण लक्खणो ॥
सेसा मे बाहिरा भावा ॥ सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १६ ॥

ज्ञान, दर्शन, लक्षणवंत एकलो मारो आत्मा शाश्वतो छे; बाकी मारा बाहीरभाव सर्वे संयोगरूप छे.

संजोग मूला जीवेण ॥ पत्ता दुक्ख परंपरा ॥
तम्हा संजोग संबंधं ॥ सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ १७ ॥

संयोग छे मूल जेनुं एवी जीवे दुःखनी परंपरा पामी ते माटे सर्व संयोग संबंधने त्रिविधे त्रिविधे वोसिरावुंछुं ॥ १७ ॥

अस्संजम मन्नाणं ॥ मिच्छत्तं सव्वउ विअ ममत्तं ॥
जीवेसु अजीवेसु अ ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ १८ ॥

असंयम, अज्ञान, मिथ्यात्व, अने सर्व प्रकारना जीवने विषे अने अजीवने विषे ममत्वपणुं, ते हुं निंदुंछुं अने गुरुनी साखे गरहुंछुं ॥ १८ ॥

मिच्छत्तं परिजाणामि ॥ सव्वं अस्संजमं अलीयं च ॥
सव्वत्तो अ ममत्तं ॥ चयामि सव्वं च खामेमि ॥ १९ ॥

मिथ्यात्वने, सर्व असंयमने, सर्व असत्य वचनने अने सर्व थकी ममताने सम्यक् प्रकारे छांडुंछुं अने सर्वने खमावुंछुं ॥ १९ ॥

जे मे जाणंति जिणा ॥ अवराहा जेसु जेसु ठाणेसु ॥
तं तह आलोएमि ॥ उवट्ठिउ सव्व भावेणं ॥ २० ॥

जे जे ठेकाणे मारा अपराधो थएला जिनेश्वर भगवान जाणेछे ते सर्व प्रकारे उपस्थित थएलो एवो हुं तेमज आलोउंछुं ॥ २० ॥

उप्पन्नाणुप्पन्ना ॥ माया अणुमग्गउ निहंतव्वं ॥
आलोअण निंदण गरिहणाहिं ॥ न पुणुत्तिआ बीयं ॥ २१ ॥

उत्पन्न थती एटले वर्तमान कालनी, अनुत्पन्न थएली एवी एटले तेना पछी थती भविष्यकाळनी माया बीजीवार न करुं ए रीते आलोअण निंदन अने ग्रहावडे त्याग करुंछुं ॥ २१ ॥

जह बालो जंपंतो ॥ कज्ज मकज्जं च उज्जुअं भणइ ॥
तं तह आलोइज्जा ॥ माया मय विप्पमुक्कोउ ॥ २२ ॥

जेम बोलतुं बालक सरलपणे कार्य अने अकार्य बधुंए कही दे तेम माया अने मदवडे रहित एवो पुरुष सर्व पाप आलोवे ॥ २२ ॥

सोही उज्जुअ भूअस्स ॥ धम्मो सुद्धस्स चिठ्ठई ॥
निव्वाणं परमं जाइ ॥ घय सित्तिव्व पावणा ॥ २३ ॥

जेम घीवडे सींचेलो अग्नि दीपे तेम सरल थएला माणसने आलोअण शुद्ध थाय अने शुद्धने धर्मस्थिर रहे अने परम निर्वाण एटले मोक्षने पामे ॥ २३ ॥

न हु सिज्झइ ससल्लो ॥ जह भणियं सासणे धुअरयाणं ॥
उद्धरिअ सव्व सल्लो ॥ सिज्झइ जीवो धुअ किलेसो ॥ २४ ॥

शल्य सहित माणस सिद्धि पामे नहि, एम पाप मेल जेना खरी गएला छे एवा (वीतराग) ना सासनमां कहेलुं छे; सर्व शल्यने उद्धरीने क्लेश रहित एवो जीव सिद्धि पामे ॥ २४ ॥

सुबहुंपि जाव सल्लं ॥ आलोएऊण गुरु संगासंमि ॥
निस्सल्ला संथारग ॥ मुविंति आराहगा हुंति ॥ २५ ॥

घणुंए पण भाव शल्य गुरुनी पासे आलोइने निःशल्य थकाँ संथारो (अणशण) आदरे तो तेओ आराधक थाय. ॥ २५ ॥

अप्पंपि जाव सल्लं ॥ जे नालोअंति गुरुसगासंमि ॥
धंतंपि अ सुअ समिद्धा ॥ न हुते आराहगा हुंति ॥ २६ ॥

थोडुं पण भाव शल्य गुरुनी पासे जे न आलोवे ते अत्यंत ज्ञानवंत छतां पण आराधक न थाय ॥२६॥

न वि तं सत्थं च विसं च ॥ दुप्पउत्तोव कुणइ वेआलो ॥
जं तं च दुप्पउत्तं ॥ सप्पुव्व पमाइउ कुद्धो ॥ २७ ॥

खराव रीते वापरेलुं एवुं शस्त्र, विष, दुःप्रयुक्त वैताल अने दुःप्रयुक्त यंत्र अने प्रमादथी छेडेलो एवो साप तेवुं काम न करे (जेवुं भावशल्य करे.) ॥ २७ ॥

जं कुणइ जाव सल्लं ॥ अणुद्धिअं उत्त मह कालंमि ॥
दुल्लह बोहिअत्तं ॥ अणंत संसारिअत्तं च ॥ २८ ॥

जेवुं भाव शल्य अंतकाले अण उद्धरिउं करे तेथी दुर्लभ बोधीपणुं अने अनंत संसारीपणुं थाय छे. ॥

तो उद्धरंति गारव ॥ रहिआ मूलं पुणप्भव लयाणं ॥
मिछा दंसण सल्लं ॥ माया सल्लं नियाणं च ॥ २९ ॥

तेथी गारव रहित माणस पुनर् भवरूपी लताओना मूल एवा मिथ्यादर्शन शल्य, मायाशल्य अने नियाणशल्यने उद्धरेछे ॥ २९ ॥

कय पावोवि मणूसो ॥ आलोइअ निंदिअ गुरु सगासे ॥
होइ अइरेग लहूउ ॥ उहरिअ भरुव्व भारवहो ॥ ३० ॥

पापनो करनारो एवो पण माणस (पापने) आलोइने अने गुरुनी पासे निंदीने जेम भारनो वहन करनारो माणस भार उतारीने हलवो थाय तेम ते घणोज हलवो थाय ॥ ३० ॥

तस्सय पायच्छित्तं ॥ जं मग्गविउ गुरु वइस्संति ॥
तं तह अणुसरिअव्वं अणवठ्ठ पसंग भीएण ॥ ३१ ॥

तेनुं प्रायश्चित जेम मार्गने जाणनारा एवा गुरु उपदेश करे तेम अनवस्थाना प्रसंगनी बीकवाला माणसे अनुसरवुं ॥ ३१ ॥

दस दोस विप्प मुक्कं ॥ तम्हा सव्वं अगूहमाणेण ॥
जं किंपि कय मकज्जं ॥ तं जहवत्तं कहेअव्वं ॥ ३२ ॥

दश दोष रहित जे कंइ पण अकार्य कर्युं होय ते सर्व नहि छुपाविने जेम थयुं होय तेमज कहेवुं जोइए ॥ ३२ ॥

सव्वं पाणारंभं ॥ पच्चक्खामि अलिय वयणं च ॥
सव्वं अदत्तादाणं ॥ अबंभ परिग्गहं चेव ॥ ३३ ॥

सर्व प्राणीओना आरंभ अने असत्य वचन, सर्व अदत्तादान, सर्व मैथुन अने सर्व परिग्रहने हुं त्याग करूंछुं ॥ ३३ ॥

सव्वं च असणपाणं ॥ चउव्विहं जो अ बाहिरो उवहि ॥
अभिंतरं च उवहिं ॥ सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ३४ ॥

सर्व अशन अने पानादिक चतुर्विध आहार अने जे बाह्य (वस्त्र पात्रादि) उपधी अने कषायादि अभ्यंतर उपधी ते सर्वने त्रिविधे वोसिरावुंछुं ॥ ३४ ॥

कंतारे दुब्भिक्खे ॥ आयंकेवा महया समुप्पन्ने ॥
जं पालीअं न भग्गं ॥ तं जाणसु पालणा सुद्धं ॥ ३५ ॥

वनमां अथवा दुकाळमां अथवा मोटो रोग उत्पन्न थये छते जे व्रत पाल्युं अने ते न भाग्युं ते शुद्ध पाल्युं समजवुं ॥ ३५ ॥

रागेण व दोसेण व ॥ परिणामेण व न दूसिअं जं तु ॥
तं खलु पच्चरकाणं ॥ जाव विसुद्धं मुणेयव्वं ॥ ३६ ॥

रागे करीने अथवा द्वेषे करीने अथवा परिणामे करीने जे (पच्चख्खाण) न दुषीत कर्युं ते खरेखर भाव विशुद्ध पच्चख्खाण जाणवुं ॥ ३६ ॥

पीअं थणाय छिरं ॥ सागर सलिलाउ बहुतरं हुज्जा ॥
संसारंमि अणंते ॥ माईणं अन्न मन्नाणं ॥ ३७ ॥

आ अनंत संसारने विषे नवनवी माताओनां स्तननां दूध जीवे पीधां ते समुद्रना पाणी थकी पण वधारे थाय छे ॥ ३७ ॥

बहुसोवि मए रुसं ॥ पुणो पुणो तासु तासु जाइसु ॥
नयणोदयंपि जाणसु ॥ बहुअरं सागर जलाउ ॥ ३८ ॥

ते ते जातीओमां वारंवार में घणुं रुदन कर्युं ते नेत्रना आंसुनुं पाणी समुद्रना पाणी थकी पण वधारे जाणवुं ॥ ३८ ॥

नत्थि किसो पएसो ॥ लोए वालग्ग कोडिमित्तोवि ॥
संसारे संसरंतो ॥ जत्थ न जाउ मउ वावि ॥ ३९ ॥

एवो कोइ पण वाळना अग्रना मध्य भाग जेटलो प्रदेश नथी के जिहां संसारमां भमतो जीव नथी ज-
न्म्यो ने नथी मुओ ॥ ३९ ॥

चुलसीइ किल लोए ॥ जोणीणं पमुह सयसहस्साइं ॥
इक्किक्कंमिअ इत्तो ॥ अणंतखुत्तो समुप्पन्नो ॥ ४० ॥

लोकने विषे खरेखर चोराशी लाख जीवा योनीयो छे ते मांहे एकेक योनीमां जीव अनंतीवार उत्पन्न
थयो छे ॥ ४० ॥

उड्ढमहे तिरिअंमि अ ॥ मयाइं बहुयाइं बाल मरणाइं ॥
तो ताइं संभरंतो ॥ पंडिअ मरणं मरीहामि ॥ ४१ ॥

उर्ध्व लोकने विषे, अधो लोकने विषे अने तिर्यग् लोकने विषे घणां बाळ मरण पाम्यो तो ते मरणो
ने संभारतो पंडित मरणे हु मरीश ॥ ४१ ॥

मायामित्ति पिया मे ॥ भाया भगिणी अपुत्त धीयाय ॥
एयाइं संभरंतो ॥ पंडिय मरणं मरीहामि ॥ ४२ ॥

मारी माता, मारा पिता, भाइ, बेन, मारो पुत्र, मारी पुत्री ए वधांने संभारतो पंडित मरण हुं मरीश.

॥ ४१ ॥

॥ ४१ ॥

माया पीइ बंधूहिं ॥ संसार त्थेहिं पूरित्त लोगो ॥
वहु जोणि निवासिएहिं ॥ न य ते ताणं च सरणं च ॥ ४३ ॥

संसारमां रहेला ने घणी योनीमां निवास करता माता, पीता अने बंधुओवडे आखो लोक भरेलोछे ते तारुं त्राण तथा शरण नथी ॥ ४३ ॥

इक्को करेइ कम्मं ॥ इक्को अणुहवइ डुक्कय विवागं ॥
इक्को संसरइ जित्त ॥ जर मरण चत्तग्गइ गुविलं ॥ ४४ ॥

एकलोज जीव कर्म करे छे, अने एकलोज जीव माठां करेलां पापना फलने भोगवे छे, अने एकलोज जीव जरा मरणवाला चतुर्गति रुप गहन वनमां भमे छे ॥ ४४ ॥

उव्वेवणयं जम्मणमरणं ॥ नरएसु वेअणाउ वा ॥
एआइं संभरंतो ॥ पंडिय मरणं मरिहामि ॥ ४५ ॥

ऊद्वेगना करनारां जन्म अने मरण छे, नरकनी गतिए अनेक वेदनाओ छे ए संभारतो पंडित मरण हुं मरीश ॥ ४५ ॥

उव्वेवणयं जम्मण मरणं ॥ तिरिएसु वेअणाउ वा ॥
एआइं संभरंतो ॥ पंडिय मरणं मरिहामि ॥ ४६ ॥

ऊद्वेगना करनारा जन्म अने मरण छे, तिर्यंचनी गतिए अनेक वेदनाओ छे ए संभारतो पंडित मरण हुं मरीश ॥ ४६ ॥

नुव्वेवणयं जम्मण मरणं ॥ मणुएसु वेअणाउ वा ॥
एआइं संजरंतो पंमिय मरणं मरिहामि ॥ ४७ ॥

मनुष्यनी गतिमां उद्वेगनां करनार जन्म अने मरण अने वेदनाओ छे ए संभारतो पंडित मरण हुं मरीश ॥

नुव्वेवणयं जंमण मरणं ॥ चवणं च देवलोगाउ ॥
एआइं संजरंतो पंमिय मरणं मरिहामि ॥ ४८ ॥

उद्वेगना करनार जन्म, मरण अने देवलोकथी चववुं थाय छे ए संभारतो पंडित मरण हुं मरीश ॥४८॥

इक्कं पंमिय मरणं ॥ छिंदइ जाइ सयाइं बहुआइं ॥
तं मरणं मरिअव्वं ॥ जेण मउ सम्मउ होइ ॥ ४९ ॥

एक पंडित मरण बहु सेंकडो गमे जन्म मरणोने छेदे ते मरण मरवुं जोइए के जे मरणवडे मरेलो शुभ मरणवालो होय ॥ ४९ ॥

कइ आ णु तं सुमरणं ॥ पंमिअ मरणं जिणेहिं पन्नत्तं ॥
सुद्धो उद्धरि अ सल्लो पाउवगउ मरिहामि ॥ ५० ॥

क्यारे ते शुभ मरण जे जिनेश्वर भगवाने कहेलुं एवुं पंडित मरण तेने शुद्ध एवो अने शल्य रहित एवो पादोपगम अणशण लेइ मरण पामीश ॥ ५० ॥

भव संसारे सव्वे ॥ चउविहा पुग्गला मए बद्धा ॥
परिणाम पसंगेणं ॥ अठ विहे कम्म संघाए ॥ ५१ ॥

सर्व भव संसारने विषे परिणामना प्रसंगवडे चार प्रकारना पुद्गलो में बांध्या अने आठ प्रकारना कर्मोनो समुदाय में बांध्यो ॥ ५१ ॥

संसार चक्कवाले ॥ सव्वे ते पुग्गला मए बहुसो ॥
आहारिआ य परिणामिआ य ॥ नयहिं गउ तित्तिं ॥ ५२ ॥

संसारचक्रने विषे सर्वे ते पुद्गलो मे घणी वार आहारपणे लेइ परीणमाव्या तोए पण तृप्ति थइ नहि.

आहार निमित्तेणं ॥ अहयं सव्वेसु नरय लोएसु ॥
उववन्नोमि व बहुसो ॥ सव्वासु अ मिछ जाईसु ॥ ५३ ॥

आहारना निमित्ते हुं सर्व नरकलोकने विषे घणीवार उपन्यो छुं तेमज सर्व म्लेच्छ जातियोमां उपन्योछुं.

आहार निमित्तेण ॥ मछा गछंति दारुणे नरए ॥
सच्चित्तो आहारो ॥ न खमो मणसा वि पछेउं ॥ ५४ ॥

आहारना निमित्ते मत्स्य भयंकर नरकने विषे जायछे तेथी सचित्त आहार मनवडेय प्रार्थवाने युक्त नथी.

तण कठेण व अग्गी ॥ लवण जलो वा नई सहस्सेहिं ॥
न इमो जीवो सक्को ॥ तिप्पेउं काम भोगेहिं ॥ ५५ ॥

तृण अने काष्ठवडे जेम अग्नि, अथवा हजारो नदीओवडे जेम लवणसमुद्र तृप्त थतो नथी, तेम आ जीव काम भोगोवडे तृप्त थइ शकतो नथी ॥ ५५ ॥

तण कठेण व अग्गी ॥ लवण जलो वा नइ सहस्सेहिं ॥
न इमो जीवो सक्को ॥ तिप्पेउं अब्लसारेणं ॥ ५६ ॥

तृण अने काष्ठवडे जेम अग्नि, अथवा हजारो नदीओवडे जेम लवणसमुद्र तृप्त थतो नथी, तेम आ जीव पैसावडे तृप्त थतो नथी ॥ ५६ ॥

तण कठेण व अग्गी ॥ लवण जलो वा नई सहस्सेहिं ॥
न इमो जीवो सक्को ॥ तिप्पेउं गंध मल्लेहिं ॥ ५७ ॥

तृण अने काष्ठवडे जेम अग्नि, अथवा हजारो नदीओवडे जेम लवणसमुद्र तृप्त थतो नथी, तेम आ जीव गंधमाल्यना भोगवडे तृप्त थतो नथी ॥ ५७ ॥

तण कठेण व अग्गी ॥ लवण जलो वा नई सहस्सेहिं ॥

न इमो जीवो सक्को ॥ तिप्पेउं लोअण विहीए ॥ ५८ ॥

तृण अने काष्ठवडे जेम अग्नि, अथवा हजारो नदीओवडे जेम लवणसमुद्र तृप्त थतो नथी, तेम आ जीव भोजनविधिवडे तृप्त थयो नथी ॥ ५८ ॥

वलयामुह सामाणो ॥ दुप्पारोवण रज्ज अपरिमिस्रो ॥

न इमो जीवो सक्को ॥ तिप्पेउं गंध मल्लेहिं ॥ ५९ ॥

वडवानल जेवो अने दुःखे पार पामीए एवो अपरिमित गंधमाल्यवडे आ जीव तृप्त थइ शकतो नथी.

अविअड्ढो अ जीवो ॥ अइअ कालंमि आगमिस्साए ॥

सद्दाण य रुवाण य ॥ गंधाण रसाण फासाणं ॥ ६० ॥

अविदग्ध=मूर्ख एवो आ जीव अतित कालने विषे अने अनागत कालने विषे शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पांच विषये करी तृप्त न थयो ने थशे नहीं ॥ ६० ॥

कप्पतरू संभवेसू ॥ देवुत्तरकुरवसं पसूएसु ॥

उववाएण य तित्तो ॥ न य नर विज्जाहर सुरेसु ॥ ६१ ॥

देवकुरु, उत्तरकुरुमां उत्पन्न थएला एवा कल्पवृक्षोथी मळेला सुखथी तेमज मनुष्य विद्याधर अने देवोने विषे उत्पन्न थएला एवा सुखवडे आ जीव तृप्त थयो नहि ॥ ६१ ॥

खइएण व पीएण व ॥ न य एसो ताइओ हवइ अप्पा ॥
जइ दुग्गइं न वच्चइ ॥ तो नूणं ताइओ होइ ॥ ६२ ॥

खावावडे तेमज पीवावडे आ आत्मा बचावातो नथी; जो दुर्गति न जाय तो निश्चे बचावाएलो कहेवाय.

देविंद चक्कवट्टित्तणाइं ॥ रज्जाइं उत्तमा भोगा ॥
पत्ता अणंतखुत्तो ॥ नयहं तित्तिं गओ तेहिं ॥ ६३ ॥

देवेंद्र चक्रवर्तिपणाना राज्यो तथा उत्तम भोगो अनंतीवार पाम्या पण तेओ वडे हुं तृप्ति पाम्यो नहि.

खीर दगिउ रसेसुं ॥ साऊसु महोदहीसु बहुसोवि ॥
उववन्नो न य तण्हा ॥ छिन्ना भे सीयल जलेण ॥ ६४ ॥

दूध, दहिं, शेरडीना रसवाळा स्वादिष्ट मोटा समुद्रोने विषे घणीवार हुं उत्पन्न थयो तोपण शतिळ जळवडे मारी तृष्णा न छीपी ॥ ६४ ॥

तिविहेण य सुह मउलं ॥ तम्हा काम रइ विसय सुक्खाणं ॥
बहुसो सुह मणु भूअं ॥ नय सुह तण्हा परिच्छिण्णा ॥ ६५ ॥

मन, वचन ने काय ए त्रण प्रकारे काम भोगना विषय सुखोना अतुल सुखने बहुबहुवार अनुभव्युं तो पण सुखनी तृष्णा भागी नहि ॥ ६५ ॥

जा काइ पच्छणाउ ॥ कया मए राग दोस वसएण ॥
पमिबंधेण बहुविहं ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ६६ ॥

जे कोइ प्रार्थना में राग द्वेषने वश थइ प्रतिबंधे करी घणी प्रकारे करी होय ते हुं निंदुंछुं अने गुरुनी साखे गरहुंछुं ॥ ६६ ॥

हंतूण मोहजालं ॥ छित्तूण य अठकंम संकलिअं ॥
जंमण मरण रहट्टं ॥ भित्तूण भवाउ मुच्चिहिसि ॥ ६७ ॥

मोहजालने हणीने, अने आठ कर्मनी साकलने छेदीने जन्म मरणरुपी अर्हटने भागी नांखीने संसारथकी तुं मूकाइश ॥ ६७ ॥

पंचइ महव्वयाइं ॥ तिविहं तिविहेण चारु हेऊणं ॥
मण वयण काय गुत्तो ॥ सज्झो मरणं पडिच्छिआ ॥ ६८ ॥

पांच महाव्रतने त्रिविधे त्रिविधे आरोपीने मन वचन अने काय गुप्तिथी गुप्त एवो सावधान थइ मरणने आदरे ॥ ६८ ॥

कोहं माणं माया ॥ लोहं पिज्जं तहेव दोसं च ॥
चइऊण अप्पमत्तो ॥ रक्कामि महव्वए पंच ॥ ६९ ॥

क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम तेमज द्वेषने अप्रमत्त थको त्याग करीने पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥

कलहं अब्भक्खाणं ॥ पेसुन्नं पिअ परस्स परिवायं ॥
परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७० ॥

कलह, अभ्याख्यान, चाडी, वली परनी निंदा एटलां वानां त्याग करतो अने त्रण गुप्तिए गुप्त एवो पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७० ॥

पंचिंदिय संवरणं ॥ पंचेव निरुंभिऊण काम गुणे ॥
अच्चासायण भीरु ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७१ ॥

पांच इंद्रियोने संवरीने अने पांचे कामना (शब्दादि) गुणने रुंधीने देव गुरुनी अती आशातनाथी बीतो पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७१ ॥

किण्हा नीला काऊ ॥ लेसा झाणाइं अट्टरुद्दाइं ॥
परिवज्जंतो गुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७२ ॥

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, अने आर्तध्यान अने रौद्र ध्यानने वर्जतो थको त्रण गुप्तिए गुप्त एवो पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७२ ॥

तेऊ पम्हा सुक्का ॥ लेसा झाणाइं धम्म सुक्काइं ॥

उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७३ ॥

तेजो लेश्या, पद्म लेश्या अने शुक्ल लेश्या ने धर्म ध्यान ने शुक्ल ध्यान ए बे ध्यानने आदरतो अने ते सहित पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७३ ॥

मणसा मणसच्चविऊ ॥ वाया सच्चेण करण सच्चेण ॥

तिविहेण वि सच्च विऊ ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७४ ॥

मनवडे मनने सत्यपणे, वचन सत्यपणे ने कर्तव्य सत्यपणे ए त्रण प्रकारे सत्यपणे प्रवर्ततो तथा जाणतो पंचमहाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७४ ॥

सत्त भय विप्पमुक्को ॥ चत्तारि निरुंभिऊण य कसाए ॥

अट्ठ मय ठाण जढो रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७५ ॥

सात भयथी राहित एवो, चार कपायने रोकीने, आठ मदना स्थानक रहित थको पंचमहाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७५ ॥

गुत्तीउ समिईउ भावणाउ ॥ नाणं च दंसणं चेव ॥

उवसंपन्नो जुत्तो ॥ रक्खामि महव्वए पंच ॥ ७६ ॥

त्रण गुप्ति, पांच समिती अने पचीश भावनाओने ज्ञान अने दर्शन एटलांने आदरतो अने ते सहित पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७६ ॥

एवं तिदंम विरउ ॥ तिकरण सुद्धो तिसल्ल निस्सल्लो ॥
तिविहेण अप्पमत्तो ॥ रस्कामि महव्वए पंच ॥ ७७ ॥

ए प्रकारे त्रण दंडथकी विरक्त एवो, त्रिकरण शुद्ध एवो अने त्रण शल्यथी रहित एवो अने त्रिविधे अप्रमत्त एवो पंच महाव्रतने रक्षण करुं ॥ ७७ ॥

संगं परिजाणामि ॥ सल्लं तिविहेण उद्धरेऊण ॥
गुत्तीउ समिईउ ॥ मज्झंताणं च सरणं च ॥ ७८ ॥

सर्व संगने सम्यक प्रकारे जाणुंछुं अने माया शल्य, नियाण शल्य अने मिथ्यात्व शल्यरूप त्रण शल्यने त्रिविधे टाळीने त्रण गुप्ति अने पांच समिती ए मने रक्षण अने शरण हो ॥ ७८ ॥

जह स्कुहिअ चक्कवाले ॥ पोयं रयण न्नरियं समुद्दंमि ॥
निज्जामगा धरिंती ॥ कय करणा बुद्धि संपन्ना ॥ ७९ ॥

जेम समुद्रनुं चक्रवाल क्षोभे सारे समुद्रने विषे रत्नथी भरेलुं एवुं पण ज्ञाझ वहाणवटीओकृत करण बुद्धि युक्त एवो थइने वहाणने रक्षण करेछे ॥ ७९ ॥

तव पोअं गुण भरीअं ॥ परीसहुम्मीहिं खुहिअ मारद्धं ॥
तह आराहिति विऊ ॥ उवएसवलंवगा धीरा ॥ ८० ॥

तेम गुणरुपी रत्नवडे भरेलुं तपरुपी वहाण परिसह रुपी कल्लोलावडे क्षोभायमान थवा शरु थएलुं उपदेश रुप आलंबनवाला धीर पुरुषो आराधे ॥ ८० ॥

जइ ताव ते सुपुरिसा ॥ आया रोविअ भरा निरवयक्खा ॥
पब्भार कंदर गया ॥ साहंती अप्पणो अठं ॥ ८१ ॥

जो आ प्रमाणे ते सत्पुरुषो आत्माने विषे व्रतनो भार मूक्यो छे जेणे एवा अने शरीरने विषे निरपेक्ष एवा पर्वतनी गुफामां रहेला एवा पोताना अर्थने साधेछे ॥ ८१ ॥

जइ ताव ते सुपुरिसा ॥ गिरिकंदर कडग विसम दुग्गेसु ॥
धिइ धणिअ वद्ध कच्छा ॥ साहंती अप्पणो अठं ॥ ८२ ॥

ते सुपुरुषो पर्वतनी गुफा, पर्वतनी कराड, अने विषम स्थानके रहेला एवा धीरजवडे अत्यंत तैयार रहे तो ते पोतानो अर्थ साधे ॥ ८२ ॥

किं पुण अणगार सहायगेण ॥ अणुस्स वूसंगह वलेणं ॥
परलोएणं सक्का ॥ साहेउं अप्पणो अठं ॥ ८३ ॥

तो केम साधुओने सहाय आपनार एवा अन्योअन्य संग्रहना बलवडे एटले वैयावच्च करवावडे परलोकना अर्थे पोतानो अर्थ साधी शके ? (न साधी शके.) ॥ ८३ ॥

जिण वयण मप्प मेअं ॥ महुरं कन्नाहुइ सुणं तेण ॥
सक्का हु साहु मझ्झे ॥ साहेउ अप्पणो अठं ॥ ८४ ॥

अल्प एवुं पण मधुर एवुं, अने कानने गमतुं,आ वितरागनुं वचन, सांभळता जीवे साधुओनी मध्ये पोतानो अर्थ साधवाने खरेखर समर्थ थइ शकाय ॥ ८४ ॥

धीर पुरिस पन्नत्तं ॥ सप्पुरिस निसेवियं परमघोरं ॥
धन्ना सिलायल गया ॥ साहिंती अप्पणो अठं ॥ ८५ ॥

सत्पुरुषोए प्ररुपेलो अने उत्तम पुरुषोए सेवेलो अने परम मुश्केल एवो अर्थ जे पुरुषो शिलातलने विषे रहेला थका पोताना अर्थने साधेछे तेओने धन्य छे ॥ ८५ ॥

वाहिंति इंदियाइं ॥ पुब्व मकारिअ पइस चारीणं ॥
अकय परिकंम कीवा ॥ मरणे सुह संग वायंमि ॥ ८६ ॥

पूर्वे जेणे पोताना आत्माने बाधामां न राख्यो होय तेने इंद्रियो पीडा आपेछे अने परिसह सहन नहिं करवाथी मरणने वखते सुख छांडतां बीएछे ॥ ८६ ॥

पुव मकारिअ जोगो ॥ समाहि कामो अ मरण कालंमि ॥
न भवइ परीसह सहो ॥ विसय सुह समुइत्त अप्पा ॥ ८७ ॥

पूर्वे जेणे संजमजोग पाळ्यो न होय, अने मरणकाळने विषे समाधि इच्छतो होय ते विषयसुखमां लीन आत्मा परिसह सहन करवाने समर्थ न थाय ॥ ८७ ॥

पुव्विं कारिअ जोगो ॥ समाहि कामो अ मरण कालंमि ॥
संभवइ परीसह सहो ॥ विसय सुह निवारित्त अप्पा ॥ ८८ ॥

पूर्वे जेणे संजमजोग पाळ्यो होय अने मरणना काले समाधिने इच्छतो होय एवो पुरुष विषयसुखथकी आत्माने नीवारी शके अने परिसहने सहन करवाने समर्थ थइ शके ॥ ८८ ॥

पुव्विं कारिअ जोगो ॥ अनिआणो ईहिऊण मइ पुव्वं ॥
ताहे मलिअ कसाउ ॥ सज्जो मरणं पडिच्छिज्जा ॥ ८९ ॥

पूर्वे संजमजोग आराध्यो अने नियाणा रहित बुद्धिपूर्वक विचारीने अने ते वखते कषायने टाळीने सज्ज थइने मरणने अंगीकार करे ॥ ८९ ॥

पावाणंपावाणं ॥ कम्माणं अप्पणो सकंमाणं ॥
सक्का पलाइउं जे ॥ तवेण सम्मं पउत्तेणं ॥ ९० ॥

जे जीवोए सम्यक् प्रकारे तप कर्यो होय ते जीव पोताना आकरां पाप कर्म वाळवाने समर्थ थइ शके ॥ ९० ॥

इक्कं पंमिय मरणं ॥ पमिवज्जिअ सुपुरिसो असंन्नंतो ॥
खिप्पं सो मरणाणं ॥ काही अंतं अणंताणं ॥ ए१ ॥

एक पंडित मरणने आदरीने सुपुरुष असंभ्रांत थको जलदीथी ते अनंत मरणांनो अंत करशे ॥९१॥

किं तं पंमिय मरणं ॥ काणिव आलंबणाणि न्नणिआणि ॥
एयाइं नाऊणं ॥ किं आयरिआ पसंसंति ॥ ए२ ॥

ते केवुं पंडित मरण अने तेनां केवां आलंबन कह्यां छे ए बधां जाणीने आचार्यो शुं प्रशंसे ॥ ९२ ॥

अणसण पाउवगमं ॥ आलंबणं झाण न्नावणाउअ ॥
एआइं नाऊणं ॥ पंमिय मरणं पसंसंति ॥ ए३ ॥

पादोपगम अणशण, ध्यांन अने भावनाओ ते आलंबन छे, एटलां वानां जाणीने (आचार्यो) पंडित मरणने प्रशंसे छे ॥ ९३ ॥

इंदिय सुह साउलउ ॥ घोर परीसह पराइ अपरज्जो ॥
अकय परिकम्म कीवो ॥ मुज्जइ आराहणा काले ॥ ए४ ॥

इंद्रियनी सुख शातामां आकुल एवो अने विषम परिसह ते सहेवाने परवश थइ गएला अने संजम जेणे नथी पाळ्युं एवो क्लिब (कायर) माणस आराधनाना वखते मुझाय छे ॥ ९४ ॥

लज्जा य गारवेण य ॥ बहुस्सुअ मएण वा वि दुच्चरिअं ॥

जे न कहंति गुरूणं ॥ न हु ते आराह[illegible] गा हुंति ॥ ९५ ॥

लज्जावडे अने गारववडे करीने अने बहु श्रुतना मदवडे करीने जे पोतानुं पाप गुरुओने न कहे ते आराधक नथी थता ॥ ९५ ॥

सुज्झइ दुक्करकारी ॥ जाणइ मग्गंति पावए कित्तिं ॥

विणिगुहिंतो निंदइ ॥ तम्हा आराहणा सेआ ॥ ९६ ॥

दुष्कर क्रिया करनार सुझे, मार्गने जाणे, कीर्त्तिने पामे अने पोतानां पाप नहि ओलवतां निंदे माटे आराधना श्रेय कहेतां भली कही छे ॥ ९६ ॥

न विकारणं तणमओ ॥ संथारो न विअ फासुआ भूमी ॥

अप्पा खलु संथारो ॥ होइ विसुद्धो मणुजस्स ॥ ९७ ॥

तरणांनो संथारो अथवा प्राशुक भूमि ते (विशुद्धिनुं) कारण नथी, पण खरेखर जेनो आतमा विशुद्ध होय तेज खरो संथारो कहेवाय ॥ ९७ ॥

जिण वयण अणुगया मे ॥ होउ मइ जाण जोग मल्लीणों ॥
जइ तंमि देस काले ॥ अमूढ सन्नो चयइ देहं ॥ ९८ ॥

जिन वचनने अनुसरती शुभ ध्यान अने शुभ योगमां लीन एवी मारी मती थाओ; जेम ते देश कालने विषे पंडित थको आत्मा देह त्याग करे ॥ ९८ ॥

जाहे होइ पमत्तो ॥ जिणवर वयणा रहिउ अणाइत्तो ॥
ताहे इंदिय चोरा ॥ करंति तव संजम विलोमं ॥ ९९ ॥

जिनवर वचनथी रहित एवो अने क्रियाने विषे आळसु एवो कोइ मुनि ज्यारे प्रमादी थाय त्यारे (तेना) इंद्रियो रुपी चोरो तप अने संयमनो नाश करे छे ॥ ९९ ॥

जिण वयण मणुगय मइ ॥ जं वेलं होइ संवर पविठो ॥
अग्गीव वाउ सहीउ ॥ समूल मालं मइइ कंमं ॥ १०० ॥

जिन वचनने विषे अनुसरती मति छे जेनी एवो पुरुष, जे वेला संवरमां पेठेलो होय ते वेला वायरा सहित अग्निनी पेठे मुल अने डालां सहित कर्मने बाळी मूके ॥ १०० ॥

जह मंहइ वाउ सहिउ ॥ अग्गी रुक्के वि हरिअ वण संमे ॥
तह पुरिसकार सहिउ ॥ नाणं कम्मं खयं नेइ ॥ १०१ ॥

जेम वायु सहित अग्नि लीला वनखंडनां वृक्षोने पण वाळे, तेम पुरुषाकार (उद्यम) सहित माणस ज्ञाने करीने कर्मनो क्षय करे ॥ १०१ ॥

जं अन्नाणी कंमं ॥ खवेइ बहुआइं वास कोम्रीहिं ॥
तं नाणी तिहिं गुत्तो ॥ खवेइ ऊसास मित्तेणं ॥ १०२ ॥

अज्ञानी घणा क्रोडो वर्षे करीने जे कर्म खपावे ते कर्म ज्ञानी पुरुष त्रण गुप्तिए गुप्त छतो एक श्वासोश्वास मात्रमां खपावी नांखे ॥ १०२ ॥

न हुं मरणंमि ऊवग्गे ॥ सक्का बारस विहो सुअ खंधो ॥
सव्वो अणुचिंतेऊं ॥ धंतं पि समढ चित्तेण ॥ १०३ ॥

खरेखर मरण पासे आव्ये छते बार प्रकारनुं श्रुतस्कंध (द्वादशांगी) सर्व मजबुत पण समर्थ चित्तवाला माणसथी चितवी शकाय नहि ॥ १०३ ॥

इक्कंमि विजंमि पए ॥ संवेगं कुणइ वीयरायमए ॥
तं तस्स होइ नाणं ॥ जेण विरागत्तण मुवेइ ॥ १०४ ॥

एक बीजवाला पदने विषे वीतरागना शासनने विषे जे संवेग करेछे तेज तेनुं ज्ञान छे जेवडे वैराग्यपणुं पमाय छे. ॥ १०४ ॥

इक्कंमि बिजंमि पए ॥ संवेगं कुणइ वीयरायमए ॥
सो तेण मोहजालं ॥ छिंदइ अज्झप्प जोगेण ॥ १०५ ॥

एक वीजवाला पदने विषे वीतरागना शासनने विषे जे संवेग कराय छे ते वडे ते माणस मोहजालने, अभिप्राय विशेषवडे छेदे छे ॥ १०५ ॥

इक्कंमि बिजंमि पए संवेगं कुणइ वीयरायमए ॥
वच्चइ नरो अभिक्खं ॥ तं मरणं तेण मरिअव्वं ॥ १०६ ॥

एक वीजवाला पदने विषे वीतरागना शासनने विषे जे संवेग करेछे ते पुरुष निरंतर वैराग्य पामे; ते कारण माटे एवा समाधि मरणे तेणे मरवुं ॥ १०६ ॥

जेण विरागो जायइ ॥ तं तं सव्वायरेण कायव्वं ॥
मुच्चइ इह संवेगी ॥ अणंतओ होइ असंवेगी ॥ १०७ ॥

जेवडे करीने वैराग्य थाय ते ते कार्य सर्व आदरवडे करवुं जोइए, अहिआं संवेगी जीव संसार थकी मुक्त थाय अने असंवेगी जीवने अनंतो संसार थाय ॥ १०७ ॥

धम्मं जिण पन्नतं सम्म मिणं सद्दहामि तिविहेणं ॥
तस थावर भूअ हिअं ॥ पंथं निव्वाण नगरस्स ॥ १०८ ॥

जीनेश्वर भगवाने प्रकाशेलो आ धर्म हुं सम्यक् प्रकारे त्रिविधे सद्दहुंछुं; ते त्रस अने स्थावर प्राणीने हितकारक छे अने मोक्ष नगरनो रस्तो छे ॥ १०८ ॥

समणो मित्ति अ पढमं ॥ बीयं सव्वठ संजउ मित्ति ॥
सव्वं च वोसिरामि अ ॥ जिणेहिं जं जं च पडिकुठं ॥ १०९ ॥

हुं श्रमण छुं ए पहेलुं, सर्व अर्थनो संयमी छुं ए बीजुं अने जिनेश्वर भगवाने जे जे निषेधेलुं छे ते ते सर्व हुं वोसिरावुंछुं ॥ १०९ ॥

उवही सरीरगं चेव ॥ आहारं च चउव्विहं ॥
मणसा वय काएणं ॥ वोसिरामि ति भावउ ॥ ११० ॥

उपधि, शरीर, चतुर्विध आहार ते मन वचन अने कायावडे भावथी वोसिरावुंछुं ॥ ११० ॥

मणसा अचिंतणिज्जं ॥ सव्वं भासाइ अभासणिज्जं च ॥
काएण अकरणिज्जं ॥ सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ १११ ॥

मनवडे करीने जे चितववा योग्य नथी अने भाषाए करीने जे सर्व कहेवा योग्य नथी अने कायावडे करवा योग्य नथी ते सर्व हुं त्रिविधे वोसिरावुंछुं ॥ १११ ॥

अस्संजमे वेरमणं ॥ उवहि विवेग करणं उवसमो ॥
अपमिरूअ जोग विरउ ॥ खंती मुत्ती विवेगो अ ॥ ११२ ॥

असंयमने विषे विरीतपणुं, उपधिनुं विवेककरण (त्याग करवुं), उपशम अने अयोग्य व्यापारथी विरक्त थवुं, क्षमा, निर्लोभता अने विवेक ॥ ११२ ॥

एअं पच्चरकाणं ॥ आउर जण आवईसु भावेण ॥
असयरं पमिवन्नो ॥ जंपंतो पावइ समाहिं ॥ ११३ ॥

आ पच्चखाण रोगथी पीडाएलो माणस आपदाने विषे भाववडे अंगीकार करतो अने बोलतो समाधि पामे ॥ ११३ ॥

एअंसि निमित्तंमी ॥ पच्चरकाउण जइ करे कालं ॥
तो पच्चरकाइअव्वं ॥ इमेण इक्केण वि पएणं ॥ ११४ ॥

ए निमित्तने विषे जो कोइ माणस पच्चख्खाण करीने काल करे तो आ एक पण पदवडे पच्चख्खाण कराववुं ॥ ११४ ॥

मम मंगल मरिहंता ॥ सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥
तेसिं सरणोवगउ ॥ सावज्जं वोसिरामित्ति ॥ ११५ ॥

मने अरिहंत, सिद्ध, साधु, श्रुत अने धर्म ए मंगल छे, तेमनुं शरण पामेलो एवो हुं सावद्य (पापकर्म) वोसिरावुंछुं ॥ ११५ ॥

अरहंता मंगलं मज्झ ॥ अरहंता मज्झ देवया ॥
अरहंते कित्तइत्ताणं ॥ वोसिरामित्ति पावगं ॥ ११६ ॥

अरिहंत ते मने मंगल छे अने अरिहंत तेज मारा देव छे अरिहंतोनी स्तुति करीने हुं पाप वोसिरावुंछुं.

सिद्धाइ मंगलं मज्झ ॥ सिद्धाय मज्झ देवया ॥
सिद्धे अ कित्तइत्ताणं ॥ वोसिरामित्ति पावगं ॥ ११७ ॥

सिद्ध मने मंगल छे अने सिद्ध एज मारा देव छे; सिद्धनी स्तुति करीने हुं पाप वोसिरावुंछुं ॥ ११७ ॥

आयरिया मंगलं मज्झ ॥ आयरिआ मज्झ देवया ॥
आयरिए कित्तइत्ताणं ॥ वोसिरामित्ति पावगं ॥ ११८ ॥

आचार्य मारुं मंगल छे, आचार्य एज मारा देव छे, आचार्यनी स्तुति करीने हुं पाप वोसिरावुंछुं.

उवज्झाया मंगलं मज्झ ॥ उवज्झाया मज्झ देवया ॥
उवज्झाए कित्तइत्ताणं ॥ वोसिरामित्ति पावगं ॥ ११९ ॥

उपाध्याय मारुं मंगल छे अने उपाध्याय मारा देव छे; उपाध्यायनी स्तुति करीने हु पाप वोसिरावुंछुं.

साहूअ मंगलं मज्झ ॥ साहूअ मज्झ देवया ॥
साहूय कित्तिइत्ताणं ॥ वोसिरामित्ति पावगं ॥ १२० ॥

साधु मारे मंगलीक छे, साधु मारा देव छे, साधु महाराजनी स्तुति करीने हुं पापने वोसिरावुंछुं.

सिद्धे जवसंपत्तो ॥ अरहंते केवलित्तिन्नावेण ॥
इत्तो एगयरेण वि ॥ पएण आराहन्ने होइ ॥ १२१ ॥

सिद्धोनो आशरो लइने अने अरिहंत अने केवलीनो भाववडे आशरो लइने अथवा ए मांहेला गमे ते एक पदवडे आराधक होय ॥ १२१ ॥

समुइन्न वेअणो पुण ॥ समणो हियएण किंपि चिंतिज्जा ॥
आलंबणाइं कांइं ॥ काऊण मुणी दुहं सहइँ ॥ १२२ ॥

जेने वेदना उत्पन्न थइ छे एवो वळी साधु हृदयवडे कांइक चिंतवे, कांइक आलंबन करीने ते मुनि दुःखने सहन करे ॥ १२२ ॥

वेअणासु उइन्नासु ॥ किमेस त्तं निवेअए ॥
किंवा आलंबणं किच्चा ॥ तं दुक्ख महिआसए ॥ १२३ ॥

वेदनाओ उत्पन्न थये छते आ तो शी वेदना ! एम जाणी खमे अथवा कांइक आलंबन करीने ते दुःखनी विचारणा करे ॥ १२३ ॥

अणुत्तरेसु नरएसु ॥ वेअणाउ अणुत्तरा ॥
पमाय वट्टमाणेण ॥ मए पत्ता अणंतसो ॥ १२४ ॥

उत्कृष्ट नरकोने विषे उत्कृष्टी वेदनाओ प्रमादे वर्तता एवा में अनंतीवार पामी ॥ १२४ ॥

मए कयं इमं कम्मं ॥ समासज्ज अबोहिअं ॥ ०
पोराणगं इमं कम्मं ॥ मए पत्तं अणंतसो ॥ १२५ ॥

अबोधिपणुं पामीने मे आ कर्म कर्युं; आ जूनुं कर्म हुं अनंतीवार पाम्यो ॥ १२५ ॥

ताहिं दुःक्ख विवागाहिं ॥ उवविणा हि तहिं तहिं ॥
न य जीवो अजीवो उ ॥ कय पुव्वो अचिंतउ ॥ १२६ ॥

ते ते दुःखना विपाकोवडे त्यां त्यां वेदना पामे छते जीव पूर्वे अजीव करायो नहि ॥ १२६ ॥

अप्पुज्जुअं विहारं ॥ इच्छं जिण देसिअं विउ पसच्छं ॥
नाउ महापुरिस ॥ सेविअं अप्पुज्जुअं मरणं ॥ १२७ ॥

अप्रतिबद्ध विहार, ए रीतनुं जिनभाषित अने विद्वान माणसोए प्रशंसेलु अने महा पुरुषोए सेवेलुं जाणीने अप्रतिबद्ध मरण अंगीकार करे ॥ १२७ ॥

जह पछिमंमि काले ॥ पछिम तिच्छयर दिसिअ मुआरं ॥

पछा निछय पछं ॥ उवेमि अपुडुअं मरणं ॥ १२८ ॥

जेम छेल्ले काळे छेल्ला तिर्थंकर भगवाने उदार उपदेश आप्यो एम निश्चय मार्गवाळुं अप्रतिबद्ध मरण अंगीकार करुं ॥ १२८ ॥

बत्तीस मंम्भियाहिं ॥ कम्म जोगी जोग संगह बलेणं ॥

उज्झमिऊणय बारस ॥ विहेण तिवणेह पाणेणं ॥ १२९ ॥

बत्रीस भेदे योग संग्रह(बल)वडे संजम व्यापार स्थिर करी, बार भेदे तपरुप स्नेहपाने (उद्यम) करी ॥ १२९ ॥

संसार रंग मज्झे ॥ धिइ बल ववसाय बद्ध कछाउ ॥

हंतूण मोह मल्लं ॥ हराहि आराहण पडागं ॥ १३० ॥

संसाररुपी रंग भूमिकामां धीरजरुपी बल अने उद्यमरुपी सन्नाह (बखतर) पहेरी सज्ज थएलो एवो मोहरुपी मल्लने हणीने आराधनारुपी जय पताका लेइ ले ॥ १३० ॥

पोराणगं च कम्मं ॥ खवेइ अन्नं नवं तु न चिणाइ ॥
कंम कलंकलिवल्लिं ॥ छिंदइ संथार मारूढो ॥ १३१ ॥

वली जूनां कर्म खपावीने नवां कर्म न बांधे; कर्म व्याकुलता रुपी वेलडीने संथारामां रहेलो साधु छेदे.

आराहणो वउत्तो ॥ सम्मं काऊण सुविहिउ कालं ॥
उक्कोसं तिन्नि भवे ॥ गंतूण लभिज्ज निव्वाणं ॥ १३२ ॥

आराधनाने विषे सावधान एवो सुविहित साधु सम्यक्प्रकारे काल करीने उत्कृष्टा त्रण भव अतिक्रमीने निर्वाण एटले मोक्ष प्रत्ये पामे ॥ १३२ ॥

धीर पुरिस पन्नत्तं ॥ सप्पुरिस निसेविअं परम घोरं ॥
उइस्सो हुसिरंगं ॥ हरसु पडागं अविग्घेणं ॥ १३३ ॥

उत्तम पुरुषोए कहेलुं अने सत्पुरुषोए सेवेलुं एवुं घणुंज आकरुं अणसण करीने निर्विघ्नपणे जयपताका मेळवे ॥ १३३ ॥

धीर पडागा हरणं ॥ करेह जह तंमि देस कालंमि ॥
सुत्तत्थ माणुगुणंतो ॥ धिइ निच्चल बद्ध कच्छाउ ॥ १३४ ॥

जेम ते देसकालने विषे सुभट जयपताकानुं हरण करे तेम सुत्रार्थने अनुसरतो अने संतोष रुपी निश्चल सन्नाह पहेरीने सज्ज थएलो ॥ १३४ ॥

चत्तारि कसाएति ॥ तिन्नि गारवे पंचइंदिअ ग्गामे ॥

हंता परीसह चमू ॥ हराहि आराहण पडागं ॥ १३५ ॥

चार कषाय, त्रण गारव, पांच इंद्रिय ग्राम (समूह) रुपी वैरी अने परिसह रुपी फोज तेने हणीने आराधनारुप जयपताकाने तुं अंगीकार कर ॥ १३५ ॥

माया हुव चिंतिज्जा जीवामि चिरं मरामि व लहुंति ॥

जइ इछसि तरिउं जे ॥ संसार महोअहि मपारं ॥ १३६ ॥

जो अपार संसार रुपी महोदधि तरवाने तुं इच्छा राखतो होय तो हुं घणुं जीवुं अथवा शीघ्र मरण पामुं एवुं निश्चे विचारवुं नहि ॥ १३६ ॥

जइ इछसि निछरिउं ॥ सव्वेसिं चेव पाव कम्माणं ॥

जिण वयण नाण दंसण ॥ चरित्त भावुज्जुत्त जग्गं ॥ १३७ ॥

जो सर्व पापकर्मने खरेखर निस्तरवाने इच्छेछे, तो जिन वचन, ज्ञान, दर्शन चारित्र अने भावने विषे उद्यमवंत था ॥ १३७ ॥

दंसण नाण चरित्ते ॥ तवे अ आराहणा चउ खंधा ॥
सा चेव होइ तिविहा ॥ उक्कोसा मज्झिम जहन्ना ॥ १३८ ॥

दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप ए आराधना चार भेदे थाय, ने आराधना वळी त्रण भेदे थाय. १ उत्कृष्ट, २ मध्यम, ३ जघन्य ॥ १३८ ॥

आराहेऊण विऊ ॥ उक्कोसाराहणा चउ खंधा ॥
कम्मरय विप्पमुक्को ॥ तेणेव भवेण सिज्झिज्जा ॥ १३९ ॥

पंडित पुरुष ते उत्कृष्ट आराधना चार भेदे आराधीने कर्म रज रहित थइने तेज भवे सिद्धि पामे ॥१३९॥

आराहेऊण विऊ ॥ जहन्न माराहणं चउ खंधा ॥
सत्तठ भव गहणे ॥ परिणामेऊण सिज्झिज्जा ॥ १४० ॥

पंडित पुरुष चार भेदे जघन्य आराधना आराधीने सात अथवा आठ भव संसारमां करीने पछी मुक्ति पामे ॥ १४० ॥

सम्मं मे सव्व भूएसु ॥ वेरं मज्झ न केणइ ॥
खामेमि सव्व जीवे ॥ खमामि अहं सव्व जीवाणं ॥ १४१ ॥

सर्व जीवने विषे मने समता छे, मारे कोइनी साथे वैर नथी, हुं सर्व जीवोने खमावुंछुं, अने सर्व जीवने हुं खमुछुं ॥ १४१ ॥

एअं पच्चक्खाणं ॥ अणुपालेऊण सुविहिउ सम्मं ॥
वेमाणिअव देवो ॥ हविज्ज अहवावि सिज्झिज्जा ॥ १४२ ॥

ए पच्चखाण सुविहित साधु सम्यक् प्रकारे पाळीने, वैमानिक देव थाय अथवा सिद्धि पामे ॥१४२॥

॥ इति महापच्चक्खाणं सम्मत्तं ॥

पयन्नो,
॥ ९९ ॥

आउर पच्चख्खाण पयन्नो.

देसिक्क देस विरउ सम्मदिठी मरिज्ज जो जीवो ॥
तं होइ वाल पंमिय ॥ मरणं जिण सासणे नणियं ॥ १ ॥

छकायनी हिंसामांथी देश जे त्रस. हिंसा तेनो एक देश जे मारवानी बुद्धिए निरअपराधी जीवनी निरपेक्षपणे हिंसा तेथी तथा जूठुं बोलवादिकथी निर्वृत्ति पाम्यो छतो जे समकित दृष्टि जीव मरे ते जिन-शासनने विषे पांच मरणमांनु बाळ पंडित मरण कहेलुं छे ॥ १ ॥

पंचय अणुवयाइं ॥ सत्तउ सिरकाउ देस जइ धम्मो ॥
सवेण व देसेण व ॥ तेण जुउ होइ देस जइ ॥ २ ॥

जिनशासनमां सर्व विरती अने देशविरती ए बे प्रकारनो यतिधर्म छे, तेमां देशविरती ने पांच अनुव्रतो अने सात शिक्षाव्रतो मळी श्रावकनां बार व्रत कह्यां छे, ते सर्व व्रतोए अथवा एक बे आदि व्रतरुप तेना देशे करीने युक्त जीव देशविरती होय ॥ २ ॥

पाणवह मुसावाए ॥ अदत्त परदार नियमणेहिं च ॥
अपरिमि इच्छाउ विय ॥ अणुव्वयाइं विरमणाइं ॥ ३ ॥

प्राणीनो वध, जूठुं बोलवुं, अदत्तादान, अने परस्त्रीनो नियम करवावडे करीने तेमज वळी परिमाणरहित इच्छाथकी नियम करवावडे पांच अनुव्रतो एटले नियमो थायछे ॥ ३ ॥

जं च दिसावेरमणं ॥ अणठ दंमाउ जं च वेरमणं ॥
देसावगासियं पिय ॥ गुणव्वयाइं नवे ताइं ॥ ४ ॥

जे दिग्विरमण व्रत, अने वळी अनर्थदंड थकी जे निवर्तवुं ते अनर्थदंड विरमण, वळी देसावगासिक पण (मळी) ते त्रण गुणव्रतो कहेवायछे ॥ ४ ॥

नोगाणं परिसंखा ॥ सामाइय अतिहि संविनागोय ॥
पोसह विही उ सव्वो ॥ चउरो सिरकाउ वुत्ताउ ॥ ५ ॥

भोग उपभोगनुं परिमाण, सामायिक, वळी अतिथिसंविभाग, पोषधविधि पण ए सर्वे (मळी) चार शिक्षाव्रत कहेलां छे ॥ ५ ॥

आसुक्कारे मरणे ॥ अछिन्नाए अ जीविआसाए ॥
नाएहिं व अमुक्को ॥ पछिम संलेहण मकिच्चा ॥ ६ ॥

उतावळुं मरण थये छते, अने जीवितव्यनी आशा नहि तुटे छते, अथवा स्वजनोए (संलेखना करवा-नी) रजा नहि आपे छते छेवटनी संलेखना कर्या विना ॥ ६ ॥

आलोइय निस्सल्लो ॥ सघरे चेवारुहितु संथारं ॥
जइ मरइ देसविरउ ॥ तं वुत्तं बाल पंडिअयं ॥ ७ ॥

शल्यरहित छतो पाप आलोवीने अने पोताना घरने विषे निश्चे संथारा उपर चढीने जो देशविरति छतो मरे तो ते वालपंडित मरण कहेवाय ॥ ७ ॥

जो भत्तपरिन्नाए ॥ उवक्कमो वित्थरेण निद्दिठो ॥
सो चेव बाल पंडिय ॥ मरणे नेउ जहाजुग्गं ॥ ८ ॥

जे विधि भक्तपरिज्ञाने विषे विस्तारथी बतावेलो छे ते नक्की वालपंडित मरणने विषे यथायोग्य जाणवो ॥ ८ ॥

वेमाणिएसु कप्पो ॥ वगेसु निअमेण तस्स उववाउ ॥
नियमा सिज्झइ उक्को ॥ सएण सो सत्तमंमि भवे ॥ ९ ॥

वैमानिक देवलोकना वार देवलोकने विषे निश्चये करीने तेनी उत्पत्ति थायछे, अने ते उत्कृष्टथी निश्चये करी सातमा भवने विषे सिद्ध थायछे ॥ ९ ॥

इय बालपंमियं होइ ॥ मरण मरिहंत सासणे दिठं ॥
इत्तो पंमिय पंमिय ॥ मरणं वुछं समासेणं ॥ १० ॥

जिनशासनने विषे आ बाल पंडित मरण कहेलुं छे, हवे पंडित मरण कोने कहेवुं ते संक्षेपे करीने कहुंछुं ॥ १० ॥

इछामि त्नंते उत्तमठं पमिक्कमामि ॥ अइयं पमिक्कमामि ॥ अणागयं पमिक्कमामि पच्चुपन्नं पमिक्कमामि. कयं पमिक्कमामि कारियं पमिक्कमामि अणुमोइयं पमिक्कमामि मिछत्तं पमिक्कमामि असंजमं पमिक्कमामि कसायं पमिक्कमामि पावपउगं पमिक्कमामि मिछादंसण परिणामेसु वा इहलोगेसु वा परलोगेसु वा सच्चित्तेसु वा अचित्तेसु वा पंचसु इंदियछेसु वा अन्नाणं झाणे १ अणायारं झाणे २ कुदंसणं झाणे ३ कोहं झाणे ४ माणं झाणे ५ मायं झाणे ६ लोहं झाणे ७ रागं झाणे ८ दोसं झाणे ९ मोहं झाणे १० इछं झाणे ११ मिछं झाणे १२ मुछं झाणे १३ संकं झाणे १४ कंखं झाणे १५ गेहिं झाणे १६ आसं झाणे १७ तन्हं झाणे १८ बुहं झाणे १९ पंथं झाणे २० पंथाणं झाणे २१ निदं झाणे २२ नियाणं झाणे २३ नेहं झाणे २४ कामं झाणे २५ कलुसं झाणे २६ कलहं झाणे

२७ जुज्झं झाणे २८ निजुज्झं झाणे २९ संगं झाणे ३० संगहं झाणे ३१ ववहारं झाणे ३२ कय विक्कयं झाणे ३३ अणत्थ दंडं झाणे ३४ आभोगं झाणे ३५ अणाभोगं झाणे ३६ अणाइल्लं झाणे ३७ वेरं झाणे ३८ वियक्कं झाणे ३९ हिंसं झाणे ४० हासं झाणे ४१ पहासं झाणे ४२ पओसं झाणे ४३ फरुसं झाणे ४४ भयं झाणे ४५ रूवं झाणे ४६ अप्पपसंसं झाणे ४७ परनिंदं झाणे ४८ परगरिहं झाणे ४९ परिग्गहं झाणे ५० पर परिवायं झाणे ५१ परदूसणं झाणे ५२ आरंभं झाणे ५३ संरंभं झाणे ५४ पावाणुमोयणं झाणे ५५ अहिगरणं झाणे ५६ असमाहि मरणं झाणे ५७ कम्मोदय पच्चयं झाणे ५८ इड्ढी गारवं झाणे ५९ रसगारवं झाणे ६० सायागारवं झाणे ६१ अवेरमणं झाणे ६२ अमुत्ति मरणं झाणे ६३ पसुत्तस्स वा पडिबुद्धस्स वा जो मे कोइ देवसिओ राइओ उत्तमट्ठे अइक्कमो वइक्कमो अइयारो अणायारो तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

हे भगवंत ! अनशन माटे सामान्यपणे पाप व्यापार पडिक्कमुंछुं, गइ वखतनो हुं पडिक्कमुंछुं, भविष्यमां थवानाने हुं पडिक्कमुंछुं, वर्तमानकाळना पापने हुं पडिक्कमुंछुं, करेला पापने पडिक्कमुंछुं, करावेला पापने पडिक्कमुंछुं, अनुमोदेला पापने पडिक्कमुंछुं, मिथ्यात्वने पडिक्कमुंछुं, अविरतिने पडिक्कमुंछुं, कषायने पडिक्कमुंछुं,

पाप व्यापारने पडिक्कमुंछुं, मिथ्यादर्शन परिणामने विषे, आ लोकने विषे, परलोकने विषे, सचितने विषे, अचितने विषे, पांच इंद्रियना विषयने विषे, अज्ञान सारु एम चितवे छते १, खोटो आचार चितवे छते २, बौद्धादिक दर्शन सारुं एम चितवे छते ३, क्रोधवशे चितवे छते ४, मान वश थइ चिंतवे छते ५, माया वश थइ चितवे छते ६, लोभ वश थइ चिंतवे छते ७, रागने वश थइ चितवे छते ८, द्वेषने वश थइ चितवे छते ९, अज्ञान वश थइ चिंतवे छते १०, पुद्गल पदार्थ अने यश आदिकनी इच्छा वशे चितवे छते ११, मिथ्या दृष्टिपणे चितवे छते १२, मुर्च्छा वश थइ चिंतवे छते १३, संशय थकी चिंतवे छते १४, अन्यमतनी वांछाए करी चिंतवे छते १५, घर विषे चिंतवे छते १६, बीजानी वस्तु पामवानी वांछा थकी चितवे छते १७, तरस लागवाथी चिंतवे छते १८, भुखथी चिंतवे छते १९, सामान्य मार्गमां चालता छतां चितवे छते २०, विषमार्गमां चालतां छता चिंतवे छते २१, निद्रामां चितवे छते २२, नियाणुं चिंतवे छते २३, स्नेहवशे चितवे छते २४, विकारना वशे चिंतवे छते २५, चित्तना डोहोलाण थकी चितवे छते २६, क्लेश करावता चितवे छते, २७ सामान्य युद्धने विषे चितवे छते २८, महा युद्धने विषे चितवे छते २९, संग चिंतवे छते ३०, संग्रह चितवे छते ३१, राजसभामां न्याय करावता माटे चितवे छते ३२, खरिद करवा वेचवा माटे चितवे छते ३३, अनर्थ दंड चितवे छते ३४, ऊपयोग सहित चितवे छते ३५, अनुपयोगे चिंतवे छते ३६, माथे देवुं होय तेना वशे चितवे छते ३७, वेर चितवे छते ३८, तर्क वितर्क चितवे छते ३९, हिंसा चितवे छते ४० हास्यना वश थइ चिंतवे छते ४१, अतिहास्यना वश थइ चितवे छते ४२, अति रोषे करी चिंतवे छते ४३,

कठोर पाप कर्म चिंतवे छते ४४, भय चिंतवे छते ४५, रुप चिंतवे छते ४६, पोतानी प्रशंसा चिंतवे छते ४७, बीजानी निंदा करतां चिंतवे छते ४८, बीजानी गर्हा करतां चिंतवे छते ४९, धनादिक परिग्रह मेळववाने चिंतवे छते ५०, बीजाने क्लेश आपवानुं चिंतवे छते ५१, बीजाने माथे पोतानुं दुषण चढाववा चिंतवे छते ५२, आरंभ चिंतवे छते ५३, विषयना तिव्र अभिलाषथी चिंतवे छते ५४, पाप कार्य अनुमोदवारुप चिंतवे छते ५५, जीवहिंसाना साधनोने मेळववानुं चिंतवे छते ५६, असमाधिए मरवुं एम चिंतवे छते ५७, गाढ कर्मना उदय थकी चिंतवे छते ५८, ऋद्धिना अभिमाने करी चिंतवे छते ५९, सारा भोजनना अभिमाने करी चिंतवे छते ६०, सुखना अभिमाने करी चिंतवे छते ६१, अविरति सारी एम चिंतवे छते ६२, संसार सुखना अभिलाष सहित मरण करतां चिंतवे छते ६३, दिवस संबंधी अथवा रात्री संबंधी सुतां छतां अथवा जागतां छतां, कोइ पण अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय तेनो मने मिच्छामिदुक्कडं हो.

एस करेमि पणामं, जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ॥
सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥ ११ ॥

जिनने विषे वृषभ समान वर्द्धमान स्वामीने वळी गणधर सहित बाकीना सर्व तिर्थंकरोने हुं आ नमस्कार करुंछुं ॥ ११ ॥

सव्वं पाणारंभं ॥ पच्चक्खामित्ति अलिय वयणं च ॥
सव्व मदिन्ना दाणं ॥ मेहुन्न परिग्गहं चेव ॥ १२ ॥

आ प्रकारे सर्व प्राणीओना आरंभने, अलिक (असत्य) वचनने, सर्व अदत्तादान (चोरीने), मैथुन अने परिग्रहने पच्चक्खुंछुं ॥ १२ ॥

सम्मं मे सव्व भूएसु ॥ वेरं मज्झ न केणइ ॥
आसाउ वोसिरित्ताणं ॥ समाहिमणुपालए ॥ १३ ॥

मारे सर्व प्राणी विषे मित्रपणुं छे, कोइनी साथे मारे वेर नथी, सर्व वांच्छाओने त्याग करीने हुं समाधि राखुंछुं ॥ १३ ॥

सव्वं चाहार विहिं ॥ सन्नाउ गारवे कसाए अ ॥
सव्वं चेव ममत्तं ॥ चएमि सव्वं खमावेमि ॥ १४ ॥

सर्व प्रकारना आहारने, संज्ञाओने, गारवोने, अने कषायोने अने सर्व ममताने त्याग करुंछुं; सर्वने खमावुंछुं ॥ १४ ॥

हुज्ज इमंमि समये ॥ उवक्कमो जीविअस्स जइ मज्झ ॥
एअं पच्चक्खाणं ॥ विउला आराहणा होउ ॥ १५ ॥

जो मारा जीवितनो उपक्रम (आउखानो नाश) आ अवसरमां होय तो आ पचक्खाण अने विस्तारवाळी आराधना थाओ ॥ १५ ॥

सव्व दुक्ख पहीणाणं ॥ सिद्धाणं अरहओ नमो ॥
सद्दहे जिण पन्नत्तं ॥ पच्चक्खामि अ पावगं ॥ १६ ॥

सर्व दुःख क्षय थयां छे जेमनां एवा सिद्धोने, अरिहंतने नमस्कार हो, जिनेश्वरोए कहेलुं तत्त्व हुं सद्दहुं-छुं, पापकर्मने पच्चख्खुंछुं ॥ १६ ॥

नमुत्थु धुअ पावाणं ॥ सिद्धाणं च महेसिणं ॥
संथारं पडिवज्जामि ॥ जहा केवलि देसिअं ॥ १७ ॥

जेमनां पाप क्षय थयांछे एवा सिद्धोने तथा महा ऋषीओने नमस्कार हो, जेवो केवळीए बताव्यो छे तेवो संथारो हुं अंगीकार करुंछुं ॥ १७ ॥

जं किंचिवि दुच्चरिअं ॥ तं सव्वं वोसिरामि तिविहेणं ॥
सामाइयं च तिविहं ॥ करेमि सव्वं निरागारं ॥ १८ ॥

जे कांइ पण खोटुं आचर्युं होय ते सर्वने मन, वचन, कायाए करी वोसिरावुं छुं, वळी सर्व आगाररहित (ज्ञान, श्रद्धा अने क्रियारुप) त्रण प्रकारनुं सामायक करुंछुं ॥ १८ ॥

बज्झं अब्भितरं उवहिं ॥ सरीराइ सभोयणं ॥
मणसा वय कायेहिं ॥ सव्वं भावेण वोसिरे ॥ १९ ॥

बाह्य, अभ्यंतर, उपधि, अने शरीरादि भोजन सहित मन, वचन, कायाएकरीने सर्वने भावथकी वोसिरावुंछुं ॥ १९ ॥

सव्वं पाणारंभं ॥ पच्चक्खामित्ति अलिय वयणं च ॥
सव्व मदिन्नादाणं ॥ मेहुन्न परिग्गहं चेव ॥ २० ॥

आ प्रकारे सर्व प्राणीओना आरंभने अलिक (असत्य) वचनने सर्व अदत्तादान (चोरीने) मैथुन अने परिग्रहने पच्चक्खुंछुं ॥ २० ॥

सम्मं मे सव्व भूएसु ॥ वेरं मज्झ न केणइ ॥
आसाउ वोसिरित्ताणं समाहि मणुपालये ॥ २१ ॥

मारे सर्व प्राणी विषे मित्रपणुं छे, कोइनी साथे मारे वेर नथी, सर्व वांच्छाओने त्याग करीने हुं समाधि राखुंछुं ॥ २१ ॥

रागं बंधं पओसं च ॥ हरिसं दीण भावयं ॥
उस्सुगत्तं भयं सोगं ॥ रइं अरइं च वोसिरे ॥ २२ ॥

बंधना कारणभूत रागने तथा द्वेषने, हर्षने, रांकपणाने, चपलपणाने, भयने, शोकने, रतिने, अरतिने वोसिरावुंछुं ॥ २२ ॥

ममत्तं परिवज्जामि ॥ निम्ममत्तं उवट्ठिउ ॥
आलंवणं च मे आया ॥ अवसेसं च वोसिरे ॥ २३ ॥

ममतारहितपणामां तत्पर थयो छतो ममतानो त्याग करुंछुं वळी मने आत्मा आलंवन भूत छे बीजा सर्व पदार्थने वोसिरावुछुं ॥ २३ ॥

आया हु महं नाणे ॥ आया मे दंसणे चरित्ते अ ॥
आया पच्चक्खाणे ॥ आया मे संजमे जोगे ॥ २४ ॥

निश्चे मने ज्ञानमां आत्मा, दर्शनमां अने चारित्रमां मने आत्मा, पचक्खाणमां मने आत्मा, संजमजोगमां मने आत्मा (आलंवन) थाओ ॥ २४ ॥

एगो वच्चइ जीवो ॥ एगो चेवुववज्जइ ॥
एगस्स चेव मरणं ॥ एगो सिज्झइ नीरउ ॥ २५ ॥

जीव एकलो जाय छे, नक्की एकलो उपजेछे, एकलाने ज मरण पण थायछे, अने कर्मरहित थयो छतो एकलोज सिद्ध थायछे ॥ २५ ॥

एगो मे सासउ अप्पा ॥ नाण दंसण संजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा भावा ॥ सव्वे संजोग लक्खणा ॥ २६ ॥

ज्ञान, दर्शन सहित मारो आत्मा एक शाश्वतो छे, बाकीना मारे बाह्य पदार्थो सर्वे संबधमात्र स्वरूपवाळा छे ॥ २६ ॥

संजोग मूला जीवेण ॥ पत्ता दुक्क परंपरा ॥
तम्हा संजोग संबंधं ॥ सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ १७ ॥

संबंध छे मूल ते जेनुं एवी दुःखनी परंपरा आ जीवे मेळवी ते माटे सर्वे संजोग संबंधने मन, वचन ने कायाए करी वोसिरावुंछुं ॥ २७ ॥

मूल गुण उत्तर गुणे ॥ जे मे नाराहिया पयत्तेणं ॥
तमहं सव्वं निंदे ॥ पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ १८ ॥

प्रयत्नवडे जे मूळगुणो अने उत्तरगुणो में न आराध्या ते सर्वने हुं निंदुंछुं आवता काळनी विराधनाने पडिक्कमुंछुं ॥ २८ ॥

सत्त भए अठ मए ॥ सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि ॥
आसायण तित्तीसं ॥ रागं दोसं च गरिहामि ॥ १९ ॥

सात भय, आठ मद, चार संज्ञा, त्रण गारव, तेत्रीश आशातना, राग अने द्वेषने गरहुंछुं ॥ २९ ॥

असंजम मन्नाणं ॥ मिछत्तं सव्वमेव य ममत्तं ॥

जीवेसु अजीवेसु अ ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३० ॥

जीवमां अने अजीवमां अविरतिने, अज्ञानने, मिथ्यात्वने वळी सर्व ममताने निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥३०॥

निंदामि निंदणिज्जं ॥ गरिहामि अ जं च मे गरहणिज्जं ॥

आलोएमि अ सव्वं ॥ अभिंतरं बाहिरं उवहिं ॥ ३१ ॥

निंदवा योग्यने हुं निंदुंछुं अने जे मने गरहवा योग्य छे ते गरहुंछुं सर्व अभ्यंतर अने बाह्य उपधि (माया) ने हुं आलोउंछुं ॥ ३१ ॥

जह बालो जंपंतो ॥ कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ ॥

तं तह आलोइज्जा ॥ मायामोसं पमुत्तूणं ॥ ३२ ॥

जेम बालक बोलतो छतो कार्य, अकार्यने सरळपणे कहेछे तेम ते पापने माया मृषावाद मूकीने तेवी रीते आलोवे ॥ ३२ ॥

नाणंमि दंसणंमि अ ॥ तवे चरित्ते अ चउसु वि अकंपो ॥

धीरो आगम कुसलो ॥ अपरिस्सावि रहस्साणं ॥ ३३ ॥

ज्ञानमां, दर्शनमां तपमां अने चारित्रमां ए चारेमां अचलायमान, धीर, आगममां कुशल, कहेला गुप्त पापो नहि कहेनार (तेवा गुरु पासे आलोयण लेवी जोइए) ॥ ३३ ॥

रागेण दोसेणव ॥ जं, जे अकयन्नुआ पमाएणं ॥
जो मे किंचिवि जणिउ ॥ तमहं तिविहेण खामेमि ॥ ३४ ॥

रागे करी, द्वेषे करी, अथवा जे तमारुं अहित अकृतज्ञपणाए करी अने प्रमादे करी बीजाने में कंइक कह्युं होय ते हुं मन, वचन, कायाए करी खमावुंछुं. ॥ ३४ ॥

तिविहं जणंति मरणं ॥ बालाणं बालपंमियाणं च ॥
तइयं पंमिय मरणं ॥ जं केवलिणो अणुमरंति ॥ ३५ ॥

मरण त्रण प्रकारनुं कहेछे (१) वाळकोनुं (२) बाळ पंडितोनुं (३) पंडित मरण जेणे करी केवलीओ मरण पामेछे ॥ ३५ ॥

जे पुण अठ–मइया ॥ पयलिय सन्नाय वक्कभावा य ॥
असमाहिणा मरंति ॥ न हु ते आराहगा जणिआ ॥ ३६ ॥

वळी जे आठ मदवाळा छे ते, नाश पामी छे बुद्धि जेमनी एवा, वक्रपणाने धारण करनारा असमाधिए मरेछे, निश्चे ते आराधक कहेला नथी ॥ ३६ ॥

मरणे विराहिए ॥ देव दुग्गई दुल्लहा य किर बोही ॥
संसारो य अणंतो ॥ हवइ पुणो आगमिस्साणं ॥ ३७ ॥

मरण विराधे छते देवतामां दुर्गति थाय तेम सम्यक्त्व पामवुं दुर्लभ थइ पडे अने वळी आवता काळमां अनंत संसार थाय ॥ ३७ ॥

का देव डुग्गई का ॥ अबोहि केणेव वुझई मरणं ॥
केण अणंतं पारं ॥ संसारं हिंमई जीवो ॥ ३८ ॥

देवनी दुर्गति कयी? अबोधि शुं? शा हेतुए (वारंवार) मरण थाय? कया कारणे संसारमां जीव अनंतकाळ सुधी भमे ॥ ३८ ॥

कंदप्प देव किव्विस ॥ अभिओगा आसुरीअ संमोहा ॥
ता देव डुग्गईओ ॥ मरणंमि विराहिए हुंति ॥ ३९ ॥

मरण विराधे छते कंदर्प देव, किलविष्या देव (ढेड देव), चाकर देव, दास देव, अने संमोहा देव ए पांच दुर्गतिओ थायछे ॥ ३९ ॥

मिच्छा दंसण रत्ता ॥ सनियाणा किन्ह लेसमो गाढा ॥
इह जे मरंति जीवा ॥ तेसिं डुलहा भवे बोही ॥ ४० ॥

आ संसारमां मिथ्यादर्शनमां रक्त, नियाणा सहित, कृष्ण लेश्यावाळा जे जीवो मरण पामे तेओने बोधि बीज दुर्लभ थायछे ॥ ४० ॥

सम्मदंसण रत्ता ॥ अनियाणा सुक्कलेसमो गाढा ॥
इह जे मरंति जीवा ॥ तेसिं सुलहा जवे बोही ॥ ४१ ॥

आ संसारमां सम्यक् दर्शनमां रक्त, नियाणा रहित, शुक्ल लेश्यावाळा जे जीवो मरण पामेछे ते जीवोने बोधि बीज (समकित) सुलभ थायछे ॥ ४१ ॥

जे पुण गुरु पडिणीआ ॥ बहुमोहाससबला कुसीलाय ॥
असमाहिणा मरंति ॥ ते हुंति अणंत संसारि ॥ ४२ ॥

जेओ वळी गुरुना शत्रुभूत, घणा मोहवाळा, दुषण सहित, कुशील अने असमाधिए मरण पामेछे तेओ अनंत संसारी थायछे ॥ ४२ ॥

जिणवयणे अणुरत्ता ॥ गुरुवयणं जे करंति जावेणं ॥
असबल असंकिलिठा ॥ ते हुंति परित्त संसारि ॥ ४३ ॥

जिन वचनमां रागवाळा, गुरुनु वचन भावे करीने जेओ करेछे, दुषण रहित, संक्लेष रहित होयछे, तेओ थोडा संसारवाळा थायछे ॥ ४३ ॥

बाल मरणाणि बहुसो ॥ बहुआणि अकामगाणि मरणाणि ॥
मरिहंति ते वराया ॥ जे जिणवयणं न याणंति ॥ ४४ ॥

जे जिन वचनने नथी जाणता ते बीचारा बाळमरणो अने घणी वार इच्छा रहितपणे मरण पामशे ॥

सत्थग्गहणं विस भरकणं च ॥ जलणं च जलप्पवेसो अ ॥
अणायार भंमसेवी ॥ जंमण मरणाणु बंधीणि ॥ ४५ ॥

शस्त्र ग्रहण, विष भक्षण, वळी मरवुं, पाणीमां बुडी मरवुं, अनाचार तथा अधिक उपगरण सेवनार,एजन्म मरणनी परंपरा वधारनारछो॥ ४५ ॥

उड्ढमहे तिरियंमि वि ॥ मयाणि जीवेण बालमरणाणि ॥
दंसण नाण सहगउ ॥ पंडिय मरणं अणुमरिस्सं ॥ ४६ ॥

उंचा, नीचा अने तिर्च्छा (लोक) मां जीवे बाळमरणो कर्यां, हुं दर्शन, ज्ञाने सहित थको पंडित मरणे मरीश ॥ ४६ ॥

उव्वेयणयं जाई ॥ मरणं नरएसु वेअणाउ अ ॥
एआणि संभरंतो ॥ पंडिय मरणं मरसु इन्हिं ॥ ४७ ॥

उद्वेग करनारां जन्म मरण अने नरकने विषे जे थएली वेदनाओ, एओने संभारतो छतो हमणां पंडित मरणे मर ॥ ४७ ॥

जइ उपज्जइ दुरकं ॥ तो दठ्ठवो सहावउ नवरं ॥

किं किं मए न पत्तं ॥ संसारं संसरंतेणं ॥ ४८ ॥

जो दुःख उत्पन्न थाय तो स्वभाव थकी तेनी विशेष उत्पत्ति जोवी; संसारमां भमतां छतां हुं शुं शुं दुःख नथी पाम्यो ॥ ४८ ॥

संसार चक्कवाले ॥ सवेविय पुग्गला मए बहुसो ॥
आहारिआय परिणा ॥ मिआय न यहं गउ तत्तिं ॥ ४९ ॥

वळी में घणी वखत संसारचक्रमां सर्वे पण पुद्गलो खाधा, तेमज परिणमाव्या, (तोपण) हुं तृप्ति पाम्यो नहिं ॥ ४९ ॥

तण कठेहि व अग्गी ॥ लवण जलोवा नई सहस्सेहिं ॥
न इमो जीवो सक्को ॥ तप्पेउं कामभोगेहिं ॥ ५० ॥

तरणां लाकडाए करी जेम अग्नि अने हजारो नदीओए करीने जेम लवणसमुद्र (तृप्ति पामतो नथी) तेम कामभोगोए करीने आ जीव तृप्ति पामतो नथी ॥ ५० ॥

आहार निमित्तेणं ॥ मछा गछंति सत्तमीं पुढवीं ॥
सच्चित्तो आहारो ॥ न खमो मणसावि पच्छेउं ॥ ५१ ॥

आहारना कारणे करी (तंदुलीआ) मच्छो सातमीं नरक भूमिए जायछे. माटे सचित्त आहार मने करीने पण प्रार्थना करवा योग्य नथी ॥ ५१ ॥

पुव्विं कय परिकम्मो ॥ अनिआणो ऊहिऊण मइ-बुद्धिं ॥
पच्छा मलिअ कसाओ ॥ सज्जो मरणं पडिच्छामि ॥ ५२ ॥

प्रथम अभ्यास कर्यो छे जेणे, अने नियाणा रहित थयो छतो, मति अने बुद्धिथीज विचारीने पछी नाश कर्या छे कषाय जेणे, एवो छतो जलदी मरण अंगीकार करुंछुं ॥ ५२ ॥

अकंडे चिरभाविय ॥ ते पुरिसा मरण देस कालंमि ॥
पुव्व कय कम्म परिभा ॥ वणाइ पच्छा परिवडंति ॥ ५३ ॥

लांबा वखतना अभ्यास विना अकाळे (अणसण करनारा) ते पुरुषो पूर्वे करेला कर्मोना प्रभावे करी पाछा पडेछे (दुर्गतिए जायछे) ॥ ५३ ॥

तम्हा चंदग विज्झं ॥ सकारणं उज्जुएण पुरिसेण ॥
जीवो अविरहिअ गुणो ॥ कायव्वो मुक्ख मग्गंमि ॥ ५४ ॥

ते माटे राधावेधनी पेठे हेतु सहित उद्यमवाळा पुरुषोए मोक्ष मार्ग साधवा माटे पोतानो आत्मा ज्ञानादि गुण सहित करवो ॥ ५४ ॥

जइ तंमि देसकाले ॥ अमूढ सन्नो चयइ देहं ॥
बाहिर जोग विरहिओ ॥ अप्रिंतर झाण जोग मल्लीणो ॥ ५५ ॥

ते अवसरने विषे सावधान मनवाळो, पुद्गलिक व्यापारे रहित अने आत्माना स्वरुप चिंतवनना व्यापारने करनारनी पेठे शरीरने छांडी दे ॥ ५५ ॥

हंतूण राग दोसं ॥ भित्तूण य अठ कम्म संघायं ॥
जम्मण मरण रहट्टं ॥ भित्तूण भवा विमुच्चिहिसि ॥ ५६ ॥

राग द्वेषने हणीने, आठ कर्मोना समुहनो नाश करीने, जन्म अने मरणरुप अर्हट्टने भेदीने संसारथी मूकाशे ॥ ५६ ॥

एवं सव्वुवएसं ॥ जिणदिठं सद्दहामि तिविहेणं ॥
तस थावर खेमंकरं ॥ पारं निव्वाण मग्गस्स ॥ ५७ ॥

आ प्रकारे त्रस अने स्थावरने कल्याण करनार, मोक्ष मार्गनो पार पमाडनार जिनेश्वरे बतावेलो सर्व उपदेश मन, वचन, कायाए करी सद्दहुंछुं ॥ ५७ ॥

नहि तंमि देसकाले ॥ सक्को बारसविहो सुअरकंधो ॥

सव्वो अणुचिंतेउं ॥ धणियंपि समच्छचित्तेणं ॥ ५८ ॥

ते अवसरने विषे अतिशय समर्थ चित्तवाळाए पण बार अंगरुप सर्व श्रुत स्कंध चिंतववां शक्य नथी ॥

एगंमिवि जंमि पए ॥ संवेगं वीअराय मग्गंमि ॥

गच्छइ नरो अभिक्खं ॥ तं मरणं तेणमरिअव्वं ॥ ५९ ॥

वितरागना मारगमां जे एक पण पदने विषे मनुष्य वांरवार वैराग्य पामे तेणे करी सहित जे मरवुं ते मरण मरवा योग्य छे ॥ ५९ ॥

ता एगंपि सिलोगं ॥ जो पुरिसो मरण देस कालंमि ॥

आराहणो वउत्तो ॥ चिंततो आराहगो होइ ॥ ६० ॥

ते माटे जे पुरुष मरणना अवसरमां आराधनाना उपयोगवाळो एक पण श्लोक चिंतवतो रहे तो ते आराधक थायछे ॥ ६० ॥

आराहणो वउत्तो ॥ कालं काऊण सुविहिउ सम्मं ॥

उक्कोसं तिन्नि भवे ॥ गंतूण लहइ निव्वाणं ॥ ६१ ॥

आराधना करवाना उपयोगवाळो, रुडा आचारवाळो, रुडी रीते काळ करीने उत्कृष्टथी त्रण भव करीने मोक्ष पामेछे ॥ ६१ ॥

समणु त्तिअहं पढमं ॥ बीअं सव्वछ संजउ मित्ति ॥
सव्वं च वोसिरामि ॥ एअं भणियं समासेणं ॥ ६२ ॥

प्रथम तो हुं साधु छुं, बीजुं सर्व पदार्थोमां संयमवाळो छुं (तेथी) हुं वळी सर्वने वोसिरावुंछुं, आ संक्षेपे करी कयुं ॥ ६२ ॥

लद्धं अलद्धपुव्वं ॥ जिणवयण सुभासिअं अमयभूअं ॥
गहिउ सुगइमग्गो ॥ नाहं मरणस्स बीहेमि ॥ ६३ ॥

जिनेश्वर भगवानना आगममां कहेलुं, अमृत सरखुं अने पूर्वे नहि पामेलुं एवुं (आत्मतत्त्व) हुं पाम्यो अने सिद्धि गतिनो मार्ग ग्रहण कर्यो तो हुं मरणथी बीतो नथी ॥ ६३ ॥

धीरेण वि मरियव्वं ॥ काउरिसेण वि अवस्स मरियव्वं ॥
दुन्हं हु मरियव्वे ॥ वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥ ६४ ॥

धीर पुरुषे पण मरवुं पडेछे, अने कायर पुरुषे पण अवश्य मरवुं पडेछे, बंनेने पण निश्चये करी मरवानु छे, तो धीरपणे मरवु ए निश्चे सुंदर छे ॥ ६४ ॥

सिलेण वि मरियव्वं ॥ निस्सीलेणवि अवस्स मरियव्वं ॥
दुन्हंपि हु मरियव्वे ॥ वरं खु सीलत्तणे मरिउं ॥ ६५ ॥

शीलवाळाए पण मरवुं पडेछे, शीलरहित माणसे पण अवश्य मरवुं पडेछे, बंनेने पण निश्चय करी मरवानुं छे, तो शील सहित मरवुं ए निश्चे सुंदर छे ॥ ६५ ॥

नाणस्स दंसणस्स य ॥ सम्मत्तस्स य चरित्त जुत्तस्स ॥
जो काहि उवओगं ॥ संसारा सो विमुच्चिहिसि ॥ ६६ ॥

जे कोइ चारित्र सहित ज्ञानमां दर्शनमां अने सम्यक्त्वमां सावधानपणुं करशे ते विशेषे करी संसारथकी मूकाशे ॥ ६६ ॥

चिरउसिअ बंभयारी ॥ पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं ॥
अणुपुव्वीइ विसुद्धो ॥ गच्छइ सिद्धिं धुअकिलेसो ॥ ६७ ॥

घणा काळ सेव्युं छे ब्रह्मचर्य जेणे ते बाकीना कर्मनो नाश करीने तथा सर्व क्लेशनो नाश करीने अनुक्रमे शुद्ध थयो छतो सिद्धिमां जाय ॥ ६७ ॥

निक्कसायस्स दंतस्स ॥ सूरस्स ववसाइणो ॥
संसार परित्तीअस्स ॥ पच्चक्खाणं सुहं भवे ॥ ६८ ॥

कषाय रहित, दान्त, (पांच इंद्रियो अने छठ्ठा मनने दमन करनार,) शुरवीर अने उद्यमवंत तथा संसारथी भय भ्रांत थएलो एवानुं पचख्खाण रूडुं होय ॥ ६८ ॥

एअं पच्चरकाणं ॥ जो काही मरण देस कालंमि ॥
धीरो अमूढसन्नो ॥ सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥ ६९ ॥

धीर अने मुझवण रहित ज्ञानवाळो मरणना अवसरे जे आ पचख्खाण करशे ते उत्तम स्थानकने पामशे ॥ ६९ ॥

धीरो जरमरण विऊ ॥ धीरो (वीरो पाठांतरं) विन्नाण नाण संपन्नो ॥
लोगस्सुज्जोअगरो ॥ दिसउ खयं सव्वदुख्काणं ॥ ७० ॥

धीर, जरा अने मरणने जाणनार, ज्ञान दर्शने करीने सहित, लोकमां उद्योतना करनार एवा धीर (वीर जीनेश्वर) सर्व दुःखोनो क्षय ॥ ७० ॥

॥ श्री आउर पच्चरकाण समाप्त ॥

आराधना पयन्नो.

नमिऊण भणइ एवं ॥ भयवं समुचियं समाइससु ॥
तत्तो वागरइ गुरु ॥ पज्जंताराहणं एयं ॥ १ ॥

श्री गुरु महाराजने नमस्कार करीने आ प्रमाणे शिष्य कहे के हे भगवन् ! मने समयने उचित आदेश करो (आराधना करावो) त्यारे गुरु-महाराज छेवटनी आराधना आ प्रमाणे भणे ॥ १ ॥

आलोइसु अइयारे ॥ वयाइ उच्चरसु खमिसु जीवेसु ॥
वोसिरिसु भाविअप्पा ॥ अठारस पावठाणाइं ॥ २ ॥

१. अतिचार आलोवो· २ व्रत उच्चरो· ३ जीवाजोनी खमावो· ४ आत्माने भावीने अढार पाप स्थानक वोसिरावो ॥ २ ॥

चउसरण दुक्कड गरिहणं च ॥ सुकडाणुमोयणं कुणसु ॥
सुहभावणं अणसणं ॥ पंच नमुक्कार सरणं च ॥ ३ ॥

५ चार शरण आदरो. ६ पापनी निंदा करो. ७ सुकृतनी अनुमोदना करो. ८ शुभ भावना भावो. ९ अ-
णशण करो अने. १० पंच परमेष्ठिनुं ध्यान करो. ॥ ३ ॥

नाणंमि दंसणंमि य ॥ चरणंमि तवंमि तहय विरयंमि ॥

पंचविहे आयारे ॥ अइआरालोयणं कुणसु ॥ ४ ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने वीर्य ए पांच प्रकारना आचारने विषे अतिचारनी आलोयणा करो ॥

काल विणयाई अठ ॥ प्पयार आयार विरहियं नाणं ॥

जं किंचि मए पढियं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ५ ॥

१ काल. २ विनय. ३ बहु मान. ४ उपधान ५ गुरुने ओलववा. ६ शुद्ध सुत्र. ७ अर्थ. ८ सुत्र तथा अर्थ
बंने. ए आठ प्रकारमांथी आचार रहित हुं जे काइ भण्यो होउं तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो (ते पाप मारे
मिथ्या थाओ) ॥ ५ ॥

नाणीण जं न दिन्नं ॥ सइ सामछंमि वछ असणाइ ॥

जा विहिया य अवन्ना ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ६ ॥

छती शक्तिए वस्त्र अन्नादिक जे ज्ञानीओने में न आप्युं होय अने जे में तेमनी अवज्ञा करी होय तेनो
मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ ६ ॥

जे पंच भेअ नाणस्स ॥ निंदणं जो इमस्स उवहासो ॥
जो उ कउ उवघाउ ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ७ ॥

ज्ञानना पांच प्रकार, मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव अने केवल तेनी जे निंदा करी होय, अने वली तेमनी जे हांसी करी होय ते, तथा वली जे मे तेमनो उपघात कर्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ ७ ॥

नाणोवगरण भूयाणं ॥ कवलिया फलिह पुछियाईणं ॥
आसायणा कया जं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ८ ॥

ज्ञानोपगरणभूत जे कवली, पाटी पोथी विगेरेनी जे कांइ आशातना कीधी होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ ८ ॥

जं सम्मत्तं निस्सं ॥ कियाइ अठविह गुण समाउत्तं ॥
धरियं मए न सम्मं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ ९ ॥

निःशंकित, निःकंखित निर्वितिगिच्छा, अमुढ दिठ्ठि, उपबृंहणा, स्थिरिकरण, वात्सल्य, प्रभावना ए आठ प्रकारना गुणे सहित एवुं जे समकित मे न धारण कर्युं होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ ९ ॥

जं न जणिया जिणाणं ॥ जिण पडिमाणं च भावउ पूया ॥
जं च अभत्ति विहिया ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १० ॥

जे अरिहंतनी जिन प्रतिमानी भावथी पूजा न करी होय अने में अभक्ति करी होय, तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १० ॥

जं विरईऊ विणासो ॥ चेईय दवस्स जं विणासंतो ॥
अन्नो नविरिकिउ मे ॥ मिच्छामि डुक्कडं तस्स ॥ ११ ॥

चैत्य द्रव्यनो जे में विनाश कर्यो होय अने जे विनाश करता बीजा माणसने उवेख्यो होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ ११ ॥

आसायणं कुणंतो ॥ जं कइवि जिणंद मंदिराइसु ॥
सत्तीए न निसिद्धो ॥ मिच्छामि डुक्कडं तस्स ॥ १२ ॥

कोइ प्रकारे जिन मंदिरनी आदि आशातना करता एवा कोइ माणसने छती शक्तिए न निषेध्यो होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १२ ॥

जं पंचहिं समिइहिं ॥ तीहिं गुत्तीहिं संगयं सययं ॥
परिपालियं न चरणं ॥ मिच्छामि डुक्कडं तस्स ॥ १३ ॥

जे पांच समितिवडे अने त्रण गुप्तिवडे सहित एवुं चारित्र निरंतर में न पाल्युं होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १३ ॥

एगिंदियाण जं कहवि ॥ पुढवि जल जलण मारुय तरूणं ॥
जीवाण वहो विहिउ ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १४ ॥

पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति ए जे एकेंद्रि जीवोनो में कोइ पण रीते वध कर्यो होय, तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १४ ॥

किमि संख सुत्ति पुयर ॥ जलोय गंडोल अलसप्पमुहा ॥
वेइंदिया हया जं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १५ ॥

करमीया, शंख, छीप, पोरा, जलो, गंडोला, अलसीयां, प्रमुख वेइंद्रि जीवोने जे में हण्या होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १५ ॥

गद्दह कुंथु जूआ ॥ मंकुण मंकोड कीडियाईया ॥
तेइंदिया हया जं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १६ ॥

गद्धहीयां, कुंथुआ, जु, मांकण, मंकोडी, कीडी, विगेरे तेइंद्रि जीवोने जे में हण्या होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १६ ॥

करोलिय कुत्तिय विछू ॥ मछिया सलहछप्पय पमुहा ॥
चउरिंदिया हया जं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

करोलीया, कुंती, विंछी, मांख, पतंगिया, तीड, भमरा विगेरे जे में चौरिंद्रि जीव हण्या होय तेनो मारे मिच्छामि दुक्कडं हो ॥ १७ ॥

जलयर थलयर खयरा ॥ आउट्टि प्पमाय दप्प कप्पेसुं ॥
पंचिंदिया हया जं ॥ मिछामि डुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

जलचर, थलचर, खेचर विगेरेने १ निःशुकता, २ उपयोग शून्यता, ३ दर्प विगेरेथी जे में पंचिंद्रि जीव हण्या होय तेनो मारे मिच्छामि दुकडं हो ॥ १८ ॥

जं कोह लोह भय हास ॥ परवसेणं मए विमूढेणं ॥
जासिय मसच्च वयणं ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥ १ए ॥

जे क्रोध, लोभ, भय अने हास्यना परवश पणाथकी में मूर्खे असत्य वचन भाष्युं होय तेने हुं निदुंछुं अने गरहुंछुं ॥ १९ ॥

जं कवम वावमेण ॥ मए परं वंचिजए थोवंपि ॥
गहियं धणं अदिन्नं ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २० ॥

जे कपट व्यापारवडे में परने ठगीने थोडुं पण धन अण दीधुं लीधुं होय तेने हुं निदुंछुं अने गरहुंछु ॥

दिव्वं व मणुस्सं वा ॥ तेरिछं वा सराग हियएणं ॥

जं मेहुण मायरियं ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥ २१ ॥

देव संबंधी अथवा मनुष्य संबंधी अथवा तिर्यंच संबंधी सराग हृदयवडे करीने जे मैथुन सेव्युं होय ते हुं निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥ २१ ॥

जं धण धन्न सुवन्न ॥ पमुहंमि परिग्गहे नव विहेवि ॥
विहिउ ममत्त भावो ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २२ ॥

जे धन धान्य सुवर्ण प्रमुख नव विध परिग्रह (धन, धान्य खेत्र वास्तुक सोनुं रुपुं कुप्य द्विपद चतुष्पद) ने विषे जे ममता भाव कीधो होय ते हुं निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥ २२ ॥

जं राई भोयण विरमणाई ॥ नियमेसु विविह रूवेसु ॥
खलियं मइ संजायं ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २३ ॥

रात्रि भोजन विरमणादि विविध प्रकारना नियमोने विषे मने जे दोष लाग्यो होय ते हुं निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥ २३ ॥

बाहिर मब्भिंतरयं ॥ तवं दुवालस विहं जिणुद्दिठं ॥
जं सत्तीए न कयं ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २४ ॥

पयन्नो.

जिनेश्वर भगवंते भाषेला एवा बाह्य अने अभ्यंतर मली बार प्रकारना तपने जे यथाशक्ति न कर्या होय तेने हुं निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥ २४ ॥

जोगसु मुक्ख पह साहगेसु ॥ जं वीरियं न य पउत्तं ॥
मण वय काइएहिं ॥ तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २५ ॥

मोक्ष मार्गना साधक योगने विषे मन वचन कायाए करी जे वीर्य न फोरव्युं ते हुं निंदुंछुं अने गरहुंछुं ॥

पाणाइवाय विरमण ॥ पमुहाई तुमं दुवालस वयाई ॥
सम्मं परिन्नावंतो ॥ जणासु जहा गहिअ भंगाई ॥ २६ ॥

प्राणातिपात विरमण प्रमुख तमे बार व्रतोने सम्यक् प्रकारे रुडी रीते भावता जे भांगावडे लीधा होय ते भांगाए कहो ॥ ॥ २६ ॥

खामेसु सव्व सत्ते ॥ खमेसु तेसिं तुमं विगयकोवो ॥
परिहरिअ पुव्ववेरो ॥ सव्वे मित्तित्ति चिंतेसु ॥ २७ ॥

तमे कोप रहितपणे सर्व प्राणीमात्रने खमावो अने तेमनुं तमे खमो पूर्व (आगलनुं) वैर त्याग करीने सर्व मित्र छे एम चिंतवो ॥ २७ ॥

पाणाइवाय मलियं ॥ चोरिक्कं मेहुणं दविण मुच्छं ॥

कोहं माणं मायं ॥ लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ २८ ॥

१ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ चोरी, ४ मैथुन, ५ द्रव्यनी मूर्च्छा (परिग्रहनी लालच), ६ क्रोध, ७ मान, ८ माया, ९ लोभ, १० प्रेम, तथा ११ द्वेष ॥ २८ ॥

कलहं अप्भक्खाणं ॥ पेसुन्नं रइअरइ समाउत्तं ॥
परपरिवायं माया ॥ मोसं मिछत्त सल्लं च ॥ २९ ॥

१२ कलह, १३ अभ्याख्यान (आलदेवुं), १४ चाडी, १५ रतिअरति सहित, १६ परपरिवाद (पारका दोष), १७ मायामृषा, अने १८ मिथ्यात्व शल्य ॥ २९ ॥

वोसरिसु इमाइं ॥ मुक्ख मग्ग संसग्ग विग्घ भूयाइं ॥
दुग्गइ निबंधणाइं ॥ अठारस पावठाणाइं ॥ ३० ॥

आ मोक्ष मार्गना संसर्गने विघ्न भूत अने दुर्गतिना कारण एवां अढार पाप स्थानकोने वोसरावो. ॥

चउत्तीस अइसय जुआ ॥ अठ महा पाडिहेर पडिपुन्ना ॥
सुरविहिय समवसरणा ॥ अरिहंता मज्झ ते सरणं ॥ ३१ ॥

चोत्रीश आतिशय युक्त, आठ महा प्रातिहार्य सहित अने देवताए रचेलुं छे समवसरण जेमनुं एवा ते अरिहंत भगवानो मने शरण हो. ॥ ३१ ॥

चउविह कसाय चत्ता ॥ चउ वयणा चउ पयार धम्म कहा ॥
चउ गइ डुह निद्दलणा ॥ अरिहंता मझ ते सरणं ॥ ३२ ॥

चार प्रकारना (क्रोध, मान, माया, लोभ रूप) कषाय जेमणे त्याग कर्यो छे, चार मुखवाला, चार प्रकारनी धर्म कथा कहेनारा चार गतिना डुखने नाश करनारा अरिहंतो ते मने शरण हो ॥ ३२ ॥

जे अठ कम्म मुक्का ॥ वर केवल नाण मुणिय परमठा ॥
अठमय ठाण रहिया ॥ अरिहंता मझ ते सरणं ॥ ३३ ॥

जे आठ कर्मथी मुक्त छे अने प्रधान केवल ज्ञाने करी जाण्याछे परमार्थ जेमणे, आठ मदना स्थानक रहित एवा अरिहंतो ते मने शरण हो ॥ ३३ ॥

नव खित्ते अरुहंता ॥ नावारिप्पहरणेण अरिहंता ॥
जे तिजग पूअणिज्जा ॥ अरिहंता मझ ते सरणं ॥ ३४ ॥

जे अरिहंतो संसाररूप क्षेत्रमां उपजता नथी अने भाव अरि (राग अने द्वेष) ने हणवे करीने अरिहंत थया छे, जे त्रण जगतमां पूजनीक छे, एवा अरिहंतो ते मने शरण हो ॥ ३४ ॥

तरिऊण नव समुद्दं ॥ रउद्दं डुहलहरि लरक डुल्लंघं ॥
जे सिद्धि सुहं पत्ता ॥ ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ ३५ ॥

रौद्र अने दुःखनी लक्खोगमे लहेरोथी नहि ओलंघाय एवा संसार समुद्रने तरीने सिद्धि गतिनुं सुख तेने जे पाम्या छे ते सिद्धो मारे शरण हो ॥ ३५ ॥

जे भंजिऊण तव मुग्गरेणं ॥ निबिडाइं कम्म नियडाइ ॥
संपत्ता मुक्ख सुहं ॥ ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ ३६ ॥

तपरुपी मोगरवडे निबिड (आकरी) कर्मरुप बेडीने भागीने मोक्षरुप सुखनेजेपाम्या ते सिद्धोनुं मारे शरण हो

झाणानल जोगेणं ॥ जाए निद्दढ सयल कम्ममलो ॥
कणगं व जाए अप्पा ॥ ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ ३७ ॥

ध्यानरुपी अग्निना योगवडे जेमनो सकल कर्म रुप मेल बली गयो छे अने सोनानी पेठे जेमनो आत्मा निर्मळ थयो छे ते सिद्धोनुं मारे शरण हो ॥ ३७ ॥

जाए न जम्मो न जरा ॥ न वाहिणो न मरणं न बाबाहा ॥
न य कोहाइ कसाया ॥ ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ ३८ ॥

जेमने जन्म, जरा (घडपण) रोग, मरण अने अबाधा (पीडा) अने क्रोधादिक कषायो नथी ते सिद्धोनुं मारे शरण हो ॥ ३८ ॥

कानं महुअर वित्तिं ॥ जे बायालीस दोस परिसुद्धं ॥
भुंजंति भत्त पाणं ॥ ते सुणिणो हुंतु मे सरणं ॥ ३९ ॥

एवुं भोजन मधुकरी (भमरो फुलनी वास ले तेनी पेठे) वृत्ति करीने जे बेंतालीश दोषे करीने शुद्ध अने पाणी जमे छे ते मुनीओनुं मारे शरण हो ॥ ३९ ॥

पंचिंदिय दमण परा ॥ निज्जिय कंदप्प दप्प सरपसरा ॥
धारंति बंभचेरं ॥ ते मुणीणो हुंतु मे सरणं ॥ ४० ॥

पांच इंद्रियोने दमवामां तत्पर कंदर्पनो दर्प (कामदेवनो अहंकार) अने तेना बाणनो प्रसार जेमणे जीत्यो छे एवा अने ब्रह्मचर्य व्रतने धारण करे छे ते मुनिओ मारे शरण हो ॥ ४० ॥

जे पंच समिइ समिया ॥ पंच महव्वय भरुव्वहण वसहा ॥
पंचम गइ अणुरत्ता ॥ ते मुणिणो हुंतु मे सरणं ॥ ४१ ॥

जे पांच समितिए समिता, पांच महाव्रतना भारने उपाडवाने वृषभ सरखा, अने पंचमी गति (मोक्ष) मां अनुरक्त एवा ते मुनिओ मारे शरण हो ॥ ४१ ॥

जे चत्त सयल संगा ॥ सम मणि तिण मित्त सत्तुणो धीरा ॥
साहंति मुक्ख मग्गं ॥ ते मुणिणो हुंतु मे सरणं ॥ ४२ ॥

जेमणे सकल संग त्याग कर्यो छे, मणि अने तरणुं, मित्र अने शत्रु ए जेमने सरखा छे एवा जेओ धीर छे अने जे मोक्ष मार्गने साधे छे ते मुनिओ मारे शरण हो ॥ ४२ ॥

जो केवलनाण दिवायरेहिं ॥ तित्थंकरेहिं पन्नत्तो ॥

सव्व जग जीव हियउ ॥ सो धम्मो होउ मे सरणं ॥ ४३ ॥

जे केवलज्ञाने करीने सूर्यरूप एवा तिर्थंकरोए कहेलो अने सर्व जगतना जीवने हितकारी एवो धर्म ते मारे शरण हो ॥ ४३ ॥

कल्लाण कोडि जणणी ॥ जह अणत्थ प्पबंधाइ निद्दलणी ॥
वन्निज्जइ जीवदया ॥ सो धम्मो होउ मे सरणं ॥ ४४ ॥

क्रोड कल्याणने उत्पन्न करनारी अने अनर्थना समूहने नाश करनारी जीवदया ज्यां वर्णन कराय छे ते धर्म मारे शरण हो ॥ ४४ ॥

जो पाव भरुक्कंतं ॥ जीवं भीमंमि कुगइ कुवंमि ॥
धारिज्जई निवडमाणं ॥ सो धम्मो होउ मे सरणं ॥ ४५ ॥

पापना भारथी आक्रांत थएला जीवने भयंकर कुगतिरुप कुवाने विषे पडतां धारण करी राखे छे ते धर्म मारे शरण हो ॥ ४५ ॥

सग्गा पवग्ग पुरमग्ग ॥ लग्गा लोआणं सछवाहो जो ॥
भव अडविलंघण खमो ॥ सो धम्मो होउ मे सरणं ॥ ४६ ॥

देवलोक अने मोक्षरुप नगरना मार्गमां जनारा लोकोने सार्थवाह समान जे धर्म छे अने भवरुपी अटवी ओलंघवाने समर्थ छे ते धर्म मारे शरण हो ॥ ४६ ॥

एवं चनएइं सरणं पवन्नो ॥ निविन्न चित्तो नव चारगान ॥
जं डुक्कमं किंपि समरकमेसिं ॥ निंदामि सव्वंपि अहं तमिन्हिं ॥ ४७ ॥

ए प्रकारे चार शरणने अंगिकार करनारो भवरुपी बंदिखानाथी उदासीन छे चित्त जेनुं एवो, जे कांइ दुष्कृत कर्युं होय ते सर्व अहिं हुं एमना समक्ष निंदुं छुं ॥ ४७ ॥

जं इह मिच्छत्त विमोहिएणं ॥ मए नमंतेण कयं कुतित्थं ॥
मणेण वायाइ कलेवरेणं ॥ निंदामि सव्वंपि अहं तमिन्हिं ॥ ४८ ॥

जे मिथ्यात्वना विशेष.मोहवडे करीने में अहिआं भमतां मन, वचन अने कायावडे कुतीर्थ सेव्युं ते सर्वेने पण हुं अहिं निंदुछुं ॥ ४८ ॥

पच्छाइन जं जिण धम्म मग्गो ॥ मए कुमग्गा पयमी कन जं ॥
जान अहं जं परपावहेऊ ॥ निंदामि सव्वंपि अहं तमिन्हिं ॥ ४९ ॥

जे जिन धर्मना मार्गने ढांकी दीधो अने मे जे कुमार्ग प्रगट कर्यो, वली पारकाने पापनुं कारण हुं थयो ते सर्वेने पण हुं अहिआं निंदुंछुं ॥ ४९ ॥

जंताणि जं जंतु डुहावहाइं ॥ हलुक्खलाइणि मए कयाइं ॥
जं पोसियं पाव कुटुम्बयं तं ॥ निंदामि सव्वंपि अहं तमिन्हिं ॥ ५० ॥

जे जीवोने दुःख करनारा हल अने उखल (खांयणीओ) विगेरे यंत्रो मे कराव्यां वली पापे करीने कुटुंबने पोष्युं ते सर्वने पण अहिआं हुं निदुंछुं ॥ ५० ॥

जिण भवण बिंब पुछय ॥ संघ सरुवाइ सत्त खित्ताइं ॥
जं ववियं धण बीयं ॥ तमहं अणुमोअए सुकयं ॥ ५१ ॥

१. जिन भवन (देरासर). २ जिन प्रतिमा. ३ पुस्तक ४ चतुर्विध संघ ए सात क्षेत्रोने विषे जे धनरुपी बीज वाव्युं होय ते सुकृतने हुं अनुमोदुंछुं ॥ ५१ ॥

जं सुध्द नाण दंसण ॥ चरणाइं भवन्नव प्पवहणाइं ॥
सम्म मणुपालियाइं ॥ तमहं अणुमोयए सुकयं ॥ ५२ ॥

जे भवरुपी अर्णव एटले समुद्रमां वहाण समान शुद्ध ज्ञान, दर्शन, अने चारित्रने सम्यक्‍ प्रकारे में पाल्यां होय ते सुकृतने हुं अनुमोदुंछुं ॥ ॥ ५२ ॥

जिण सिध्द सुरि उवझाय ॥ साहु साहम्मिय प्पवयणेसु ॥
जं विहिज बहुमाणो ॥ तमहं अणुमोअए सुकयं ॥ ५३ ॥

जिन अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साधर्मिक अने प्रवचनने विषे जे बहुमान में कर्युं होय ते सुकृतने हुं अनुमोदुंछुं ॥ ५३ ॥

सामाईय चउवीसत्थयाइ ॥ आवस्सयंमि छ प्पेए ॥
जं उज्जमियं सम्मं ॥ तमहं अणुमोअए सुकयं ॥ ५४ ॥

सामायक, चउविसत्थो विगेरे छ प्रकारना आवश्यकने विषे जे सम्यक् प्रकारे उद्यम कर्यो होय ते सुकृतने हुं अनुमोदुंछुं ॥ ५४ ॥

पुव्व कय पुन्न पावाण ॥ सुरक दुरकाण कारणं लोए ॥
न य अन्नो कोवि जणो ॥ ईय मुणिय कुणसु सुहन्नावं ॥ ५५ ॥

पूर्वकृत पुन्य अने पाप ते लोकने विषे सुख अने दुःखनां कारण छे पण कोइ बीजो माणस कारण नथी एम जाणीने शुभ भाव कर ॥ ५५ ॥

पुव्विं दुचिन्नाणं ॥ कम्माणं वेइआण जं मुरको ॥
न पुणो अवेइआणं ॥ इय मुणिय कुणसु सुहन्नावं ॥ ५६ ॥

पूर्वे दुष्ट कर्म करेलां तेनुं वेदवुं तेज मोक्ष कहेवाय पण तेमने नहि भोगववां ते मोक्ष नहि एम जाणी शुभ भाव कर ॥ ५६ ॥

जं तु मए नरए नारएणं ॥ दुरकं तितिरिकयं तिरकं ॥
तत्तो कित्तिय मित्तं ॥ इय मुणिय कुणसु सुहन्नावं ॥ ५७ ॥

जे तमे नरकने विषे नारकीपणे अत्यंत तीखां दुःख सह्यां तेथी आ दुःख केटलामे हिस्से छे एम जाणीने शुभ भाव कर ॥ ५७ ॥

जेण विणा चारित्तं ॥ सुयं तवं दाण सीलमवि सव्वं ॥
कास कुसमं व विहलं ॥ इय मुणिय कुणसु सुहभावं ॥ ५८ ॥

जे भाव विना, चारित्र, श्रुत, तप, दान, शील विगेरे सर्व पण कासना फुलनी पेठे निष्फल छे एम जाणीने शुभ भाव कर ॥ ५८ ॥

जं भुंजिऊण बहुहा ॥ सुरसेल समुह पव्वएहिंतो ॥
तित्ती तए न पत्ता ॥ तं चयसु चउविहाहारं ॥ ५९ ॥

मेरु पर्वतना जेटला ढगलाथी पण वधारे आहार घणी रीते भोगव्या तो पण तेवडे तृप्ति थइ नहि माटे ते चार प्रकारना आहारने त्याग करो ॥ ५९ ॥

जो सुलहो जीवाणं ॥ सुर नर तिरि नरय गइ चउक्केसु ॥
मुणिय दुल्लहं विरयं ॥ तं चयसु चउविहाहारं ॥ ६० ॥

जे आहार जीवोने देवता, मनुष्य, तिर्यच अने नरक ए चार गतिओने विषे सुलभ छे ने विरति पणुं दुर्लभ छे ते माटे ते चार प्रकारना आहारने त्याग करो ॥ ६० ॥

छज्जीव निकाय वहे ॥ अकयंमि कहंपि जो न संभवइ ॥
भव भमण दुहाहारं ॥ तं चयसु चउव्विहाहारं ॥ ६१ ॥

छ जीवनी निकायनो वध कर्या विना जे आहार कोइ पण रीते थतो नथी अने ते भव भ्रमणरुप दुःखनो आधाररुप छे ते माटेचार प्रकारना आहारनो त्याग करो ॥ ६१ ॥

चत्तंमि जंमि जीवाणं ॥ होइ करयलगयं सुरिंदत्तं ॥
सिद्धि सुहं पिहु सुलहं ॥ तं चय सु चउव्विहाहारं ॥ ६२ ॥

जे आहारने त्याग कर्ये छते जीवोने हाथेलीमां इंद्रपणुं आवे छे अने सिद्धिनुं सुख पण नक्की सुलभ थाय छे ते चार प्रकारना आहारने त्याग करो ॥ ६२ ॥

नाणाविह पाव परायणोवि ॥ जं पाविउण अवसाणे ॥
जीवो लहइ सुरत्तं ॥ तं सरसु मणे नमुक्कारं ॥ ६३ ॥

नाना प्रकारना पापमां तत्पर थएलो एवो पण जीव अंतना वखते जे नवकार पामीने जीव देवतापणुं पामे छे ते नवकारने मनने विषे स्मरण करो ॥ ६३ ॥

सुलहाउ रमणीउ ॥ सुलहं रज्जं सुरत्तणं सुलहं ॥
इक्कुच्चिय जो दुलहो ॥ तं सरसु मणे नमुक्कारं ॥ ६४ ॥

स्त्रीओ सुलभ छे, राज अने देवपणुं-ए पण सुलभ छे पण एक जे दुर्लभ छे ते नवकार छे ते माटे मनने विषे नवकारनुं स्मरण करो ॥ ६४ ॥

जेए सहाएण गयाण ॥ परजवे संजवंति जवियाणं ॥
मण वंछिय सुरकाइं तं सरसु मणे नमुक्कारं ॥ ६५ ॥

जेनी सहाय पामेला भव्य जीवोने परभवने विषे मनोवांछित सुखो मले छे ते नवकार मंत्रनुं मनने विषे स्मरण करो ॥ ६५ ॥

लद्धंमि जंमि जीवाणं ॥ जायइ गोपयं व जवजलही ॥
सिव सुह सच्चंकारं ॥ तं सरसु मणे नमुक्कारं ॥ ६६ ॥

जे नवकार पामे छते जीवोने संसार समुद्र गोपद (गावडा) जेवो थाय छे अने जे मोक्ष सुखनो सत्यकार छे ते नवकार मंत्रनुं मनने विषे स्मरण करो ॥ ६६ ॥

एवं गुरु वइठं ॥ पज्जंताराहणं निसुणिऊणं ॥
वोसिठ सव्वपावो ॥ तहेव आसेवए एसो ॥ ६७ ॥ ए अणसण करनार

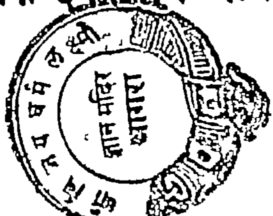
ए प्रकारे गुरुए उपदेशेली छेल्ली आराधना सांभलीने सर्व पाप जेणे वोसराव्युं छे एवो पुरुष तथा प्रकारे सेवे ॥ ६७ ॥

पंच परमिट्ठि समरण ॥ परायणो पाविऊण पंचत्तं ॥
पत्तो पंचम कप्पंमि ॥ रायसीहो सुरिंदत्तं ॥ ६७ ॥

पंच परमेष्ठी स्मरणमां तत्पर थएलो एवो राजसिंह कुमार मरण पामीने पांचमा देवलोकने विषे इंद्रपणाने पामतो हवो ॥ ६८ ॥

तप्पत्ती रयणवइ ॥ तहेव आराहिऊण तक्कप्पे ॥
सामाणियत्तं पत्ता ॥ तक्क चुआ निव्वइस्संति ॥ ६९ ॥

तेनी स्त्री रत्नवती तेनीज पेठे नवकारने आराधीनेतेदेवलोकने विषे इंद्रना सामानिक देवपणाने पामती हवी अने त्यांथी चवीने बंने मोक्षे जशे ॥ ६९ ॥



सिरि सोमसूरि रईयं ॥ पञ्जंताराहणं पसमजणणं ॥
जे अणुसरंति सम्मं ॥ लहंति ते सासयं ठाणं ॥ ७० ॥

श्री सोमसूरिए रचेली छेवटनी आराधना ते उपशमने उत्पन्न करनार छे माटे जेओ सम्यक् प्रकारे आदरशे तेओ शाश्वता स्थानकने (मोक्षने) पामशे ॥ ७० ॥

॥ इति श्री आराधना प्रकरणं संपूर्णं. ॥